लहसन

लहसन

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

LAHASAN (लहसन)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-63-6
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2018)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान...।

अनुक्रमः

एक

दुरागमनक दू सालक पछाइत मेवालाल अपन पारिवारिक जिनगीक खिंचैत गाड़ीकेँ एकाएक रूकैत देखि तेना निराश भऽ गेला जेना अपन सजीव स्वावलम्बी जिनगी बिला गेने होइ छइ..!

अपन पत्नीसँ विचार-विमर्श करब ओतेक जरूरी मेवालाल नहि बुझलैन जेतेक माए-सुभावीसँ...।

टुटैत जिनगी, ढहैत विचार आ नष्ट होइत सामाजिक सम्बन्धकेँ देखैत मेवालाल माएकेँ कहलैन-

“माए, अखन धरिक जे जिनगी छल ओ मरि रहल अछि। किछु दिनमे मरि जाएत..!”

सुभावी अपनो, अपन परिवारो आ गाम-समाजक संग परोपट्टोक सभ किछु आँखिसँ देखियो रहल छेली आ भोगियो रहल छेली, मुदा जिनगीक मरबकेँ नइ बुझि रहल छेली। पढ़ल-लिखल सुभावी नइ छेली, मुदा सोल्होअना मुरूखे छेली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जिनगी आ जीवनक लेल ज्ञान सभ किछु छी। पढ़ि-लिखि सेहो लोक ज्ञाने पकड़ै छैथ आ बिनु स्कूल गेनौं परिवार हुअए वा नहि, मुदा जीबैले ज्ञाने मुख्य छी। ज्ञाने शरीरक शक्तिशाली शक्ति छी जे जिनगीकेँ भूतसँ भविस तकक रस्तो देखबैए आ रस्तासँ चलैले प्रेरित सेहो करैए। जखने जिनगी जीबैले ज्ञान मनकेँ प्रेरित करए लगैए तखने अपन प्रगतिक दिशा दिस अपन शक्ति सेहो हाथ-पएर उसकाबए लगैए। परिवारक संग माने माता-पितासँ लऽ कऽ पति-पत्नीक बीचक जीवन गुदस करैत सुभावी आइ बेटा-पुतोहुक बीचक परिवारमे ‘माए’ आ ‘सासु’ बनि ठाढ़ छैथ। अपन बेटा-मुँहक बोल सुभावीकेँ किए कोनो रंगक कचोट मनमे जगैबतैन। तँए निर्भीकसँ निर्भय भेल सुभावी मेवालालक आँखि दिस तकैत बजली-

“की कहलहक बौआ, जिनगी मरि रहल अछि?”

माइक प्रश्नसँ मेवालालकेँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नहि भेलैन। कुवाथो केना होइतैन, संग-संग बीतल जिनगी माइक सोझमे छेलैन। माइयो एक समर्पित जन परिवारक छेलीहे। भाय, मनुक्खे भगवान आ भगवानेक मन्दिर ने परिवार छी! तैठाम कुवाथे किए हएत? सुभावी परिवारक आमद-खर्च, उत्पादन-उपभोग थोड़े बुझै छैथ। सुति उठि भोरे पहिने आँगन बहारै छैथ, आँगन बहारि माल-जालक थैर-बथानक गोबर-करसी उठबैत खर्ड़ा-बाढ़ैनसँ खरैड़-बहारि गोबर पाथए लगै छैथ आ जलखै बेर होइत जलखै करैत माल-जालक जोगारमे घास-भूसा करए चलि जाइ छैथ, जे दूपहर बीतैत आँगन अबै छैथ आ अपने नहाइ-खाइसँ पूर्व सभ दिन पहिने पुतोहुसँ पुछि लइ छैथ-

"अहाँ सभ खा-पी लेलौं किने?"

ओना, पाँतीक व्यंग रूप सेहो भऽ सकैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम मिथिलाक मातृत्व शक्ति छी। जखने पुतोहु सासु दिस देखि मुस्की भरि दइ छथिन तखने सुभावी अपन मुस्कुराइत मने नहाइ छैथ। नहेला पछाइत भोजन करै छैथ।

जहिना जिनगीक फल सुफल पएब छी तहिना ने दिनक फल भोजन छी। मुदा फलो तँ फल छीहे, खटगर अंगुर जँ गुणगर भऽ सकैए तँ मिठगर मालदह आम किए ने भऽ सकैए? भइये सकैए। बाँकी जे फल अछि ताबे बीचमे बैस बीचमानि करह। अखन 'अ' अक्षरक फलसँ शुरू भेल अछि मुदा तोहूमे अनार, अमरूद छोड़ि कऽ...। नहेला पछाइत अनेरो लोककेँ खेबाक चाह जगिते छै, मुदा श्रमशील लोककेँ तँ दोबरा जाइए, माने नहेलाक चाहक संग मेहनतक चाह, तँए ओकरा भोजनसँ प्रेमो हेबे करैए। भोज्य पदार्थोकेँ तँ ओहीमे ने खुशी होइत हएत जे पेटगर संग डटगरक भक्ष बनैत अपन बलिदान देखत।

भोजन केलाक पछाइत सुभावी अरामकेँ हराम बुझि बेरूका पहरक काजक जोगार सभकेँ जोड़ियबैमे लागि जाइ छैथ, बेरूका उखड़ाहाक काजक हथियार सभकेँ सम्हारैमे लगि जाइ छैथ। घास छिलैले खुरपी चाही, तोहूमे रौदियाह समय अछि, एक तँ घासकेँ जरने बाढ़िमे कमी अबिते अछि, तँए सुभ्यस्त समयसँ बेसी समयो लगबे करत, दोसर

सक्कत माटि रहने खुरपियो ने ओहने बना चलए पड़त। तँए ओकरा पीट-पाटि कऽ काजुल मुँह बनबए पड़ै छैन। तैसंग माल-जालक घरक घूरक जोगार-पाती सेहो नित्य करिते छैथ। दिनक उदय-सँ-अन्त धरि सभ दिन जे सुभावी परिवारक समरपित भक्त रहली, ओ केना परिवारक अभक्त हेती आ अभक्त विचार मनमे जगा विभक्त पैदा करती?

पनरह कट्ठा खेतक जिनगी बना मेवालाल आत्मनिर्भर भऽ स्वावलम्बी जीवन धारण केने आबि रहल छला। अपना सभ मिथिलामे ने रहै छिऐ यौ, मिथिलाक दर्शन दुनियाँमे ओहिना पसरल अछि आकि किछु कएलो-धएल छइ? छै! मुदा देखए पड़त। जइ मिथिला भूमिमे अयाची मिश्र पैदा लेलैन, जे अपन जीवन दर्शनसँ अहाँक जीवनमे दर्शन दैत रहला अछि, ओ दर्शन की छी? ओ छी- एक कट्ठा जमीनक बीच एक परिवारकेँ गुजर-बसर करैत मानवीय गुणसँ सम्पन्न निर्भय जिनगी प्राप्त करब। जखने मनुक्खमे निर्भय गुणक आगमन होइए तखने ओ मुक्तिक शिखरपर पहुँच अभय शक्ति प्राप्त करैए। की हमरा नइ बुझल अछि जे हुनका ऐठाम, माने अयाची मिश्रक ऐठाम राज-दरबार पहुँचलैन। भलेँ ओ आइ इतिहासक पन्नाक विषय-वस्तु किए ने बनि जाए, मुदा ओइमे जीवनी शक्ति नइ अछि, तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए।

पनरह कट्ठा खेत मेवालालकेँ पैतृक सम्पैतक रूपमे छैन। पिता–बुधिलाल–केँ सेहो पितासँ वएह पनरह कट्ठा खेत भेटल रहैन। सुभ्यस्त स्थिति बना चलने बुधिलालक जमीन कहियो मालगुजारीक अभावमे नीलामपर नहि चढ़ल। गामक भीतर जे परिवारक सम्पैतक लूट-पाट भेल, तइमे मालगुजारियोक खेल कम नहियेँ रहल। एक तँ दुर्भाग्य अपना सबहक रहबे कएल जे एक नमहर समय पराधीन रहलौं। मुदा स्वतंत्रतो भेटला कम दिन नहियेँ भेल अछि। ओतेक जरूरे भऽ गेल अछि जे परिवारक तेसर पीढ़ी सेहो आब अन्त कऽ रहल अछि।

आइ हम सभ ओहन जुगक देहलीपर पहुँच गेल छी, जेकरा वैज्ञानिक जुग कहल जाइए, विकसित जुग कहल जाइए। एते तँ विज्ञानसँ अविष्कार भइये गेल अछि जे खेतीक सभ साधन असान बना देलक अछि। बुधिलाल खेतीक संग मवेशी पालनसँ अपन परिवार चलौलैन।

खेतीक लेल पटबन जरूरी अछि, जइले पानिक साधन अनिवार्य अछि, मुदा तइले बुधिलाल अपन किछु साधन नइ बनौने छला। सालक तीन मास बरसातक होइत अछि, जइमे कम कि बेसी बरखा हेबे करैए। ओना, बेसी भेने बाढ़ियो अबिते अछि आ मध्यम बरखा भेने ने बाढ़ि अबैए आ ने सोल्होअना रौदी होइए। तँए, ओहन सालक मौसमक रूप बदैल जाइए जइसँ सुभ्यस्त भऽ जाइए। जखने सुभ्यस्त समय हएत तखने उपजावारी नीक हेबे करत। जइसँ खेतक बले जीनिहार खेतिहरमे खुशहाली एबे करत। एक तँ ओहुना, जँ मुरकुटियो बँटवारा करै छी तैयो सालमे तीनटा मौसम होइए- जाड़, गरमी आ बरसात। ऐ हिसाबे तीन सालमे एक साल रौदी, एक साल शीतलहरी आ एक साल बरसातक हिस्सा भेल।

सोझ-साझ हिस्सा तँ बाँटि लेलौं मुदा तीनू मौसमक गुण-अवगुण सेहो ने देखब जे कोन मौसम हितू अछि आ कोन अहितू अछि। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे बुधिलाल सोल्होअना अपन खेती-बाड़ी भगवानक देल बर्खाक भरोसे करै छला। ओना, बुधिलाल पारखी गिरहस्त जरूर छला। ओ जनैत रहैथ जे कोन फसिलक उपज केहेन मौसममे केलासँ लाभक बनत आ कोन घाटाक सौदा बनत। ओना, परिवार चलबैक खास गुण बुधिलालमे ई छेलैन जे परिवारक हिसाबकेँ नीक जकाँ बुझैत रहैथ। परिवारक हिसाब बुझैक माने भेल- समांगक संग ओकर ओकाइतकेँ बुझब। समांग आ समांगक ओकाइतक बीच सामंजस करैक नीक लूरि बुधिलालकेँ छेलैन, तँए हँसैत-खेलैत अपन जिनगीक आदि-अन्त केलैन।

पाछूसँ अबैत परिवारक गाड़ीक जुआ कन्हेठ मेवालाल जखन आगू बढ़ला तखन बारह मासक समयपर नजैर गेलैन। पिताक देल पनरहो कट्ठा खेत मेवालालक एकेठाम छैन, जे माटिक उर्वरा शक्तिक हिसाबसँ गामक मध्यम श्रेणीक जमीन अछि। अखन तक गाममे खेतीक लेल पानिक कृत्रिम साधन मात्र पोखैर-इनार रहल। बरखा प्राकृतिक साधन छी। गाममे चापाकलोक दर्शन नहि भेल छल। खेतक पटौनीक साधन करीन-ढोसिक संग उपछा मात्र छल। गोटि-पङ्गरा किसान, मरूआ खेतीक बीआ पटबैले अपना खेतमे कूप खुनै छला। जेकर देखा-देखीसँ मेवालाल सेहो खेती-ले

कूपे खुनि पानिक बेवस्था करैत आबि रहल छला। पनरहो कट्ठा खेतमे चारिटा कूप साले-साल कातिक मासमे खुनि लइ छला आ मासे-मासे ओकरा उड़ाहैत रौदीक सामना अपन शक्तिक अनुकूल करैत जीवन-यापन कऽ रहल छला।

मेवालाल अपन जिनगीक आरम्भ पनरहे बर्खक अवस्थामे केलैन। आ अपन मेहनतक बले परिवारक जुआकेँ खिंचैत आबि रहल छला। पनरह बर्ख पूर्व, माने मेवालाल जखन दस बर्खक छल, तहिये पिता मरि गेलैन। बीचमे किछु दिन सुभावीक भरे परिवार चलल। छोट परिवार सुभावीकेँ छेलैन। ओना, चारि गोरेक परिवारकेँ छोटो नहियेँ कहल जा सकैए। परिवारक खर्च छोटाइ-बड़ाइक हिसाबसँ चलैए, माने कम संख्या आ अधिक संख्याक हिसाबसँ, जे सर्वविदित अछिए। मुदा छोटाइ-बड़ाइक हिसाबसँ समरूप चलत, से जरूरी नहि, किएक तँ जइ परिवारमे कमेनिहार कम रहत आ बच्चा तथा बेमारीक संग वृद्धजन बेसी रहता तइ परिवारक खर्च, छोट रहितो बेसिया जाइए। मुदा जँ नमहर परिवारे अछि आ बेमारीक संग बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ कम रहल, तखन खरचो कम होइए। खाएर जे होइए, जेतए होइए, बात तेतुक्का भेल...। सुभावीक पति जखन मुइला तइ समय जेठ सन्तान–मेवालाल–दस बर्खक छल आ ओकरासँ छोट दूटा बहिन छेलै, जे एगो आठ बर्खक छल आ दोसर- छह बर्खक। बाल बिआहक चलैन रहने जेठ बेटीक बिआह बुधिलाल अपना जीबिते कऽ नेने छला। मुदा दुरागमन पछुआएल छेलैन। ओना, मेवालालोक बिआह करैक विचार दुनू परानी बुधिलाल, बेटीक बिआह केलाक पछातियेसँ करए लागल छला, मुदा तइ बिच्चेमे बुधिलालकेँ मुइने मेवालालक बिआह पछुआ गेल। मोटा-मोटी सुभावीक ऊपर एकटा बेटीक दुरागमन, दोसर बेटीक बिआह-दुरागमन आ मेवालालक बिआह, यज्ञ स्वरुप आगूमे छेलैन। तैसंग चारू गोरेक जीवन-यापन सेहो छेलैन्हे।

किसानी सभ्यता जे अपना ऐठाम शुरूसँ चलि आबि रहल छल, मशीन एने ओ बदलल। बदललक माने ई नहि जे चित-सँ-पट भऽ गेल आकि पटसँ चित, बल्कि ओइमे थोड़ेक तोड़-जोड़ भेल, जेकरा संक्रमण सेहो कहि सकै छी। तैसंग विचारमे विकासक संग विघटनो भेल।

विघटनक अनेक कारणमे एक ईहो भेल जे जैठाम किसानी जिनगी-ले पानिक जेतेक जरूरत अछि, ओतेक मशीन-ले नइ अछि। तैसंग बर्खाक पानि खेतक जिनगीकेँ जे शक्ति दइए, ओइ शक्तिक ओते खगता मशीनकेँ नइ छै, तँए बरखा-मौसम उद्योग जगतक लेल–माने मशीनक संग वेपार लेल–जेतेक नीक अछि तइसँ बेसी अवरोधक बनि अधला सेहो अछिए।

देशक बहुसंख्यक अबादी किसानी जिनगी धारण केने जे आबि रहल छला, मशीन भेने ओइमे टूट आएल। गामक श्रम शक्ति शहर दिस बढ़ल, जइसँ शहरक विकास जइ गतिये भेल, ठीक ओकर विपरीत ग्रामीण शक्तिकेँ हटने गामक भेल। मनक धारणामे सेहो घटी-बढ़ी भेल। जैठाम समयपर बरखा नइ भेने होम-यज्ञक संग ओझाइ-भगताइ सेहो होइ छल ओ आब नइ रहल। ओना, खेती-ले पानिक जरूरत मशीन सेहो पुरबए लगल, जइसँ रौदीक प्रकोपमे थोड़ेक घटबी सेहो भेल। धार-धुरक पानि, जे छिड़ियाएल चलै छल, छहर-नहर भेने ओहूमे कनीक बदलाव एबे कएल, जे नीक-बेजाए दुनू होइते अछि। आइ हम सभ टुटैत किसानी सभ्यता आ उदय होइत मशीनी सभ्यताक बीच ठाढ़ छी, से बुझि ने आगू दिस ताकब?

ओना, बुधिलालकेँ मुइने सुभावीक ऊपर परिवारक सोलहन्नी बोझ पड़लैन, मुदा ओइकेँ उठबैक पाछू सुभावी चारू परानी[1] मिलि अपन परिवारकेँ जीवनी शक्ति दइ पाछू अपन श्रम शक्ति लगौलैन। ओना, एकटा अनुकूलता सेहो सुभावीकेँ भेटलैन, ओ भेटलैन बेटा-बेटीक बीच परिवारक काज करैक संस्कार, काज करैक ऊहि। ओना, जइ लगनसँ बेटी माइक संग काजमे सहयोग करैत अछि, तइ अनुपातमे बेटा नइ करैए, ऐमे लोहा-लोहार दुनूक दोख अछि। ओना, एकरा बीच मोट लकीर नहि घिचल जा सकैए, किएक तँ ओइक पाछू, पाछूसँ अबैत ढर्ड़ाक हिसाबे परिवारक बुनाबट सेहो अछि।

दुनू बेटीक विआह-दुरागमन करि सुभावी अपन बेटीक भारक उतरी

[1] अपना संग दुनू बेटी आ बेटा

गंगा महरानी दिस नजैर उठा चढ़ा देली आ बेटाक बिआह, माने मेवालालक बिआह सेहो कऽ नेने छेली। ओना, दुनू माए-बेटाक बीच अखन तक ई स्पष्टता नइ आएल छल जे परिवारक मुँहपुरखी सझिया अछि आकि बेकतीगत।

परिवारक सभ काजकेँ सभ कियो अपन बुझि, जे जइ-जोकर अछि ओ ओहेन काज करैत आबि रहल छल। ने सुभावी ई बुझै छेली जे परिवारक सोलहन्नी भार हमरे पुरबए पड़त आ ने मेवालाले बुझैत। दुनू मायपुत अपना संग एक-दोसरकेँ सेहो गारजन बुझैत। जखन बुधिलाल मरल रहैथ आ मेवालाल कानैत रहए, तखन वएह सुभावी आँखिक नोर पोछैत कहने रहथिन- "बेटा, बाप ने मरलखुन, हम तँ दुनू कूर[2] जीविते छिअ, तखन तूँ कानै किए छह।"

माइयक विचारकेँ मेवालाल अपन मातृत्व शक्तिक असीरवाद बुझि अपन किसानी जिनगीमे कनी जोर दैत धक्का मारि आगू बढ़ैक चेष्टा केलैन। अपन पनरहो कट्ठा खेत, जे मध्यम किस्मक एकठाम छेलै, जइमे कूपसँ पटौनी करैक लूरि सीखि खेती शुरू केने छला, तइमे बैंकसँ कर्ज लऽ बोरिंग-दमकल करौलैन। जइसँ पारिवारिक जिनगीमे खुशहाली आबि चुकल छेलइ।

पाँच बर्खक रौदीमे तेसर साल छी। रौदी भेल जे अकास वृष्टि नइ भेल वा जँ भेबो कएल तँ थोड़-थाड़ भेल। रौदी-रौदी छी। ओना, दहार रौदीसँ भयंकर होइए। दहार भेल, बर्खासँ बाढ़ि धरिक रूप। बाढ़िक तँ ओहन भयंकर रूप होइए जे गामक गाम समतल भूमिकेँ तोड़ि धार बना मनुक्खक बास भूमिकेँ अपन बास भूमि बना अनवरत बहए लगैए। जइसँ पूजनीय सेहो बनिते अछि। मुदा अखन दहार नहि मात्र रौदीटा।

रौदीक आँट-पेट देखैले पहिने ओकर पेटमे पड़ल जे बीज स्वरूप आँठी अछि, तेकरा जखन निकालए लगब तँ भक्-दे मिथिलाक जनक राजक बारह बर्खक रौदी सोझमे औत। जइमे जनक महराजकेँ सेहो अपने

[2] माता-पिता, माए-बाप

हर जोतए पड़ल रहैन। जइमे सीता सन जगत जननी जानकीक प्रादुर्भाव भेल। मुदा ई भेल त्रेता जुगक बात। ओना, वाल्मीकि ऐ आँठीकेँ त्रेता जुगसँ पहिनहि खोजि धरतीमे रोपि देने छला, जे त्रेता जुगमे लक्ष्मणक संग राम बोने-बोन भरैम अपन आत्मरूप सीताकेँ फुसियाहा रावणक हाथे चोरौल जगत जननी जानकीक भाँज लगा, चोरक वंशकेँ संहार केलैन। रौदीक छोट रूप, माने जहिना महादेवक विराट स्वरूप चिन्तनक लिंगकेँ माटिक छोट-छीन रूप गढ़ि पचीस-पचास साएकेँ एकठाम साटि, एकटा रूप गढ़ि पूजा कएल जाइए, तहिना कृषक आ कृषि'क बीच सेहो अछिए। छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ बीजक बीच अनेको रूप अछि। कम-सँ-कम सिंचाइक जरूरतबला फसिलसँ लऽ कऽ पानिक फसिल धरि अछिए। मुदा कोनो कारणे जँ कम्मो सिंचाइबला फसिलकेँ समयपर पियास नइ मिझाएत तँ ओहो रौदिया जाइते अछि। जेकरा रौदियाएल कहै छिऐ, रौदीक एक रूप ईहो भेल। तहिना रस्ता चलैत आकि कोनो काजे करैकाल जँ उचितसँ कनी बेसी रौद लागि गेल, जइसँ मन कनी तबैध गेल, तेकरो 'रौदियाएब' कहै छिऐ। मुदा से नहि, पाँच बर्खक घनघोर रौदी[3]क बीचक तेसर साल, मेवालाल अखन तक पूर्ण आशाक संग अनेको बाधाकेँ अङ्गेजैत निकैल चुकल छला। पहिल सालक रौदीमे अस्सीसँ नबे प्रतिशत उपजा नोकसान भेलइ। उपजावारी हुअ आकि नहि, मुदा मनुक्ख तँ अन्न खेबे करत, बर-बेमारीक इलाज करेबे करत, रहैले घर-दुआर बनेबे करत इत्यादि-इत्यादि जे जिनगीक मूल-भूत खगता छै ओ तँ पुरबए पड़बे करत। मेवालालकेँ मात्र दूटा शीशोक गाछ आ दूटा आमक गाछ। ओना, रौदी भेने ओ चारू गाछोमे उखराहा पकैड़ लेलकै। बर्खाक पानि, माने बिना पानि पीने गाछो-बिरीछ केना लहटगर रहत।

रौदीक पहिल साल एकटा शीशो आ एकटा आमक गाछ बेच मेवालाल परिवारकेँ ठाढ़ केने रहला। दोसर साल सेहो ओहिना केलाह, ओहो दुनू गाछ बेच खेपला। मुदा तेसर सालक शुरूहेमे अपन खसैत स्थितिकेँ देखि मेवालाल आँकए लगला। मनमे उठलैन- जइ जिनगीमे

[3] सोलहन्नी बरखा नइ भेल

अखन धरि परिवार रहल तइमे आगूओ एहिना चलि सकैए आकि टुटि कऽ खसि पड़त, मेटा जाएत? एकटा बोरिंग-दमकल लेलौं, ओहो लसैक गेल! धरतीक पानिकेँ निच्चाँ उतरने बोरिंगक लेअर सुखि गेल, बोरिंग पानि देब छोड़ि देलक। तेतबे नहि, गामक सेखी सेहो बदैल रहल अछि। जे गाम गाछ-बिरीछ, उपजावारीसँ हरियर-कचोर छल, ओ मरना सन भऽ गेल अछि। हरियरीक जगह पीड़ीपन लऽ लेलक। गाछ-बिरीछकेँ सुखने, उद्योग जगतक भाग्य चमकल। हजार रुपैआक गाछ साए-दू-साएमे लोक बेचए लगल। दू फाटकक बीच लोक फँसि गेल। कबीर दास कहने छैथ- 'दो पाटन के बीच में बाकी बचे ने कोई।' जे जेतए से तेतए फँसि गेल...।

एक दिस बैंकक कर्जक सूदि, जइमे रौदी-दाही किछु ने होइ छै, आ दोसर दिस तीन गोरेक परिवारक खर्चक बीच मेवालाल फँसि गेला। ओहुना बुझै छिऐ जे साधारण मेशोमे हजार-डेढ़-हजार महिना एक बेकतीक खर्च भेल। से तँ भेल सोझे रतुका-दिनक भोजन, मुदा जलखैक संग जिनगीमे साइयो अनेक खर्च तँ बाँकीए अछि। खेती सहजे नष्ट भऽ गेल। दोसर कोनो उपाय मेवालाल नहि देखि रहल छला। ऐठाम दुनू बात अछि, दुनूक उपायो अछिए। गामक जे पानिक रूप अछि, तैठाम उपाय एकभग्गू भऽ गेल अछि। आ दोसर, लोकक मन-बुधिकेँ ई पकैड़ नेने अछि जे शहर-बजारमे ओहिना लोककेँ मुँह-मंगा भेटैए। ओना, जीवन-यापन करैक साधन गामक अपेक्षा शहर-बजारमे बेसी भइये गेल अछि। हजारो रंगक कारोबार पसरल अछिए, जे गाममे नइ अछि...।

प्रश्न उठैत अछि, की गामकेँ ओहिना तरमुहाँ छोड़ि देबै आकि पितृ भूमि, मातृ भूमि, मिथिला भूमि बुझि विचारि किछु करबो करबै? की खिखिरक फलकल नाँगैर जकाँ सोझे फलकल छी आकि लुक्खीक नाँगैर जकाँ सुर्राइतो छी? खाएर जे छी, जेतए छी, मौजसँ छी, नीक छी...।

हम सभ किसान छी, माटि-पानिक बीच बसल धरती परक ओहन जीव जे माटि-पानिसँ बनलो छी आ माटिये-पानिपर जीवो करै छी। साल भरिक चक्रमे किछु दिन पानि धरतीक निच्चाँमे रहैए आ किछु दिन धरतीक ऊपरोमे सेहो पसैर जाइए। माने, किछु दिन पानिक छातीपर चढ़ि

माटि सवारी कसैए आ किछु दिन माटिक छातीपर चढ़ि पानि सवारी कसैए। बरसातक समय बाढ़ि-बर्खासँ धरतीक ऊपर पानि पसरल रहैए आ रौदी पाबि पानिकेँ तर करैत माटि ऊपर रहैए। मुदा दुनूमे जहिना उपज शक्ति छै तहिना संहार शक्ति सेहो छइहे। जइ रूपक संगम दुनूक बीच जखन होइए ओइ रूपक जीवधारीक जन्म होइए जइसँ धरतीक शोभा-सुन्दर निखारैए।

गाछ-बिरीछबला शोभा-सुन्दर गाम हुअए आकि दहाइत-भँसियाइत उजरल-उपटल गाम, ओइमे माल-जालसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछक संग लोको-वेद आ चिड़ैयो-चुनमुनी रहबे करत। तइमे जहिना चिड़ै-चुनमुनी आकि माल-जाल केम्हरो मटिबसू अछि आ केम्हरो पनिबसू, तहिना ने मनुक्खोक संग अछि, जे मनुक्खक काजो आ बुधियो-विचारमे देखल जा सकैए। खाएर जे अछि, जेतए अछि, तेकरा तेतै रहए दियौ, अपना सभ अप्पन विचार करू...।

पानि पतालमे बसैए, हवा अकासमे आ अपना सभ बीचमे धरतीपर छी। जरूरत दुनूक अछि, जहिना पानि पीलाक पछातिये जीब सकै छी तहिना बिनु हवोक तँ नहियेँ जीब सकै छी। तँए, जरूरत दुनूक अछिए। मुदा से दुनू समुचित ढंगे केना पेबब, ई तँ अपने सभ ने विचारबै..?

जइ गाछ-बिरीछ, माल-जाल आ लोक-वेद पेब जे धरती जेहेन सुसम्पन्न बनल ओ ओतेक नीक भेल आ जइमे जेतेक उजार अछि ओ ओतेक श्रीहीन अछि। धरतीपर चाहे जे कोनो गाछे-बिरीछ आकि अन्ने-तरकारी लगबै छी, सभकेँ अपन-अपन सिर रूपमे ऐ धरतीसँ शक्ति लइक शक्ति छै, ओ ओतेमे पसैर अपन दुनियाँ गढ़ि लइए। तँए ई कहब जे मिरचाइ गाछकेँ ताड़क गाछ बनैक इच्छा नइ छै, से नहि! से छइहे। मुदा जइ देहमे जेतबे शक्ति रहतै तेतबे दूर ने पसैर सकत। जहिना कोनो अन्नक सिर (जड़ि) छह ओंगरी गहींर धरिक नमी (जल शक्ति) पीब अपन जीवन ठाढ़ केने अछि, आ कोनो कोनो हाथ-भरि गहींर धरिक रस पीब जीवनक दुनियाँ गढ़ने अछि। ओना, मेवालालकेँ अपना संग अपन गामकेँ आ अपन इलाकाकेँ जइ नजरिये चिन्हबा चाही, से नहि चिन्ह सकला, तइमे कनी कमी छेलैन। मुदा दू सालक रौदी मेवालालक जिनगीक हालकेँ दू हाथ

गहराइ दिस नइ धकेललक सेहो बात नहि, मुदा ओ अलग भेल। ओना, सामाजिको रूपमे किछु-ने-किछु धकलेबे कएल। मिथिलांचल छी, सभ अयाचीए मिश्र नइ हेता। मुदा तँए कि हुनको पान-सालक कि साल सालक आकि बारह सालक रौदी आ फाटल-फाटल मेघक बोरा-बोरे पानि उझलबसँ भेँट नहि भेल हेतैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तँए, ओ केना गाछ-बिरीछसँ सम्पन्न धरतीक रक्षा करै छला आ केना केलैन..? खाएर, अयाची जे केलैन, जेतबे केलैन मुदा अपन विचारक जिनगीक घोड़ाकेँ नमहर जिनगी नहि देलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

बीतैत फागुन आ चढ़ैत चैतक बीचक वसन्ती मौसम पकैड़ नेने छल, मुदा गतिहीन चालि-ढालिमे, जेहेन सुभ्यस्त समैक मौसम होइत तेहेन नहि। फगुआ परसू छी, रंग-अबीरक खेलो चलत आ डम्फापर फॉगुक संग फगुआ सेहो गाओल जाएत, मुदा कोन फॉगु आ केहेन फगुआक नाच हएत से तँ परसू देखब। तपसँ तपिस मेवालाल सुभावीकेँ कहलैन-

“माए, जान बँचाएब कठिन भऽ गेल..!”

मेवालालक मनक हलन्त सुभावी ठीकसँ नइ बुझि निरुत्तर भऽ अकबकाए लगली।

निरुत्तर सुभावीक भावकेँ परेख मेवालाल बजला-

“माए, खेती-पथारी बिलैट गेल। चारिटा बेख जे छल, दूटा शीशोक आ दूटा आमक, ओकरा बेच कऽ कहुना दिन कटलौं मुदा आब की करब?”

‘आब की करब’ बाजि मेवालाल चुप भऽ रहला जे माए की विचार दइ छैथ।

गोमुख माए, केना बेटाकेँ बिमुख भऽ किछु कहती, मुदा...। सुभावी बजली-

“बौआ, कहुना भेलह ते तूँ घरक पुरुख-पात्र भेलह, तोहीं ने घर-परिवारकेँ बुझबहक।”

माइक बात सुनि मेवालाल ठकमुरा गेला। ठकमुरा गेला ई जे पिताकेँ मुइला पछाइत परिवारक माइये ने गारजन भेली, तेकर अनुभव

किछु ने देली! भऽ सकैए बिसरियो गेल होथि। मुदा एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे मानि लिअ पचास बर्खक बीच नमहर भुमकम नइ भेल वा नमहर रौदियो नइ भेल, जे ऐबेर भेल। यएह ने भेल बुनियादी आधार। ऐ बीच जे पाँच बर्खक हुअए आकि पचास बर्खक, मुदा नवता तँ एबे करत किने...।

मेवालाल बजला-

“माए, परदेश जाइये पड़त। गाममे रहने सभ तूर मरि जाएब!”

एक समए छल जखन कियो बेटा जँ परदेश जाइक चर्चा करैत तँ माए घरमे बिनु अने पेटकान लाधि दइ छेली, जे जँ बेटा परेदश जाएत तँ हम ओकरा जाइसँ पहिने परान तियागि देब। मुदा आब तँ ओहन परिवेशे बनि गेल अछि जे जइ परिवारमे परदेश खटनिहार नइ अछि, ओइ परिवारक कथा-कुटुमैती तक प्रभावित भेल अछि।

माएकेँ सकदम देखि मेवालाल पत्नी दिस तकैत बजला-

“घरमे गहना की सभ अछि?”

पत्नी-

“आध सेरक चानीक सुति आ पाभैरक पाइत।”

पत्नीक बात सुनि मनमे मेवालाल ठानि लेलैन जे परदेश जेबे करब।

❑

शब्द संख्या: 3169, तिथि: 10 नवम्बर 2017

दू

अढ़ाइ बर्खक रौदी भऽ गेल। अकाससँ एको बून पानि नइ खसल। जहिना मिथिलाक जनकजी अढ़ाइ बर्खक रौदीकेँ (बारह बर्खक रौदीक बीच) बचकानी रौदी बुझि, अपन तपमे तल्लीन मने-मन विचारि रहल छला जे अढ़ाइ बर्खक रौदीसँ केते उजार भेल से तँ ऐठामक प्रवुद्धेजन ने जमीनी अनुभव करि विचार करता। एकटा जनक की करता, जनकपुर देखता आकि रौदियेलहा गाम।

अपन परिवारक टुटैत कड़ी देखि मेवालालक मन असहज भइये गेल छेलैन। अतीत दिस जखन देखै छला तँ भरल-पुरल स्वावलम्बी जिनगी हँसैत देखा पड़ैन मुदा जखन भविसपर नजैर जाइत तखन अन्हार कुप-कुप बुझि पड़ैन। आ वर्तमानक अपन गनजन तँ सोझामे नचिते रहैन। मनमे उठलैन-

घरमे पुरुख-पात्र तँ हमहीं छिऐ, पत्नीकेँ हाथ पकैड़ जिनगी भरिक संकल्प वेदी लग घुमि आगि-पानिक बीच केने छी। माए तँ माइये छिया। कखनो जन्मदाताक संग पालनकर्ताक रूप देखौती तँ कखनो पुरुख-पात्र कहि दुनियाँ देखबैत पाछूसँ पीठ ठोकती।

गामक सात पोखैरमे तीनटा ओहन रूपमे जीवित अछि जे अपन सकल तियागि डोह-डाबर बनि गेल अछि। पाछूसँ (माने ऊपर दिससँ) एहेन थाल-कादो बनि गेल अछि जे मनुक्खक संग मालो-जाल आ चौंगर चिड़ैकेँ सेहो गादिमे गड़ैक रूप बनि गेल अछि। से कोनो एक्के गाममे नहि, परोपट्टाक संग सम्पूर्ण रौदियाएल इलाकामे। सुखल चारिटा पोखैर ओहन बनि गेल अछि जइमे नमीक नरम रूप पाबि हरियर घास जनैम-जनैम चतैर-पसैर जरूर गेल अछि मुदा धरतीक फाटो ओहन फाटि गेल अछि जइमे अनभुआर माल-जालक संग अचेत मनुक्खो फँसिये सकैए।

गामक अठारह इनारमे बारहटा इनार अपन रूप बदैल कुरुप बनि

गेल। बँचल छबो इनारमे तीनटा ओहन बनि गेल अछि जे गाए-महींस जकाँ साँझ भोर चारि घैल पानि दैत-दैत अपने गदिया लगैए। बाँकी तीन इनारक पानि ओते निच्चाँ पहुँच गेल अछि जे जेते उगहैन खिंचला पछाइत दू घैल पानि अबै छल से आब एक घैल अबैए, तँए पानि रहितो भारी तँ भइये गेल अछि। से कोनो एक गाम आकि एक टोलक बात छी से नहि, रौदियाएल इलाकेक।

पानिकेँ पड़ाइन लगिते माटिक मोल की? किछु ने। जँ पानिक संग रहल तँ सृष्टिकर्ता छी नहि तँ मटियाहा पाथरक पहाड़। अन्नक खेती सोलहन्नी समाप्त भऽ गेल। तीमन-तरकारीक खेती सेहो चलि गेल। गाए-महींस पोसब कठिन भऽ गेल, जेहो छल तइमे घटैत-घटैत एक तिहाइपर पहुँच दिनो-दिन घटिये रहल अछि। गाछ-बिरीछक स्थिति सेहो बदहाल अछिए। आधासँ बेसी सुखि गेल आ जेहो जीबैए ओ टुक-धुम-टुक-धुम करैत।

अपन टुटानक संग जिनगीक बदलानक बीच मेवालाल किछु तँइये ने कऽ पाबि रहल छैथ जे आगू की करब। ओना, मनमे ईहो रहैन जे बाहर गेलापर जे काज भेटत से मन मारि करब। भाय, अपन कारोबार ने कियो अपना बुधिये-विचारे करैए, जे मनलग्गू बनि गनगनाइत चलैत रहै छै, मुदा जैठाम अनका बुधिये काज करए पड़त तैठाम तँ मनकेँ मारिये कऽ ने खोंच-खरोंच सहितो करए पड़त। ओना, हारल नटुआ सेहो नम्बरी नोटसँ उतैर खुदरा पाइ दिस चलिये अबैए। मुदा मंचक हारल आ जिनगीक हारबमे कनी दूरी अछिए।

जिनगीक अनेको प्रश्न मेवालालक मनमे पानिक बुलबुला जकाँ उठैत-फुटैत रहैन। आइ धरिक स्वाधीन जिनगीक जे स्वतंत्र किरिया-कलापक छल ओ मेटा रहल अछि! मुदा परिस्थितिवश किरिया-कलापमे जे चढ़ा-उतरी भेल ओहो तँ सोझहेमे अछि, तँए राजा-देवक दोखे की। तही अवस्थामे ने कियो किछु छोड़बो करैए आ किछु पकड़बो करैए। किछु पकैड़ जीवनकेँ तँ जीवित रखए पड़त किने। हँ! तइमे नचार सेहो विचारकेँ असथिर होइमे डेंगी नाह जकाँ किछु-ने-किछु डगमगैबते छइ...।

जइ लूरि-बुधिक बले अखन तकक जिनगी मेवालालक रहलैन ओ

बदैल जेतैन, जे औजार हाथमे छेलैन ओ छुटि जेतैन। आगूक औजार चलबैक लूरि नहि छैन। पढ़ल-लिखल सेहो तेतबे छैथ जे शहर-बजारमे हिनका सन लोक-ले ऑफिसक पनिभरो काज हेतैन कि नहि तेकर कोनो गारंटी नहि। एक तँ गाम-घरक लोक ओहुना बजै-बुझैमे धखाइए तैठाम ऑफिस तँ सहजे सहरगंजा लोकक अड्डे छी। तँए ओमहर तकबो मेवालाल-ले उचित नहियेँ हेतैन।

मेवालालक निराश मनमे आस लगलैन। आस लगिते विचारमे संकल्प जगलैन। जगिते विचारमे संकल्पक विकल्प सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेलैन। विकल्पकेँ उठि ठाढ़ होइते मनमे उपकलैन- 'जखन दू हाथ, दू पएर आ दू आँखि लऽ कऽ दुनियाँमे आएल छी तखन किछु-ने-किछु आँखि देखबे करत, हाथ करबे करत आ पएर डेगा-डेगी चलबे करत। जेहेन देश तेहेन भेष बनौने जिनगी चलिये जाइए...।'

हौंसलीक संग पत्नीक पाइतकेँ बजारमे बन्धक नहि लगा मेवालाल ऐ आशापर बेच लेलैन जे कमा कऽ कीन लेब। जेकर परिस्थिति सोझामे ई छेलैन जे बन्हकी गहनाक कोनो दर निर्धारित नहि अछि। ने मूलधनक निर्धारण अछि आ ने सूदिक। तँए कमसँ कम वस्तुक मूल्यक आँक अछि। मुदा तैसंग ईहो तँ लाभ अछिये जे कम सूदिक रुपैआकेँ सूदियो कमे हएत।

मुदा ई सभ तँ चलन्त जिनगीक भसान छी, असल तँ अछि जे जैठाम जिनगी मरि रहल अछि तैठाम ओकरा कोरामीन खुआ पहिने ठाढ़ करब...।

हौंसलीक रुपैआ परिवारमे पत्नी-माइक बीच मेवालाल दैत बजला-

"जाबे बाहरसँ कमा कऽ नहि भेजब तैबीच अहाँ सबहक हिस्सा भेल। पाइत हल्लुक छल तँए गाड़ीक भाड़ाक संग बटखरचा भरि हमरो रहल।"

हिसाब-बारीक गप-सप्प हौ आकि कोनो विधि-बेवहार, ओ तँ जेहेन मन रहल तेहेन विचारो फुरल आ तेहने मनो लगत। जइसँ नीक कि बेजाए मनमे जँ उपकबो करैत तँ जिनगीक धार ओकरा धरिया लइत। मुदा भँसैत धारमे टुटैत नाहकेँ देखि जहिना यात्रीक मन मानि लइए जे आब

मरबक करीब आबि गेल छी, मनक सभ आशा मनेमे विलीन हुअ लगैत, तहिना मेवालालक माइयो आ पत्नियोँकेँ हुअ लगलैन। दुनू सासु-पुतोहुक नजैर लगले मेवालाल दिस उठैत आ लगले धरती दिस गोड़ि अपन-अपन जिनगी देखए लगैत। कियो ने किछु बाजिये रहल छेली आ ने किनको किछु फुरिये रहल छेलैन जे घरक पुरुख-पात्रकेँ की अश्वासन देब। मुदा मेवालाल अपन जिनगीक गतिकेँ देखि रहल छला जे पैछला दू सालमे चारू बेख बिक गेल, ऐबेर घरक गहना सेहो जा रहल अछि। तेतबे नहि, जे खेत परिवारक जीवनदाता छल ओहो जा रहल अछि! तैसंग खेतक बॉण्ड बना जे दमकल-बोरिंग लेलौं ओहो हाथसँ निकैल रहल अछि! खेत रौदियाएल मुदा बैंकक पूजी नइ ने मरियाएल..!

आगूमे ठाढ़ भेल मेवालालक मन तरैस उठलैन जे माएकेँ की कहब आ पत्नीकेँ की कहबैन..? मुदा लगले मेवालालक मनमे उठल- अछैत माइक इतिहास ने टुटि रहल अछि मुदा अपन तँ आगू शेष अछि जे माइक (पैछला पीढ़ी) पाछू औत। पत्नीक इतिहासे ठाढ़ कहिया भेल जे टुटत। माइयक सिपाहीक रूपमे ने अपने छी, तँए जा जीबै छी ताबेत धरिक भार ने अपने ऊपर अछि। माइक बिसवासमे आस भरैत मेवालाल बजला-

“माए! कोनो चिन्ता नहि, दुनियाँ बड़ीटा अछि। जेहेन हाथ-पएर कमाइ-खटाइ-ले देने छेँ तेहने हाथ-पएर लऽ कऽ कियो भीखो-दुख मंगैए किने।”

अपना विचारे मेवालाल जे बाजल होथि मुदा सुभावीक मन तरैस उठलैन। बजली-

“बौआ, जँ लोक भीखे मांगि जिनगी काटत तँ ओहन जिनगीक लोभे की!”

माइक विचार सुनिते मेवालालक मनमे उठलैन- माए तँ माइये ने भेली। ओ केना नीक छोड़ि अधला सोचती..! बुलैत-बुलैत बुलन्दी मेवालालक मनमे आबए लगलैन। बजला- “माए, काल्हि गाड़ी पकैड़ कलकत्ता चलि जाएब।”

मेवालालक मनसँ गाम निकलए लगल आ कलकत्ता आबए लगल।

गामक असगर केना रहब आ एते दूरक रस्ता केना जाएब? मुदा लगले मन बदैल गाड़ीपर पड़लै। गाड़ीक दूठाम जोड़ अछि। पहिल गोरखपुरसँ हवड़ा जाइबला बड़ी लाइन, जे बरौनी होइत जाइए आ दोसर, पटना-हवड़ा या तँ मोकामा-क्यूल होइत जाइए वा जयसीडी-आसनसोल होइत। बरौनी तक छोटी लाइनक गाड़ी अछि, तँए पहिने बरौनी तक ने पहुँचब अछि, तहूमे निरमली-झंझारपुर होइत चलैवाली गाड़ी समस्तीएपुर तक जाइए। ओतए-सँ छोटीए लाइनक गाड़ी बरौनी जाइए। भाय, जिनगीक सफरक ने गाड़ी छी, तँए गाड़ीमे जहिना ढेरो संगी भेटैए तहिना गामक ढेरो संगी छुटबो तँ करबे करत।

दस बजे बरौनी स्टेशनपर पहुँचला पछाइत मेवालालकेँ पता चललैन जे एक घन्टामे गोरखपुरसँ हवड़ा जाइक गाड़ी औत। बीचक समयमे जँ किछु खा-पीब लेब ओते समयौ अछि जइसँ अपनो ऐगला सफरक पेटक मुँहरी मरल रहत...।

रंग-रंगक खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ साज-श्रृंगारक वस्तु-जातसँ प्लेटफार्म सजल रहबे करइ। जहिना टिशनो नमहर तहिना तेकर प्लेटफार्मो नमहर रहबे करत। तहूमे बड़ी-छोटी लाइनक प्लेटफार्म छी। अपनो छोटी लाइनक प्लेटफार्मसँ बड़ी लाइनक प्लेटफार्मपर जाएबे अछि। जहिना नमहर-नमहर प्लेटफार्म तहिना लोको कोंचकी लगल अछिए। मुदा तैयो टहलै-बुलै आ दोकान-दौरीसँ वस्तु-जात कीनैक जगह तँ अछिए।

छोटी लाइनक तीनू प्लेटफार्मकेँ टहैल-बुलि देखि मेवालालक मन मकैक ओरहापर गड़ि गेलैन। एक तँ नव चीज, दोसर सस्तो। दूटा बाइल कीनि खा लेब आ दूटा रस्ता-ले नेने जाएब। आठे अने बाइल अछि, दुइये रुपैआमे चारिटा भाइयो जाएत। मकैक ओरहाक दोकान जहाँ-तहाँ प्लेटफार्मपर लागल, तँए मेवालालक मनमे कोनो अगुताइ रहबे ने केलैन। गाड़ी अबैमे घन्टा भरि समयो अछिए। समयो ने काटब अछि। जखन एक्के स्टेशनक प्लेटफार्म छी तखन जहिना छोटी लाइनमे दोकान अछि तहिना ने बड़ियो लाइनक प्लेटफार्मपर हएत।

एक प्लेटफार्मसँ दोसर प्लेटफार्मपर जाइ-ले सीढ़ी बनले अछि। जहिना स्टेशनक ऐपार-सँ-ओइपार धरि सीढ़ी बनल अछि तहिना सभ

प्लेटफार्मपर चढ़ै-उतरैक सेहो बनले अछि। सीढ़ीपर चढ़ि जखन मेवालाल पुलपर पहुँचला कि प्लेटफार्मपर एकाएक हर-बिर्ड़ो भेल। जे जेतए छल से तेतइ अपन-अपन दोकान-दौरी बन्न करए लगल। ओरहाबला सभ अपन-अपन चुल्हिमे पानि ढारलक, आ चाहक दोकानदार-सभ अपन-अपन गैसक चुल्हिक स्वीच बन्न केलक। पुलपर ठाढ़ मेवालाल निच्चाँमे सभ किछु देखए लगला। देखला जे जहिना प्लेटफार्मपर दोकानदारक संग गहिंकी यात्री छल सेहो तहिना अछि। जे एक्के-दुइये जेबो करैए आ एबो करैए मुदा एना हर-बिर्डो किए भेल? मेवालालक मनमे जिज्ञासा जगलैन। के कहत, केकरासँ पुछबै..?

दस मिनट बीतैत-बीतैत जहिना दोकान-दौरी बन्न भऽ गेल तहिना यात्रियो सभ असथिर भऽ-भऽ अपन-अपन जगह पकैड़ लेलक। छोटी लाइनक प्लेटफार्म टपैत-टपैत मेवालाल सभ किछु शान्त देखलैन मुदा पुलिससँ स्टेशन भरि गेल। आन यात्री जकाँ मेवालालकेँ सतरहटा समानो नहियेँ छेलैन, खाली एकटा झोरा रहैन, जे काँखमे नंगा बबाजी जकाँ टाँगल छेलैन। ओना, नंगा बबाजीक रूप-रंग आ मेवालालक रूप-रंगमे अकास-पतालक अन्तर छेलैन्हे। जैठाम नंगा बबाजीक देह बेनग्न रहैत मुदा काँखमे झोरा रहबे करैए, से मेवालालकेँ नहि छेलैन, खाली काँखमे झोरा मात्र छल, धोती-कुरता पहिरने छला आ झोरामे एकटा चद्दैर आ एकटा धोती रहैन।

बड़ी लाइनक प्लेटफार्मपर उतरैत मेवालाल दोकान-दौरीकेँ बन्न देखि मनकेँ समेट लेलैन। अखन खाइयो बेर नहियेँ भेल अछि, जखन खाइबेर हएत तखन बुझल जाएत।

दू भागमे पुलिस बँटल अछि। एक अछि जेकरा हाथमे बन्दूक छै आ दोसर, जेकरा हाथमे बेंतक लाठी रहइ। ग्रुप बना-बना पुलिस-सभ प्लेटफार्मपर टहैल रहल छल। दोकानदारो-सभ अपन-अपन दोकान बन्द कऽ जहिना पुलिसक ग्रुप बनल तहिना ओहो सभ गोलिया-गोलिया गप-सप्प करए लगल। यात्रियो सभ अपन-अपन संगीक संग शान्तिसँ बैस चारूकात देखए लगल।

सीढ़ीसँ उतरैत मेवालालक मनमे घुरियाइये रहल छेलैन जे एना हर-

बिर्डो किए भेल? पुलिस तँ शान्ति-बेवस्था बनबै दुआरे अपन-अपन ड्यूटि कऽ रहल अछि, ने अखन गप-सप्प करत आ ने ओकरासँ गपे-सप्प करब नीक हएत। एहनो तँ भइये सकैए जे ओकरा जानकारी नहियोँ होइ। यात्रियो सएह भेल। बाहर बाहरक छी, जँ किछु जानकारी हेबो कएल हेतै, तँ ओ सुनल-सुनाएल हेतइ। जे सहियो भऽ सकैए आ गलतियो भऽ सकैए। मुदा दोकान-दौरीबला सभ लग-पासक सेहो छी आ भऽ सकैए जे ओकरा पहिनेसँ सेहो किछु जानकारी होइ, तँए नीक हएत जे ओकरे सभ लग जा किए ने बुझी। जखन स्टेशनक ई हाल अछि, तखन गाड़ियो औत कि नहि, तेकर कोन ठीक। जँ बाहरसँ एबो करत तँ स्टेशनसँ खुजत की नहि। मेवालालक मन झुझुआए लगलैन। झुझुआइत मनमे उठलैन- कन्हाक बिआहमे सतरहटा आफद होइते छइ। मुदा उपाइये की...।

दूटा मकैक ओरहाबला, एकटा पानक दोकानबला, एकटा चाहबला आ चारि-पाँच गोरे आन-आन बेवसायबला एकठाम बैस गप-सप्प कऽ रहल छल। अपने सन लोक देखि मेवालाल ओकरा-सभ लग जा कऽ बैसला। टटके घटना रहने वएह गप-सप्प–माने स्टेशनपर पुलिसक आगमन, दोकानदौरी बन्न हएब, आ यात्री सभकेँ अपन-अपन ठौर धड़ैक–चलैत रहइ। तँए मेवालालकेँ अपन विचार–बुझैक विचार–रहितो अपन कोनो प्रश्ने ने रहल। किए तँ जे बुझए चाहै छला वएह गप-सप्प चलि रहल छइ।

पानक दोकानदार बाजल- "बरौनीक कारखानामे श्रमिक सभ तालाबन्दी कऽ हड़ताल केलक अछि।"

ओना, पानबलाक बात सुनि मेवालालक मनमे उठल जे कारखानामे तालाबन्दीसँ रेलबेकेँ कोन मतलब छै जे ऐठामक दोकान-दौरी बन्न भेल आ अनेरे यात्री सभकेँ परेशानी होइए..!

तैबीच मकैक ओरहाबला बाजल- "नीक केलक। साल भरिसँ दरमाहा बढ़बैक खाली अश्वासनेटा श्रमिक सभकेँ देल जाइ छेलै, बढ़बै नहि। भाय, भरि दिन खटत ओकर परिवारक जँ गुजरो-बसर नीक जकाँ नइ होइ तखन दोसर उपाइये की छइ।"

तेसर बाजल- “जाबे तक कारखनाबला सभसँ समझौता नइ हएत, ताबे तक श्रमिको-सभ अपन-अपन कारोबार बन्न राखह।”

मुस्की दैत चाहबला बाजल- “सोल्होअना तोहर विचार सही छह, भाय। आइ ने हमहूँ तीन सालसँ चाहक दोकान स्टेशनक प्लेटफार्मपर केलौं हेन, मुदा जिनगी तँ गुदस भेल गामे-समाजमे।”

सह दैत मकैबला बाजल- “भाय! तोहीं किए, हमहीं कोन बिलेंतसँ आबि कारोबार केने छी। तोरे जकाँ ने हमहूँ गाममे रहै छेलौं।”

गामक बात सुनिते चाहबलाक मन हरिया गेल। हरियाएल मने बाजल-

“भाय, एक बेर हमरा गाममे एकटा रेवाज तोड़ैले गामक नवतुरिया सभ तैयार भऽ ओकरा उठौलक आ नव रेबाज शुरू केलक। माने अबेवहारिक चलैनकेँ बदैल बेवहारिक चलैन शुरू केलक। नीक रहितो अखन तक ओ पुरना चलैन चलिते अछि!”

बिच्चेमे पानबला बाजल-

“भाय, ओइमे कनी चूक भेल, चूक ई भेल जे समाजक आन-आन ओकरा नइ माानलक। मुदा अपना सभ से नहि करब। जाबे तक कारखानाक श्रमिकक मुहेँ नइ सुनब ताबे तक अपनो सभ अपन-अपन कारोबार बन्न राखब।”

तही बीच हल्ला भेल- “हबड़ा जाइक गाड़ी पैछला स्टेशन पहुँच गेल अछि। किछुए कालमे एक नम्बर प्लेटफार्मपर चलि औत...।”

मेवालाल उठि कऽ अपना प्लेटफार्मपर जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

❑

शब्द संख्या: 2031, तिथि: 17 नवम्बर 2017

तीन

पैछला स्टेशनपर गाड़ी अबैक हल्ला सुनि जहिना आन-आन यात्रीकेँ सबुर भेल तहिना मेवालालोकेँ भेलैन। मुदा कनिर्येंकालक पछाइत फेर काने-कान पसरल जे गाड़ी नइ आएल अछि ओहिना कियो फुसिकेँ फुसका बाजल छल...।

अपन-अपन ओछाइन-बिछाइन जे यात्री समेट कऽ बैग-एटैचीमे रखि नेने छला सेहो सभ अपन-अपन मन तोड़ि पुन: अपन-अपन जगह भँजिया-भँजिया सभ बैसला। सबहक मनमे शंका बढ़ए लगलै जे गाड़ी औत कि नहि औत वा ऐला पछातियो जँ कहीं हड़तलिया सभ गाड़ीकेँ स्टेशनेपर रोकि देत तखन की करब..? जइसँ यात्री सबहक मन झखि-झखि खसिये रहल छल। कियो अपन ऑफिसक छुट्टीक बेथे बेथित तँ कियो ऐगला मेल ट्रेनक छुटबक बेथे बेथित। तहूमे बरौनी सन टीशन, जैठाम भरि ठेहुन कागजक पुड़िया-पुरजीक संग केराक खोंइचा आ मकैक नेरहा सेहो पसरल रहिते अछि।

असगरे मेवालाल प्लेटफार्मपर कखनो-कखनो घुमियो-फीरि आ कखनो-कखनो बैसियो-उठि अपन ऐगला बाट दिस तकैत रहैथ। बेठेकान गाड़ीक कोन ठेकान? लगलो आबि सकैए आ नहियोँ आबि सकैए आ एला पछातियो जँ हड़तलिया सभ अपन माँगक संग गाड़ियोकेँ रोकने रहल तखन तँ भेल दुनू रोटी चाउरे-केँ। मुदा लगले मेवालालक विचारमे लहकी लहकल। लहकी ई लहकल जे जखन एक कारखानाक झंझट छी तखन कारखाने भरि विवादकेँ रखने ने बेसी नीक होइत। कारखाना दिससँ मेवालालक नजैर अपना दिस बढ़ल। बढ़िते मनमे उठलैन- घरपर पत्नियोँकेँ हिसाबेसँ खर्चा देने आएल छिऐन। अपनो संगमे तहिना अछि। तैठाम जँ पाँचो दिन रस्ता रोकाएल रहल तखन तँ दुनू दिस ने तवाही मचत। मुदा अखन कइये की सकै छी। जहिना हाथ बिनु ओजारे आ पएर

बिनु पेरे रहैए तहिना ने रहब..!

जिनगीक चकभौरमे मेवालालक मन सेहो चकभौर लेलक। चकभौर लइते मनमे उठलैन- भने स्टेशन परहक खाइ-पीबैक सभ दोकान बन्न भऽ गेल। अखन खेबोक तृष्णा तँ तेना भऽ कऽ नहियेँ जगल, नीके भेल! मुदा तैसंग मनमे ईहो उठलैन जे जखन जिनगीक संघर्षमे रोजगारियो अपन रोजगार छोड़ि भूखे रहि सकैए तखन हम किए ने रहि सकै छी। घरपर जँ पत्नीकेँ खगबो करतैन तँ एते आशा तँ भइये गेल हेतैन किने जे पति परदेश कमाइये-ले गेल छैथ, जखने कमा कऽ पठौता कि पहिल कमाइसँ उधारीए सठाएब। उधार देनिहारोक मनमे परदेशक आशा नइ जगतैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। ओहो तँ ओहने मारू-बेगारूकेँ टेब-टेब एककेँ तीन झोरि-झोरि अपन जिनगीक महल ठाढ़ केने अछि...।

लगले मेवालालक मन देनिहारसँ उछैट लेनिहारपर गेलैन। लेनिहारपर जाइते तुरैछ-तुरैछ मन मुड़छए लगलैन। मुड़छल मनमे उठलैन- बेठेकनाएल जगहपर कमाइ-ले जाइ छी। मुदा माइयो आ पत्नियोँकेँ तँ से नहि छैन। हुनको सभकेँ ने अपन-अपन बात बुझए पड़तैन। आ से जाबे तक नइ बुझती ताबे तक मुरै-भाँटाक दोस्ती जकाँ हएत जे एकटा गाड़ले रहत आ दोसर लटकले रहत..!

गाड़ी अबैक समाचार पसरल। यात्री सभमे चलमली जगल, जइसँ गाड़ी-गाड़ीक हल्ला भेल। मेवालालक मनक भक्क सेहो खुजलैन। भक्क खुजिते मेवालाल अपन कुर्ताक ऊपरका जेबीमे राखल टिकटपर हाथ देलैथ। टिकट पहिने कटाइये नेने छला, तँए जेबीमे रहबे करैन। तहीकाल गामक तँ नहि, मुदा पड़ोसी गामक एकटा चिन्हरबापर मेवालालक नजैर पड़लैन। ओहो कलकत्ता जाइ छल। मेवालाल ससैर कऽ पड़ोसी लग पहुँच बजला-

“भाय, तूँ केतए जा रहल छह?”

रविनाथ बाजल-

“भाय! ‘जे गति तेरो से गति मेरो आ मेरोए-तेरोए-टा किए, आनो-

आनकेँ सेहो।' कलकत्ता जा रहल छी। गाममे रहने ऐ रौदीमे अपनो आ परिवारोक मटियामेट हएब निसचित। रौदी भेने किसानक हाथ-पएर टुटि गेल, अछैत औरुदे जहिना कियो मरि जाइए तहिना दोसर दिसक कोनो उपाय नहि, तखन जीबैक आशे की अछि।"

तही बीच नमगर-छड़गर 'गोरखपुर-हबड़ा' गाड़ी स्टेशनक पैछला सिंगल लग पहुँचल। मेवालाल बजला-

"भाय, हमहूँ तँ कोलकत्ते जा रहल छी! संगमे मात्र एकटा झोरेटा अछि। तोरा की सभ छह?"

रविनाथ बाजल-

"हमरो तेतबे अछि।"

एक रंग-ढंगक संगी बुझि मेवालाल बजला-

"भाय, पहिले बेर कलकत्ता जाइ छह आकि पहिनौं कहियो गेल छेलह?"

मुस्की दैत रविनाथ बाजल-

"कलकत्ताक कोन गप जे केरलो-कर्नाटक गेल छी।"

मेवालाल बजला-

"तब ते तूँ भाय बाहरक रेहल-खेहल छह! हम पहिल बेर गामसँ निकलल छी, बाहरक कोनो ठौर-ठेकान नइ बुझल अछि।"

जहिना अपन बड़ाइ सुनैमे सभकेँ नीक लगै छै, तइसँ कि भिन्न रविनाथ अछि जे अधला लगितै। बाजल-

"कलकत्ता ते हमरा ऐपार-सँ-ओइपार धरि धाँगल अछि, जेते हम कलकत्ताकेँ धँगने छी तेते ते जे कलकत्तामे नोकरी करैत-करैत बुढ़ भऽ भऽ मरि गेल सेहो ने धँगने हएत।"

रविनाथक विचारमे मेवालालकेँ कनी-मनी जिनगीक रस भेटए लगलैन। संगे, अपन टुटैत जिनगी आ जिनगीक विचारकेँ अर्रा-अर्रा खसैत सेहो देखिये रहल छला। देखबो किए ने करितैथ, स्व-अवलम्वित ओहन जीवन जे स्वयं अनुशासित राखि अपन जिनगीकेँ स्वतंत्र रूपे दुनियाँक

बोनमे वृन्दावनक गाए सदृश चरौर करैत रहला ओ आइ बेलज्जत भऽ रहल छैन। जखन धरतियेमे लज्जैत नहि रहल तखन ओइपर बसैबलाकेँ केतेक काल लाज बँचि सकतै। तँए संगीक खगता मेवालालकेँ सेहो भइये रहल छैन। संग पुड़ैत मेवालाल बजला-

"भाय! की कहलहक, ऐपारसँ-ओइपार धरि कलकत्ता धाँगल अछि?"

एक तँ ओहुना ट्रेनक प्रतीक्षा आ असपतालक ओगरवाहीक राति नमहर भइये जाइए आ जँ तैपर माघक शीतलहरी हुअए तखन तँ आरो घनघोर! रविनाथकेँ सेहो बरौनी सन प्लेटफार्मपर दस गोरेक बीच अपन बेथो बुझाएब छेलइ। बाजल-

"एक दिस जहिना रवीन्द्र बाबाक शान्ति निकेतन देखने छी तहिना दोसर दिस दार्जिलिंगक राहुल बाबा[4]क डेरा सेहो देखने छी। तेसर दिस जहिना सुन्दर बनक चाननक गाछी देखने छी तहिना चारिम दिस एक बंगलाक दू भागक बीचक सीमा सेहो तँ देखनहि छी। तेतबे नहि, पूस मासक संक्रान्तिक गंगा सागरक स्नान सेहो केने छी। आब अहीं कहू जे कलकत्ताक की बाँकी रहल।"

अनभुआर मेवालाल बजला-

"भाय, तखन ते तूँ पूरा देखल-सुनल अनुभवी जकाँ सभ किछु देखने छह! तोरा संगे रहब तँ ऐ दुनियाँक कोन बात जे ओहू दुनियाँमे केतौ नइ हराएब।"

मेवालालक मुहेँ जीतहा-मुइलहा सुनि रविनाथक मन आरो खनहन भेलैन। खनखनाइत बजला-

"भाय, जीतहे-मुइलहेटा दुनियाँटा किए कहै छहक, सरग-नरक[5] धरि देखा सकै छिअ।"

जेना-जेना रविनाथ आगू बढ़ैत बजैत गेल तेना-तेना मेवालालोक

---

[4] राहुल सांस्कृतयायन

[5] स्वर्ग-नर्क

मनमे बिसवास बेसियाए गेलैन। जेतेक मनमे बिसवास बेसियाइत गेलैन तेतेक खुशी सेहो उपकैत गेल। जखने दुखी मनमे खुशी उपकत आ खुशी मनमे दुख उपकत तखने विचारक धारक मुँह सेहो बेरेबे करत। जे बेराइत-बेराइत दू धारा बनि बहए लगैए। मुदा दुखकेँ मेटाइते सुखक धार पेब जहिना विचारमे विचरपन बढ़ैए तहिना सुखक सुखाएल मरुस्थलक धारक विचरपनमे घटबी सेहो अबिते अछि। मुदा से नहि, मेवालालक मनमे अखन ओतबे धड़धड़ा रहल अछि जे टुटैत परिवारक जिनगीकेँ केना बँचा कऽ जीवित रखि सकब। जँ जीवित रहत तँ आगू-ले आगू विचार करैत रहब...।

मेवालाल बजला-

“भाय, अखन सरगक-नरकक बात छोड़ह। तूँ जे एते घुमि-फीरि कऽ कलकत्ता देखलह तेकर की कारण?”

तखने यात्रीक बीच हल्ला भेल जे गाड़ीक इंजनमे खरापी आबि गेल अछि तँए दस-पनरह मिनट बिलमसँ स्टेशनपर औत।

ओना, हल्ला मुहेँ-मुँह आ काने-कान सौंसे प्लेटफार्मपर भेल मुदा मेवालालक मनमे मिसियो भरि हलचली नइ आएल। हलचली नइ अबैक कारण भेल जे सिंगल लग गाड़ी पहुँच चुकल अछि। कनी-मनी सरदी-बोखार भेने कियो अपन जिनगीक गाड़ीकेँ रोकि थोड़े लइए। तखन तँ जहिना मौसमी रोग तहिना ओकर मौसमी दवाइयो तँ अछिए, दुनू संगे-संग चलैत रहत। होइतो अहिना छै जे आँखिक देखलपर लोककेँ बिसवास बेसी होइते छइ। ओना, देखब-देखबमे थोड़े-थोड़े अन्तर सेहो अबिते अछि। तेकर कारण अछि जे देखैक-देखैक अपन नजैर सेहो होइते अछि। ओना, सोझे आँखिसँ देखब आ मनमे विचार करैत देखबमे सेहो अन्तर होइते अछि। मुदा से सभ अखन नहि। अखन एतबे जे जहिना आन-आन यात्री सिंगल लग गाड़ी सहित इंजनकेँ ठाढ़ भेल देखैत तहिना मेवोलाल आ रविनाथो तँ देखिते छल। मनो मानियेँ गेल छेलै जे जहिना अनका हाथक काज तहिना ने अनका पैरक सवारियो छीहे, तँए कनी-मनी देरी कोनो देरी नइ भेल। अपन पैरक सवारी आ अपना हाथक काज कियो अपना जुक्तिये ने मिलबैत, माने जोड़-घटाव करैत चलैए। जखन घरसँ

निकैल जिनगी बँचबैले परदेश जाइये रहल छी तखन मुरदापर जहिना अस्सी मनक बोझा तहिना नब्बे मनक बोझा, बात बरबइरे भेल। दस घन्टाक रस्ता बारह घन्टा-चौदह घन्टा आकि सोलह घन्टाक हएत सएह ने, मुदा पहुँचौत तँ जरूरे। तँए गाड़ी देखि सबहक मन असथिर भइये गेल छल। रविनाथ बाजल-

"भाय, जखन तूँ पुछिये देलह आ दुनू भाँइ निचेन सेहो छीहे, तँ जड़ियेसँ कहि दइ छिअ।"

टोकारा दैत मेवालाल बजला-

"हमरा-तोरामे कोनो भेद अछि, जहिना उजरल-उपटल तूँ छह तहिना ने हमहूँ छी, अनेरे विचारमे विभेद किए करबह। मुँह खोलि बाजह, भने रेलबे स्टेशनक प्लेटफार्म छीहे।"

मेवालालक टोकारा सुनि रविनाथ टोनिया-टोनिया बाजए लगल-

"मेवा भाय, पचीस बीघा खेत पिताजीक अमलसँ रहल अछि। अही खेतक बले पिताजी कौलेज तक पढ़ा बी.ए. पास करौलैन। आन-आन ओहन विद्यार्थी जकाँ अपन जिनगी कहियो ने रहल जे ट्यूशन पढ़ा, छोट-मोट चाकरी कए वा अपन बाप-दादाक सम्पैतकेँ बेच-बेच पढ़ै छैथ। सम्पन्न परिवार रहने सभ कथू सम्पन्नतासँ चलैत रहल।"

मेवालाल-

"बाह! यएह ने जिनगी भेल जे समयानुसार परिवारक सभ आवश्यकता पूरा करैत चलैत रहल!"

खेबाकाल तेबखा-दालिकेँ जहिना शरीरक सौंसे दुनियाँ चलैक गति रहितो बुढ़-बुढ़ानुसक कण्ठे लग बैस गारा लगि जाइए तहिना मेवालालक बात सुनि रविनाथकेँ सेहो गारा लगि घेघ जकाँ निच्चाँमे लटैक गेलैन। मुदा बीतल दिनक सुख ने लोक बिसैर जाइए, दुख तँ मनकेँ दुख-दुखबैत जीविते रहैत अछि। ओही दुख-दुखाइत मने रविनाथ बाजल-

"ओइ दिनमे नइ बुझि पेलौं जे जिनगीक भारी चूक भेल!"

रविनाथक मुहसँ 'जिनगीक चुकब' सुनि मेवालालक मनमे उठलैन-

ई तँ हाथीक पीछड़बक बराबरी भेल! जँ हाथी पिछैड़ कऽ खसि पड़ल तखन ओकरा उठा कऽ ठाढ़ के करत। तहिना जिनगीमे चूक भेने सेहो तँ होइते अछि। मुदा अतीतमे बेतीत करब एक परिस्थिति भेल आ वर्तमानमे पिछैड़ कऽ खसब दोसर परिस्थिति भेल...।

मेवालाल बजला-

"भाय, केहेन चूक भेल?"

जहिना हार-जीतक बीच बीचक सिमान सोलह भेल तहिना रविनाथ अपन पैछला विचारकेँ सोलह करैत बाजल-

"भाय, एक्के बेर घोंटि कऽ सभटा पीब लेलौं।"

मेवालालक मनमे छगुन्ता भेलैन। छगुन्ता ई भेलैन जे रविनाथ बाजल किछु ने आ सभटा घोंटि कऽ पीब गेल, की पीब गेल? बजला-

"भाय, जखन दुनू भाँड़ रस्ते चढ़ल जाइ छी तखन औगताइये कोन अछि, तँए फरिछा कऽ बाजह।"

सुखक सुखाएल सुखकेँ ने कियो बिसैर जाइए मुदा दुखक दुखाएल दुखकेँ थोड़े बिसरैए, ओ तँ मन रहिते छइ। रविनाथक मनमे जेना धिक्कार उठलै तहिना अपनाकेँ धरिकार बनि धिक्कारैत बाजल-

"भाय, अपन जिनगीमे चूक भेल तइमे जेते दोख अपनो छल तइसँ कम मातो-पिता आ समाजोक नहियेँ छल। तँए सोलहअना अपने गलतीसँ चुकलौं सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, किछु गोरेकेँ अधला सेहो लगलैन, किएक तँ ओ जनै छैथ जे अस्तगामी सूर्यक निखार उदयगामी सूर्येसँ होइए। मुदा तइमे त्रिवेणी घाटक गंगा-यमुनाक बीच सरस्वतीक पातर धाराक धार सेहो तँ जीवित रहिते अछि।"

बजैत-बजैत रविनाथ, पाँतरमे सठल मोटर इंजनक गाड़ी जहिना पेट्रोलक अभावमे एकाएक रूकि जाइए तहिना बिच्चेमे रूकि गेल। बीचमे रूकने जहिना सवारीक सवार उतैर कऽ चारूकात चकोना हुअ लगैत जे नीक कि बेजाए कियो देखलक तँ ने। तहिना रविनाथोकेँ भेल छेलैन, मुदा मेवालाल तँ आगूमे सुननिहारक रूपमे ठाढ़े रहैन, तँए विचार-क्रमकेँ मिलबै दुआरे चुप भेला।

रविनाथकेँ चुप देखि मेवालाल बजला-

“रवि भाय, तूँ ते बजैत-बजैत तेना बिच्चेमे चुप भऽ गेलह जे हम किछु बुझबे ने केलौं।”

मेवालालक एक्के प्रश्नक दू-दिसिया रस्ता जकाँ दू-मुहरी उत्तरो तँ अछिए। से नइ तँ मेवालालकेँ पहिने यएह जना दइ छिऐ। बजला-

“भाय दू-दिसिया बाट रहने एकक निरदोस दोसर बाट चढ़ने दोखियो भऽ सकैए आ दोखी नहियोँ भऽ सकैए। तँए, कोन बाटक विचार सुनबह से तोरे विचार।”

मेवालालकेँ रविनाथक विचारमे अपन दोख तेना सन्हिया गेल जे अपन परिवारोक आ अपनो सभ किछु बिसैर गेल। बजला-

“कलकत्ता जाइमे गाड़ीकेँ भरि दिन भरि राति समय लगबे करत तखन बीचमे औगताइये की अछि। अपना विचारे बेरा-बेरी दुनू बाजह।”

मेवालालक बात सुनि रविनाथक मनमे भेल जे जँ पहिल रस्ताक उत्तर बिना भूमिका बन्हने जँ दोसर रस्ताक बात उठाएब तँ दोखी होइसँ कियो ने बँचाएत। सोल्होअना दोखी बनि जाएब। तहूमे दुनू भैयारी बाट चढ़ल गामसँ परदेश जा रहल छी। जखने दोखाह बनि एक समाजसँ[6] दोसर समाजमे[7] जाएब आ दोखाहक कारणे, बिनु बुझने जँ दोखी मानि बेवहार करत ओहो तँ लाजमीए हएत किने..! तँए पहिने अपन बाल लीला, माने पैछला चुकल जिनगीकेँ अगुआ रविनाथ बजला-

“भाय, पहिने भूमिका रूपमे सुनह। समाज दोखी भेल जे एहेन वातावरण समाजमे बनल केना, आ बनल जीवित केना अछि जे जखने जमीन-जत्था परिवारबला बच्चाकेँ अपन जिनगीसँ, माने खेती-पथारीसँ बिमुख किए कएल जाइए। माने ई जे पढ़ल-लिखल लोक जखन कोदारि पाड़ैए आकि हर जोतैए वा गाए-महींस-ले कुट्टी काटैए, तँ लोक हुनकर कुट्टीचाल किए करैए।”

---

[6] गाम-समाजसँ

[7] आन राज्य, आन शहरक समाजमे

रविनाथक विचार जेना मेवालालक हृदयकेँ बेधलक। मनमे उठलैन- अखन तँ दुनू गोरे गामसँ बाहर शहर-बजार जा रहल छी, तखन गाममे कइये की सकै छी। बजला- “भाय! ई तँ समाजक सामाजिक बात भेल, कोनो कि अपना सभ नेतागिरी करए जा रहल छी जे एहेन-एहेन बात-विचारमे पड़ि झमेलमे पड़ब। दोसर की भेलह से कहक?”

मेवालालक विचार सुनि रविनाथक मन सेहो हल्लुक भेल। हल्लुक ई भेल जे जे समाज निर्दोष रहत तखन ओइ समाजक बीच रहनिहार दोखी हुअए, सेहो तँ नहियेँ भऽ सकैए। तँए अदहा-अदही दोख मेटाएब तँ नहि भेल। मुदा पास मार्क-जोकर एक तिहाइ तँ भइये गेल। एकटा भेल समाज, दोसर भेल माता-पिता आ तेसर भेलौं अपने। तइमे तिहाइ तँ कटिये गेल...। रविनाथ बाजल- “भाय, माता-पिताक बीच चारि भाए-बहिनमे असगरे भाए हम। जहिना माता तहिना पितो कहियो कोनो काजक भीर-भार हमरा आबए नइ देलैन। किए हुनका सबहक मनमे एहेन रोग पइस गेलैन जे ओ कर्मक जिनगी दिस प्रवृत्त नहि करा सोल्होअना अकर्मक जिनगी बनबैक पक्षधर भऽ गेला। भाय, एतबे ने हएत जे जाबे माता-पिता छैथ ताबे हुनकर सहयोगी बनि पाछू-पाछू चलबैन।”

बिनु विचारने मेवालालक मुहसँ खसलैन- “हँ, से सएह ने हएत।”

तैबीच सिंगल लग अँटकल गाड़ी सिटी देलक। मेवालाल बजला-

“आब भरिसक गाड़ी औत।”

अपन विचारक दुनियाँमे डुमल रविनाथ बाजल-

“भाय, गाड़ीक चिन्ता किए करै छह, ओ सिंगलपर सँ प्लेटफार्मपर आबि रूकत, तखन ने। अपनो दुनू भाँइ तँ संगे प्लेटफार्मपर छीहे।”

मेवालाल बजला-

“तोरो तँ आब एक्के प्रकरण विचार ने बाँकी छह। तइ बीचमे ओहो भइये जाएत, तोहूँ अपन गाड़ीकेँ खिंचैत बाजह।”

मेवालाल आ रविनाथक बीच जे गप-सप्प होइ छल, ओ अगल-बगलक यात्री सभ सेहो कान पाथि सुनिते छला। होइतो अहिना छै किने जे अनको गप-सप्प आकि विचार-विमर्शमे जिनगीक बात-विचार

सन्हियाएल रहैए, जइमे अपनो जिनगीक रस्तो आ रस्ताक बन्धनो सभ टुटैत बाट भेटिये जाइए। जँ से नइ भेटैए तँ किए लोक अनेरे रामायण आकि महाभारते पढ़ैए। एकटा भेल अयोध्यासँ लंका तकक खिस्सा आ दोसर भेल वृन्दावनसँ कुरुक्षेत्र धरिक सिस्सा। मुदा ओइ दुनूसँ हमरा कथी लाभ अछि। एकटाक लाभ अयोध्यासँ लंका तकक लोककेँ भेल आ दोसर वृन्दावनसँ कुरुक्षेत्र धरिक। हमर गाम आकि हमरा इलाकासँ तँ ओ दुनू हटल अछि, तखन हमरा पढ़ैक कोन प्रयोजन। हमरा तँ अपने गाम-घर बुझैक पलखैत नइ अछि तखन अनकर की सुनब। देखिते छी जे जखन ईंटाक दू मंजिला मकान सीमेन्ट-बाउलसँ जोड़ल नइ छल, लोक गाछ-बिरीछसँ लऽ कऽ टटघर-भीतगरमे शिक्षा ग्रहण करै छल तखन ओकरा आत्मीय नीतिगत ज्ञान होइ छेलै, मुदा आब जखन दू-मंजिला मकानमे बिजली पंखाक तरमे शिक्षाक बँटबारा होइए, तँ जएह आदमी अपना परिवार-ले दिन-राति तबाह रहैए, तेकर माए-बापक दशा की अछि आ अपन पाँच सालक बेटा-बेटीसँ सालमे गोटे दिन भेँट हुअए आ मास्टर साहैबकेँ चिन्हबए पड़ैन जे यएह तोहर पिता भेलखुन आ माए, तखन मातृत्व-पितृत्वक केते महत रहत। आ जँ विचारे पर्यावरण-हीन भऽ जाएत तखन कोन मुलुकक दर्जी ओहन फाटल दाढ़केँ सीअत..!

रविनाथ बजला-

"भाय, आब पाँचे मिनटक खेला बाँकी रहल अछि। एकरा अन्तिमे दृश्य बुझह। किए तँ अखन तक ने प्लेटफार्मपर दुनू गोरे बैस कऽ बतियाइ छेलौं मुदा जखन गाड़ी औत तखन तूँ केतए चढ़बह आ हम केतए चढ़ब तेकर कोनो ठीक अछि। मुदा एकटा बात पहिनहि विचारि लएह जे गाड़ीमे केतौ चढ़ी, जेतए सीट भेटतह तेते ने चढ़बह, मुदा केतौ-केतौ उतैर कऽ भेँट-घाँट करैत रहब। कोनो कि अपना दुइये गोरे पसिंजर छी, देखै छहक प्लेटफार्मे भरल अछि।"

मेवालाल बजला-

"भाय, जखन अपन अन्तिमे दृश्य छिअ तखन जल्दी बाजि कऽ बिसरजन करह। किएक तँ जिनगियो ने नाटकेक मंच छी। नङ्गेरा-डिगरीसँ पर्दा-तिरपाल धरि ने समेटए पड़त।"

मुस्की दैत रविनाथ बाजल-

“भाय, टिकुलीक नाँगैरमे जहिना पतरका काठी भोंकि अकासमे धिया-पुता उड़ा दइए, तहिना अपनो मन उड़ए लगल। अपनो मन कलकत्तासँ बंगलोर-मुम्बइ होइत दिल्ली-अमृतसर धरि उड़ि गेल।”

मेवालाल-

“तखन तँ तूँ पूबसँ पच्छिम आ उत्तरसँ दच्छिन- सौंसे देश भ्रमण केने छह!”

रविनाथ-

“तइमे शंका किए करै छह। अपन खेत-पथार छोड़ि नोकरीक भाँजमे सौंसे देश घुमलौं मुदा मन मोताबिक नोकरी नइ भेल। हारि-थाकि अपन गाम पकैड़ जिनगी चलबए लगलौं। जइसँ पूर्ण सम्पन्नता आबि गेल।”

अपन मनक भरास निकालैत मेवालाल बजला-

“भाय, लोकक बुझने कम सम्पैत भेल मुदा अपना बुझने पनरह कट्ठा जमीनपर जीनिहार एकटा स्वावलम्बी परिवार हमरो दू साल पहिने धरि छल मुदा आब..!”

‘आब’ कहिते जहिना मेवालालक वाक् हरण भेल तहिना रविनाथो अवाक् भऽ गेल। दुनू एक-दोसरक मलिन मनकेँ मलि-मलि मल निकालैक परियास करए लगल।

❑

शब्द संख्या: 2592, तिथि: 25 नवम्बर 2017

चारि

रेलबे स्टेशनक पहिल प्लेटफार्मक ऐगला मुँहमे गाड़ीक इंजनकेँ प्रवेश करिते यात्रीक बीच हड़बड़ी भेल। सभकेँ अपन-अपन चिन्ता। दूरक सफर छी तँए यात्रीक संख्या कम। सोल्हो बोगीक गाड़ी स्टेशनक प्लेटफार्ममे लगि गेल। तीन श्रेणीक बोगी अछि, जइमे छहटा ओहन अछि जेकर टिकटोक दाम बेसी आ बैसै-सुतैक सुविधो बेसी। पाँचटा बोगी ओहेन जइमे दिनक यात्री-सभ तँ चढ़ि सकैए मुदा नअ बजे रातिक पछाइत ओइसँ उतैर जाइत। दोसर श्रेणीक सुतैबला यात्रीक भेल। तेसर श्रेणी, जेकरा 'सरहगंजा श्रेणी' सेहो कहि सकै छी, एकर किरायो कम छै आ ऐमे जेकरा जगह भेट गेल ओ बैसल जाएत आ जेकरा जगह नहि भेटल ओ ठाढ़े जाएत वा पौदानपर लटैक-फटैक कऽ जाएत।

रविनाथकेँ बुझल-गमल तँए दू रुपैआ कुल्लीकेँ थम्हा सीटपर जा कऽ बैस रहला। मेवालाल पाहि लगा गाड़ीक बोगीकेँ देखए लगला। लोकक भीड़ देखि मेवालालक मनमे होनि जे जखन एकटा गाड़ीमे एते लोक अछि तखन सभ गाड़ी मिला कऽ केते यात्री हएत। एतेक यात्री तँ सभ दिन ने गाड़ीमे सफर करैत हएत...।

गोरखपुरसँ लऽ कऽ बीचक जे जे स्टेशन अछि ओ सोलहन्नी रौदियाएल इलाका, तँए गाम-घरक किसान-बोनिहार गाम छोड़ि-छोड़ि बजार दिसक जोड़ पकड़ने अछि। सौंसे गाड़ीक बोगी देखला पछाइत मेवालालक मनमे उठलैन, नइ बैसैक जगह हएत तँ ठाढ़ो-ठाढ़ तँ जाएबे अछि। ओना, प्लेटफार्मपर पुलिसक जमघट लगले छल तँए भीड़-भाड़ रहितो कहा-कही आ झगड़ा-झंझटसँ बँचल गाड़ी रहबे करइ। मेवालाल गाड़ीमे चढ़ि ससरैत-ससरैत कनी आगू बढ़ि ब्रेंचक मुँह लग गेला कि एक गोरे हाथक इशारासँ अपने लग जगह दैत बैसए कहलकैन।

जगह पबिते मेवालालक मनमे संतोष भेलैन जे अरामसँ कलकत्ता

पहुँच जाएब। ठाढ़े-ठाढ़ जाइमे भीड़ होइते अछि। जाँघो आ हाथो भरा जाइत मुदा आब से नहि, अरामसँ जाएब।

गाड़ी बरौनी स्टेशनपर सँ विदा भेल। गाड़ीमे चढ़ल यात्री सभ अपन-अपन ठौर पकैड़-पकैड़ किछु बैसबो कएल, किछु ठाढ़ो रहल। देखिते-देखिते गाड़ी सिमरिया पुलपर पहुँच गेल। मेवालाल चुपचाप सबहक बोली अकानैत रहैथ मुदा बोलीक थाहे ने पबै छला। एक्के मुहेँ बंगलो बजैत, छपड़ियो बजैत, तैसंग भोजपुरियो बजैत आ मैथिली सेहो बजैत। से एक्के गोरे नहि, दुनू ब्रेंचपर बैसल बारहो-तेरहो यात्री।

जहिना मेवालाल सभकेँ ठेकनबैत रहैथ जे के कोन इलाकाक छिया तहिना मेवोलालकेँ ओ सभ तरे आँखिये ठेकनबैत जे कोन इलाकाक छी। मेवालालकेँ ने दोसराइत संगी आ ने कियो चिन्हरबा, तँए अनठिया जकाँ चुपचाप देहो आ मुहोँ मारने बैसल छला।

थोड़ेकालक पछाइत, मेवालालकेँ बइसैले जे पइसैठ-सत्तैर बर्खक बुड़हा जगह देने रहथिन ओ पुछलकैन -

“बौआ, केतए-सँ एलौं?”

भाषा सुनि मेवालालक मनमे भेलैन जे अपने इलाकाक छैथ। बजला-

“मधुबनी जिलासँ एलौं हेन आ कलकत्ता जा रहल छी।”

तही बीच एक गोरे गंगा महरानीक जयकार करैत भोजपुरी गीत गाबए लगला, आ तैसंग एक्के-दुइये दुनू ब्रेंचपर बैसल सभ घुनघुनाए लगला...।

अखन तक जे मेवालालक मनमे होइ छेलैन जे सभ सभ इलाकाक छिया, तइमे थोड़ेक बदलाव आबए लगलैन। बुझि पड़लैन जे भरिसक एक्के इलाकाक छिया।

मेवालालकेँ चुप देखि ओ बुड़हा अपन परिचय दैत बजला-

“बौआ, आब तँ हम बुड़हा गेलौं मुदा छी भिखारी कक्काक मंचक खेलाएल। नाओं हमर सुमनलाल छी।”

भिखारी ठाकुरक नाओं सुनि मेवालालक मनमे जिज्ञासा जगलैन। आँखिक देखल नाचक मंचपर ठाढ़ भेल भिखारी ठाकुर आँखिक सोझमे झकझकाए लगलैन। झकझकाइत भिखारी ठाकुरक रूप मेवालालक मुँह फोरि देलकैन। मुस्कियाए लगला। मुस्कियाइत मेवालाल बजला-

"भिखारी बाबाक मुँहमे साक्षात् सरस्वती बास करै छेलखिन..!"

मेवालालक मुहसँ भिखारी ठाकुरक बड़प्पन सुनि सुमनलालक मन सौन-भादो जकाँ नहाएल तँ नहि, मुदा कातिक-अगहनक ओस जकाँ ओसा जरूर गेलैन। अह्लादसँ अह्लादित होइत सुमनलाल पूसक पाला जकाँ पलाइत बजला-

"अहाँ, भिखारी काकाकेँ मंचपर केना देखलयैन?"

मेवालाल बजला-

"ओइ समय हम पढ़ैत रही। कनी नेनमति रहबे करए। नेनमति भेल- जे नीक लागल ओकरा बढ़ा कऽ बजलौं आ जे नइ नीक लागल ओकरा या तँ घटा कऽ बजलौं वा नहियेँ बजलौं।"

मेवालाल बजिते छला कि बिच्चेमे सुमनलाल बजला-

"वाह! वाह..!"

'वाह वाह' सुनि मेवालाल अकचकाए लगला जे कोन एहेन फूलक झाबा झड़ि कऽ खसि पड़ल जे ई बुड़हा एते जोरसँ बाहबाही केलैन!

जेना बिलाइ बाघपर कन्हुआइए आ बाघ बिलाइपर बघुआइए तहिना मेवोलाल आ सुमनोलालक बीच भेल। जहिना सुमनलाल रूपक अलंकार जकाँ अपने अलंकृत हुअ लगल रहैथ तहिना अपन बुझल-देखल मेवालाल एक जुग-पुरुषक गुण-गाथाक स्मरणमे मस्तसँ मस्ती धेने छला। मुदा शंका तँ मेवालालक मनमे रहबे करैन जे बुड़हा हमरा बोलीपर बाहबाही देलैन आकि भिखारी बाबाक नाओं सुनि? किएक तँ जँ कहीं ओहो हमरे जकाँ कहियो भिखारी बाबाकेँ मंचपर ठाढ़ भेल कवायद करैत देखने होथि। मुदा लगले मनमे साहस बटोइर विचारलैन जे चलह जे राम से राम अपन देखल-सुनल ने बाजब। जे जे आँखिक देखल अछि ओ मुहसँ बाजब, ऐमे लजाइ-धखाइक बाते कोन अछि। दुनियाँमे के नइ अपन

सुखक पाछू वौआइए, बुझबै जे हमहूँ वौआइ छी, मुदा तैयो एते तँ लाभ हेबे करत किने जे एते तेज सवारीक यात्रा शान्तिसँ कटि जाएत, यएह की कम भेल। मेवालाल बजला-

"एकबेर, जखन भिखारी बाबा मंचपर चढ़ला। चढ़िते आँखिक इशारासँ कि कहि देलैन आ मुहसँ कोन बुकनी छोड़लैन से तँ नइ देखि पेलौं, किएक तँ तैकाल हमहूँ आ हमर एक संगी रहैथ सेहो, दुनू संगी भिखारी बाबाक लम्बाइ-चौड़ाइ फैदम[8]सँ नपैत रही...।"

जइ दिनक वृतान्त मेवालाल बखान करए चाहि रहला अछि तइ दिन सुमनलाल सेहो हुनके पार्टीमे पाइट लगैत रहैथ। समाजी रूपमे मंचपर सेहो जाइथ। ओना, सुमनलाल समाजी रूपमे केतेको मंचपर भिखारी ठाकुरक संगे रहि चुकल छला, मुदा पारखी जहिना सइयो-जोड़ धोती-साड़ीक थानमे एकटा चुनि तृप्त होइए तहिना सुमनलाल सेहो अपन कृत्तिक वृत्ति भुखाएल काने सुनए लगला। ओना, एक दिस जहिना भिखारी ठाकुरक संग अपनाकेँ चलन्त सिपाही बुझि रहल छला तहिना दोसर दिस सुखल फूलकेँ झड़ैत बीच फड़क सिरखार सेहो देखिये रहल छला तँए बिच्चेमे सुमनलाल टोकलकैन-

"नापमे केते बुझि पड़ला?"

मुस्की दैत मेवालाल बजला-

"अथाह! जहिना अपने केतौ ठाढ़ भऽ कऽ तकलापर अपनाकेँ दुनियाँक बीच सभ बुझैए तहिना ने अपन-अपन नजरिये सभ देख-देखि नपबो करैए। केतौ केते पानि अछि से तँ ओकर थीरपनेसँ ने लोक बुझैए।"

मेवालालक बात सुनि सुमनलाल जेना चिन्ताक नमहर खाधिमे खसि चिनतए लगला। तैबीच नवतुरिया सभ जे भिखारी ठाकुरकेँ नहियोँ देखने छल आकि अन्तिम बुढ़ाड़ीमे देखनौं छल, बिनु देखल एक गोरे मेवालाल दिस तकैत बजला-

"भाय साहैब, भिखारी बाबाक मुँहमे केना सरोसत्ती बास करै

[8] समुद्र नपैक माप

छेलखिन?”

मेवालाल बजला- “बौआ, भिखारी ठाकुरसँ कोनो भैयारी आकि दियादी सम्बन्ध नहि अछि जे बेसी कए कऽ बाजब आ ने कोनो दुश्मनी अछि जे पक्षक नीक बात-विचारकेँ चाहे तँ अधला बना कऽ बाजब वा मुहेँ बन्न करि मनेमे चौपेत लेब। तँए अपन जे अनुभूति भेल से अनुभवक विचार केलौं।”

दोसर मेरिया, माने एके नाच पार्टीक दोसर संगी, ओकरा डपैट कऽ कहलक-

“भाय, जखन कलकत्ता सभ जाइये रहल छी, तखन एते धड़फड़ेने हेतौ। चुपचाप सुन जे भिखारी बाबाक बोलमे की सरस्वतीक बास छेलैन।”

नवतुरिया मेरियाक प्रश्न सुनि सुमनलाल सेहो साकांच भेला। साकांच ई भेला जे भिखारी काकाकेँ अपना-अपना नजरिये सभ देखै छेलैन। कियो समाज-सुधारक बुझै छेलैन, कियो मन बहलाउ नटुआ। खाएर, जहिना अपन-अपन सबहक देखै-सुनैक नजरियो होइ छै तहिना नजरानो भेटिते छइ।

भिखारी ठाकुर नाच पार्टीक पार्ट करैबला बारहो गोरेक संग तेरहम सुमनलाल छला। सुमनलाल भिखारी ठाकुरक संग करीब बीस बर्ख धरि नाचि चुकल छला। बारहे-तेरहे बर्खक अवस्थासँ सुमनलाल भिखारी ठाकुरक संग पूरि चुकल छला। एक तँ पारिवारिक सम्बन्ध सुमनलालकेँ सेहो छेलैन आ दोसर भिखारी ठाकुरक कलाकारियो आ कवाइदोसँ तेतेक आकर्षित भऽ गेला जे हृदयकेँ छुबि हृदयाबास सेहो भऽ गेलैन। जाबे तक भिखारी ठाकुरकेँ देखौआ नाचसँ जन-जागरणक विचार मनमे प्रवल छेलैन ताबे तक भोजपुरसँ मिथिला आ बंगालसँ आसाम धरिक क्षेत्र बनौने रहला। सालो भरि घरसँ बाहरे घुमि-घुमि बीतबै छला। मुदा जखन उमेरो ढहलैन आ अपन जिनगीक लेखो-जोखो केलाह तखन मन यएह गवाही देलकैन जे जइ पाछू पड़ि जन-जागरण बुझै छेलौं ओ नटुआ बुझि लोक मन बहलाएब बुझलक। जखन गुणाक अंके नहि तखन गुणनफल की

भेटत..!

ओना, हाव-भाव तँ भिखारी ठाकुरक नहि रहलैन मुदा मुँहक बोल ओहिना जह-जह करिते छैन। जहिना एक समुद्र टपि कियो दोसर समुद्र टपैले समुद्रक एक महारपर बैस अपनाकेँ नाप-जोख करए लगैए जे एते नमहर आ एतेक गहींर समुद्र टपैमे केहेन हेलबक संग केहेन नाह आ केहेन नैयाक खगता हएत से तँ जोड़ला पछातिये ने समुद्रमे कुदब। ओना, हनुमानजी जकाँ एक महारसँ दोसर महारपर कुदियो कऽ टपल जा सकैए मुदा तइले तँ हनुमन विधि-विधानक खगता अछि किने...।

एक समुद्र[9] टपला पछाइत जखन भिखारी ठाकुर अपन आत्म-चिन्तन केलैन तखन अपन मातृभूमि कहियौ आकि जन्मभूमि, विचारक ऐ सीमापर आबि मन अँटैक गेलैन जे किछु ने केलौं। जहिना बालपनमे गाम-समाज देखलौं तहिना जुआनियोमे आ तहिना जिनगीक चारिमपनमे सेहो। आइसँ सत्तैर बर्ख पहिनहि हमरा सबहकक हाथमे स्वतंत्रताक फूल भेटल, मुदा केते स्वतंत्र छी, ई तँ विचारणीय अछिए। पीढ़ीक-पीढ़ी[10] ससैर गेल मुदा आइ हम केतए ठाढ़ छी, से तँ बुझए पड़त। जँ अपने अपनो-ले समाजमे ठाढ़ केने रहितौं, जेकर देखो-देखी आ कहो-कहीसँ जँ समाज एक-बटिया बनि गेल रहैत तँ बहुत बेसी लतैड़-चतैड़ भलहिं नहि गेल रहैत मुदा आगूक दिशा दिस तँ मुँह जरूर अलगौने रहैत जइसँ आगू ससरैमे राहु-केतु नहि बाधित करैत। मुदा की एकरा झुठलाएल जा सकैए जे एकटा नीक कृत्तिक पाछू दसटा अधला नइ होइए?

एक तँ भिखारी ठाकुरक नाच पार्टीक मेड़िया तैपर साल भरि पहिलुका हकार पूरए सभ जाइये रहल छला तँए मन खनहन रहबे करैन। तैपर गाड़ीक सफर, मन भरले रहैन जे भिखारी बाबा तेतेटा जमीनदारी दऽ गेल छैन जे नौत-हकार पहिया कऽ पुरैमे साल लगिये जेतैन। जहिना किसानकेँ दिन-दिनक काज सालो भरि दइते रहैए तहिना फेर ऐगले साल

---

[9] जिनगीक वयस

[10] मनुक्खक इतिहासक पीढ़ी

घरोक आ घरवालीक सेहो मुँह देखै जेता। जखन परदेश कमाइ-ले जाइये रहल छैथ तखन मन खाली केने किए चलता। तहूमे भिखारी ठाकुरक विदेशिया नाचक संग राजा हरिश्चन्द्र नाचसँ राजा भरथरी होइत दुर्वाशा-श्रृंगी ऋृषि होइत भीष्म पितामहसँ श्रवणकुमार धरिक पार्ट खेलेनिहार तकक जमात छैन्हे। तैसंग बजनियोक मन अगधाएल रहबे करइ। किए तँ मन गवाही दइते रहै जे सभ खेल हमरेपर अछि।

चौदह-पनरह बर्खक एकटा नवतुरिया नटुआ बाजल-

“गपे-सप्पमे बारह बजि गेल, भूखो लगि गेल तँए नीक हेतह जे पहिने किछु खा-पीब लएह।”

दोसर नटुआ टीपलक-

“भूखे भजन न होई गोपाला।”

ओना, सबहक खाइ-पीबैक विन्यास सम्लिते रहै तँए जेकरा भारमे रहै ओ झोरा-झोरी खोलए लगल। तैबीच एकटा तेसर नटुआ टीपलक-

“तोहर सूर बाबा सूरमे सुर-सुरा बाजल छेलखुन। मुदा हमर कबीर बाबा गर-गरा कऽ कहलैन- ‘न कुछ देखा भक्ति भजन में, न कुछ देखा पोथी में। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो देखा सो रोटी में।”

मने-मन मेवालाल सोचए लगला जे बरौनीमे विचारने रही जे दूटा मकैक बालिक ओरहा खाइयो लेब आ रस्ता-ले दूटा रखियो लेब मुदा से नइ भेल। एकठाम बैसल सभ खाएत, हम मुँह ताकब..!

मुदा लगले मेवालालक मनमे उठि गेलैन जे ओरियान नइ केलौं आकि परिस्थितिये प्रतिकूल बनि गेल। केहेन बढ़ियाँ शान्त वातावरणमे सभ काज शान्तसँ प्लेटफार्मपर चलि रहल छल, तखने एक्केबेर तेहेन हवा कारखानाक हड़तालक उठल जे सभ किछु उसैर गेल। ऐमे अपन कोन दोख?

अखन धरि जहिना मेवालाल चुपचाप बैसल सभ किछु देखि-सुनि रहल छला तहिना सुमनलाल सेहो मेवालालकेँ आँकि रहल छेलैन। मेवालालक मुँहक रूखि कनी मलिन जरूर होइत रहैन, तेकर कारण छल, सबहक बीच मेवालाल मुँह तकता। ...सुमनलाल फरमाइस दैत बाजल-

“दिनक मसीम छी तँए नीक हेतह जे मकैक सतुआ अखन खा। जअक तँ रातियो-बिराति खा सकै छी।”

नाचमे जे बिपटाक पार्ट खेलैत ओ बाजल-

“काका जखन पुड़ियो अछिए तखन पहिने पुड़ीए खाएब ने नीक हएत।”

दोसर, जे बिपटाक चालि पकैड़ बिपटा बनए चाहि रहल अछि, ओ बाजल-

“तेलपुड़ी ने लगले अड़ुआ जाइए, पनिपुड़ी तँ जेते बसियाएत तेते सुअदगरे बनत।”

मेवालाल बैसल-बैसल नवतुरिया सबहक बोलियो सुनै छला आ निहारि-निहारि ओकर बगेयो-वाणि देखै छला, मुदा तैबीच अपना मनक खाधिमे गच्चा लगलैन। खत्तामे गच्चा ई लगलैन जे तेलपुड़ी तँ बुझै छला मुदा पनिपुड़ी नहि बुझि सकला। सींग कटा छौड़ा-माड़ैरसँ पुछबो नीक नहि, तहूमे नाचक बिपटा छी, की बाजि देत तेकर कोन ठेकान। सुमनलालकेँ पुछलैन-

“चाचाजी, पनिपुड़ी की भेल?”

मेवालालक प्रश्न सुनि सुमनलालक मन मुस्कियेलैन। ‘संगेमे वैद मियाँ मरता है।’ आँखिक सोझहे देखल सभ किछु मुदा बुझि नहि रहल अछि! बजला-

“बौआ, जहिना तेल-घीमे सिद्ध कएल पुड़ी होइए तहिना पानिमे सिद्ध कएल सेहो होइए, जेकरा अपना सभ बगिया कहै छिऐ।”

सुमनलालक बात सुनि मेवालालक मन एक्केबेर भभैक उठलैन। भभा कऽ हँसए लगला।

कोनो अनठिया वस्तुक जानकारी आ कोनो ठिया वस्तुक जानकारी पेब अहिना होइते छइ। मेवालालक मनमे उठए लगल जे सचमुच जहिना पुड़ीक विन्यास बनौल जाइए तहिना तँ बगियोकेँ बनिते अछि। दालिक संग दलि-पुड़ी जकाँ दलि-बगिया आ गुड़क संग ठकुआ जकाँ गुड़-बगियो तँ

बनिते अछि।

एक्केठाम मकैक सतुआ सानल गेल। जहिना रंगमे बदामक सतुआक कान कटैत तहिना खाइयोमे रूइयाक फाहा जकाँ मोलाइम सेहो होइते अछि। ओना, गुणमे जहिना बदामक सतुआ गरिष्ट-बलिष्ट अछि तेना मकैक नइ अछि, मुदा खाइमे नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा किछु अछि, अन्न तँ छीहे तँए देवोपम अछिए।

एकठाम सतुआ सानैत देखि मेवालालक मनमे थोड़ेक संतोष जरूर भेलैन। थोड़ेक संतोष ई जे जेतेकाल सतुआ सानि बँटवारा हएत तेतेकाल तक तँ कियो नइ बुझत जे फल्लाँकेँ किछु खाइक वस्तु नहि छैन। मुदा हाथे-हाथ गेला पछाइतसँ लऽ कऽ खाइकाल धरि अपनाकेँ की करब मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे कोनो कि कियो गौंआँ-घरूआ आकि सर-समाज छी जे माँगियो कऽ खाइक अधिकार रहत। गाड़ीक यात्री जहिना ओ सभ अछि तहिना ने अपनो छी। ओ सभ छपरासँ आएल अछि। आ जँ घरेक खेलहा होइ तइ हिसाबे तँ हम लगसँ आएल छी, तँए खाइक क्षुधो ने ओते पछुआइये कऽ हएत। मनमे धैर्यक बान्ह बन्हाइते मेवालालकेँ संतोष जगलैन। जइसँ मन मुस्कियेलैन।

मेवालालक मुस्की देखि सुमनलाल बजला-

“बौआ, जाबे खाइक ओरियान होइए ताबे एकटा बात कहि दइ छीअह।”

अपरिचित सुमनलालक ‘एकटा बात’ सुनिते मेवालालक मनमे उठलैन जे गोटे घन्टा भेँट भेना भेल हएत, तैबीच कोन एहेन एकटा बात हिनका मनमे आबि गेलैन! अखन सतुओ सानले जाइए, जँ बँटवारा होइत रहैत, सेहो नहियेँ अछि। से नहि तँ हिनकेसँ किए ने पुछिलिऐन। बजला-

“की एकटा बात?”

मेवालालक जिज्ञासु मनक पिपाशु रूप देखि सुमनलाल बजला-

“अपन जिनगी आ जिनगीक लीला।”

सुमनलालक बात सुनि मेवालालोक मनमे भेलैन जे भने अरामसँ रस्तो कटि जाएत आ एक जिनगीक वृतान्तो सुनि लेब। जिनगीक वृतान्त

सुनला पछातिये ने कियो अपन जिनगीकेँ स्थापित करैए। मेवालाल बजला-

“हम तँ पहिल बेर कलकत्ता जाइ छी, मुदा अहाँकेँ तँ रेहल-खेहल अछि तँए रस्तोक ठेकान राखब आ समयक संग यात्राक सेहो।”

जहिना भूखलकेँ पेटसँ बेसी भोजन देखलापर, निवस्त्रकेँ वस्त्रक भण्डार देखलापर आ घरविहीनकेँ घर भेलापर खुशी होइ छै तहिना सुमनलालकेँ सेहो संगियो भेटलैन आ सवारीक संग समय सेहो भेटलैन तँए मनमे खुशीक बमकोला फुटबे केलैन।

सुमनलाल बजला-

“बौआ, अही देहे तेसर जिनगी जीबै छी।”

सुमनलालक बात सुनि मेवालालकेँ छगुन्ता भेलैन जे तीन जिनगी की भेल? मुदा पहिल भेँटमे अपनाकेँ बेसी खोलियो कऽ राखब नीक नहियेँ हएत तँए किछु ने बजला। मुदा मुँह कनी एकोशिया भऽ मुस्किया जरूर गेलैन। मेवालालक मुस्की देखि सुमनलाल आगू बजला-

“बौआ, भिखारी कक्काक संग जहिया दसे-बारह बर्खक रही तहिये धेलौं। जौनपुरसँ लऽ कऽ बीचला सभ इलाका पकड़ैत बंगाल-असाम-नेपाल होइत मेल ट्रेन जकाँ सालो भरि घुमि-घुमि नचै छेलौं। आ भिखारी काका जखन मरि गेला तेकर बादो हमसभ जे नचैबला रही सेहो सभ आ किछु नवको तूर सभ मिलि कऽ पार्टी ठाढ़ केने रहलौं। जाबे तक हूबगर रहलौं ताबे तक जे इलाका छल तइमे सालो भरि घुमि-घुमि नचैत रहलौं।”

भिखारी ठाकुरक संग सुमनलालक नमहर जिनगी देख, बालपनक विचार मेवालालक मनमे जगलैन। अपना आँखिसँ मेवालाल भिखारी ठाकुरकेँ देखनौं छला जखन भिखारी ठाकुर अधवयसू रहैथ। बजला-

“भिखारी बाबामे की खूबी छेलैन जे एते लोकक चाह छला?”

मेवालालक बात सुनि सुमनलालक मनमे उठलैन- किछु भेलौं तँ भिखारी कक्काक चेले ने भेलौं तँए गुरुक प्रति मिसियो भरि कम-बेसी नहि बाजब। बजला- “बौआ, भोजपुरसँ ढाका-बंगाल होइत असाम-

नेपाल तकक बोलियो आ समाजोकेँ ओ चिन्है छला, तँए एक नाच पार्टी रहितो इलाका-इलाकामे कनी-मनी कम-बेसी कइये लइ छला, जे केतबो परियास केलौं तैयो हमरा बुते नइ भेल। तैसंग ईहो बड़का खूबी हुनकामे छेलैन जे केना भोजपुरक बोलीकेँ बंगालमे बंगलामे बाजि दइ छला आ बंगला बोलीकेँ भोजपुरमे सेहो लूरि-बुधि हमरा नहि भऽ सकल।”

सुमनलालक जिनगीक कमजोर जगह देखि मेवालाल बजला-

“जखन एते दिन संगे-संग रहलौं तखन किए ने भेल?”

सुमनलाल-

“काजक एते धुमसाहीमे रहितो भिखारी काका बेसीकाल असगरे काजो करै छला आ विचारितो छला, मुदा हम अखबारोक समाचार अनके मुहेँ सुनैत रही, आ काजो अनके हिसाबे करैत रही, तखन ओहन अखियास केना होइत।”

मिलानक एक रस्ता भेने खेनाइ-पीनाइ महतहीन भइये जाइए। सतुआक गोली बना-बना पाहि लगा कऽ परसल गेल, ने वारीक परहेज केलक आ ने मेवालाले मनाही केलैन।

❑

शब्द संख्या: 2562, तिथि: 4 दिसम्बर 2017

पाँच

दोसर दिन आठ बजे भिनसरमे गाड़ी हाबड़ा स्टेशन पहुँच गेल। नमगर-चौड़गर स्टेशन। गाड़ीसँ उतैर मेवालाल रविनाथकेँ भँजियबए लगल। ओना, नाचक जे मेरिया छल सेहो उतरल। लोकक भीड़ जहिना प्लेटफार्मपर तहिना मुसाफिरखानामे सेहो छल।

रविनाथो गाड़ीसँ उतैर मेवालालकेँ भँजियबैत लगमे पहुँचल। दरभंगा-मधुबनीक स्टेशन जकाँ हाबड़ा-स्टेशन नहियेँ अछि। अपना ऐठाम मुसाफिरखाना भरि दिन यात्रियो आ अनठियोसँ भरले रहैए, से हाबड़ा-स्टेशनमे नइ अछि। जहिना गाड़ी अबै-जाइ काल मुसाफिर-खानासँ लऽ कऽ प्लेटफार्म तक यात्रीसँ भरि जाइए तहिना लगले खाली सेहो भऽ जाइए। ओना, दरभंगे-मधुबनीक रेलबे स्टेशन जकाँ हाबड़ो-स्टेशनमे दोकान-दौरी अछिए। मुदा अबै-जाइबला यात्री बेसी रहैए।

मेवालालकेँ देखि रविनाथ बजला-

"मेवालाल भाय, आब आगू की कि-केना विचार अछि?"

ओना, मेवालालक मनमे पूर्व निर्धारित कोनो विचार नहियेँ छल जे फल्लाँक ऐठाम जाएब आकि फल्लासँ भेँट करि केतौ काज करब। मनमे खाली एतबे छेलै जे कारोबारी जगह छी, कोनो-ने-कोनो काज पकैड़ काज करब। चाहे ओ महिनवारी हुअए आकि उट्ठा, तँए मेवालाल चुप छला।

रविनाथक बात सुनि सुमनलाल बजला-

"कोनो धड़फड़ाइक बात नहि अछि। पचीस-तीस घन्टाक गाड़ी-झमारल छी, तँए पहिने एकठाम बैस किछु खा-पी लिअ पछाइत निचेनसँ आगू बढ़ब।"

जेना सुमनलालक मनमे निसचिन्ती छल तेना मेवालालक मनमे नहि छल। एक तँ भाषाक दूरी छल, किएक तँ अधिकांश लोक बंगला

भाषी छला जे बंगलामे बजैत, मेवालालकेँ बंगलासँ भेँट नहि। भाषा नइ बुझने मेवालालकेँ केकरोसँ किछु पुछबो कठिन छेलैन्हे। से बात सुमनलाल आ रविनाथकेँ नहि छेलैन। केताबेर रविनाथ कलकत्ता आबि चुकल छला तँए ऐठामक तौर-तरीका बुझल छैन। तहिना सुमनलालकेँ सेहो छेलैन। ओना, सुमनलाल बेसी अनुभवी रविनाथसँ छैथ। किएक तँ पचासो बर्खसँ कलकत्ताक बजारक संग-संग गाम-देहात सेहो घुमैत आबि रहल छला जइसँ सभ तरहक लोकसँ भेँटो-घाँट छेलैन आ गपो-सप्प तँ छेलैन्हे।

अबै-जाइक रस्तासँ बगैल सुमनलालक मेरियाक संगी-सभ एकटा नमहर चद्दैर बिछौलक। सभ कियो अपन-अपन चीज-वौस रखि बिछौल चद्दैरपर बैसला। पर-पैखानासँ लऽ कऽ नहाइ-धोइक सभ बेवस्था ऐठाम अछिए। सभ-कियो सभ दिस लगि अपन-अपन तैयारीमे जुटि गेला। रविनाथ आ मेवालाल सेहो अपन तैयारीमे लगि गेला।

नहेला-धोला पछाइत सुमनलालक मेरियाक जे भण्डारी छल– माने जेकरा लग खाइ-पीबैक समान छेलै–ओ झोरासँ सतुआ निकालि सानए लगल। साननिहारकेँ सुमनलाल कहलखिन-

“बौआ! भूखक तृष्णा सभकेँ अछिए, तहूमे जखन आब अड्डापर पहुँच गेलौं तखन अनेरे झोरामे खाइक वौस किए रखबह। अखन सभ छीहे, सभटा सठा लएह।”

भण्डारीक अपन मनक प्रश्न मनेमे विलीन भऽ गेल। मनमे प्रश्न छेलै जे मेवालाल आ रविनाथो-ले सतुआ सानब कि नहि? मुदा आब सभटा सतुआ सानैक विचार भइये गेल तँए फुट-फुटक प्रश्ने समाप्त भऽ गेल।

अखन तक, माने बरौनी स्टेशनसँ लऽ कऽ हाबड़ा स्टेशन धरि रविनाथ आ सुमनलालक बीच टोका-टोकी नइ भेल छल, जे हाबड़ा स्टेशनपर मेवालालकेँ बीचक कड़ी बनने भेल।

मेवालालक संग रविनाथो सुमनेलाल लग गोलिया कऽ बैसला। बैसते मेवालालकेँ सुमनलाल कहलखिन-

“हम तँ नाच पार्टीक संग जाएब, अहाँ तँ असगरे छी अहाँ केतए जाएब?”

सुमनलालक प्रश्न सुनि मेवालालक मनमे जुआर जकाँ उठल। उठल ई जे रौदीक मारल जखन हारल जिनगी अछि आ कारोबारी जगहपर पहुँच गेल छी, तखन जे काज भेटत से करब।

मुदा अखन तक मेवालाल सुमनलालकेँ बाहर[11]क अनुभवी मानि चुकल छला तँए बेतुकार बाजबोकेँ उचित नहि बुझि बजला-

“जखन अड्डापर पहुँच गेल छी तखन कोनो-ने-कोनो गड़ कमाइले भेटबे करत।”

अनिश्चित विचार मेवालालक सुनि सुमनलाल बजला-

“ओना, जँ हमरा संगे चली तँ तत्काल खाइ-पीबैक जोगार लगि जाएत, मुदा जखन बिपैतक मारल झमाड़एल एलौं तखन ई उचित नइ हएत जे पेटे भरिक आशापर जाएब। परिवार सेहो अछिए तँए बिनु कमेने काज नहियेँ चलत।”

की उचित आ की अनुचित अछि तइ दिस मेवालालक मन बहकलैन। बहकलैन ई जे मात्र पेट भरिक भोजन दुआरे सुमनलाल बजला, मुदा जैठाम पेटे भरिक समस्या अछि तैठामक लेल तँ उचित भेबे कएल। जँ पेटक समस्याकेँ समस्या नहि बुझल जाए तँ हजारक-हजार, लाखक-लाख जे भिखमंगा अछि ओ किए अछि..?

अपनाकेँ संयमित करैत मेवालाल बजला-

“भाय साहैब, अपने भोजनक भार उठेलौं तइले धन्यवाद दइ छी, मुदा जइ परिस्थितिमे हम फँसि गेल छी, तैठाम मेहनत छोड़ि दोसर कोनो उपाय नइ अछि। तँए, मन राखब। अखन जाए दिअ।”

ओना, रविनाथ सुमनलालकेँ सेहो तोष-भरोस दैत कहलकैन-

“भाय साहैब! कारखाना होइ कि खेत, ऑफिस होइ आकि स्कूल, जेतए काज लागत जरूर करबे करब तँए आशा अछि।”

रविनाथक संग मेवालाल सेहो विदा भेल।

---

[11] घरसँ बाहर रहैबला

चारि डेग आगू जखन मेवालाल बढ़ला कि पाछूसँ सुमनलाल बजला-

“केतौ केकरो संग जँ कोनो ओझरी-पोझरी लागए तँ कहबै जे हम भिखारी ठाकुरक मेरियाक छी।”

स्टेशनसँ निकैलते रविनाथ बाजल-

“मेवा भाय, अपना सभ ते हर-कोदाइर पाड़ैबला देशक छी तँए कोनो काजसँ डरैक नहि अछि।”

‘काजसँ नै डरब’ सुनिते मेवालालक मनमे निडरपन जागल। निडरपनो जगैक तँ अपन जगहो आ परिस्थितियो छइहे। ओना, डरबो आ निडरपनो ने एके दिनमे अबैए आ ने जाइए। ओकरो क्रमिक विकास छइ। जे जेतए अछि माने जेकर जिनगी जेतए छै ओकर डरपनो आ निडरपनो ओतै छइ। ओना, आइ धरिक जे मनुक्खक इतिहास रहल अछि ओइमे डरपनक रस्ता प्रवल रहल, जे अनेकानेक रूप पकैड़ अपार जनमानसकेँ दबैत रहल जइसँ डरपन बढ़बे कएल। अपन अतीतक जे संसविचार[12] रहल ओहो ओइसँ अछूत नहियेँ अछि। खाएर जे अछि ओ जाबे अछि ताबे अछि चाहे जहिया छल तहिया छल, मुदा आइ हम सभ एकैसम सदीक अठारहम बर्खमे पहुँच रहल छी, मुदा वयस्क नइ भेलौं सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तँए जँ अपन मताधिकारक प्रयोग करी तँ अत्यधिके की..?

अखन धरिक मेवालालक जिनगी श्रमशीलक रूपमे छेलैन तँए श्रमसँ भागि नहियेँ सकै छला जे मनमे डर पसितैन आकि डरितैथ। ओना, एहेन मनुक्खक सोभाव आइये नहि, सभ दिनसँ दुनू तरहक रहल अछि। माने श्रमशील आ श्रमहीनक। श्रमहीन मनमे सदिकाल अधिक-सँ-अधिक भोगक चाह बढ़िते अछि जइसँ रंग-रंगक अपराध वृत्ति धरतीपर पसरले अछि। मुदा ऐठाम से नहि, मेवालाल श्रमशील छैथ। श्रमे ने मनुक्खकेँ इमानदारो आ स्वावलम्बियो बनैबते छइ। यएह दुनू ने मनुक्खक मनक तिजोरीक मूल सम्पदा भेल। से तँ मेवालालमे छैन्हे। मुदा नव जगह, नव समाजक बीच नव काज–नव काजक माने अखन तक नइ केलहा काज–

[12] संस्कारक विचारधारा

मेवालालक मनमे हौंर नहि मारि रहल छेलैन सेहो बात नहियेँ अछि।

ओना, मेवालालक मनमे एहेन बिसवास नइ छेलैन से बात नहि, जे देखा-देखी दुनियाँमे ने लोक सीखा-सीखी करैत साखी-मंत्र बना गबैए। तैबीच ओतए-सँ निकैल एकटा चाहक दोकानक सोझ दुनू गोरे पहुँच गेला। चाहक दोकानदारकेँ केटलीक कारिख छोड़बैत देखि मेवालालक मन जेना बिहुसि गेलैन। बिहुसिते मेवालाल रविनाथकेँ कहलैन-

“रविनाथ भाय! काजसँ डरैक माने भेल जिनगीसँ डरब। से जँ डरि जाएब तखन जिनगीक समरभूमि केना टपि सकै छी। आ जँ से नहि टपि सकै छी तखन पाप-पुण्यक वा धर्म-अधर्मक विचारे केना कऽ सकब।”

मेवालालक विचार सुनि जेना रविनाथोक मनमे नव विचार पोनगल। पोनगल ई जे नोकरीक पाछू बड़ घुमलौं, बुझू ते सौंसे देशे घुमलौं मुदा ठौर नहि भेटल। जेते कुटुम-परिवारक संग चिन्हार लोक छैथ सभसँ कहबो केलिऐन आ सभ नोकरीक आश्वासनो देलैन मुदा जेहेन परिवारक जिनगी पिताक अमलदारीमे रहल तइसँ नीक बनि जीब से केतौ ने भेटल। ओना, जेहेन हवा-पानि बनि गेल अछि तइमे दोख किनको ने दइ छिऐन। दोख अपन कपारक अछि जे जेते दिन वौऐनी धेने छल, वौएलौं। औझुके काजपर ने कौल्हुका जिनगी ठाढ़ अछि...।

विचारमे बहैत रविनाथक मन विचारक कतवाहिमे आरा लगल। जेना जिनगीक नाहे रूकि गेल होइ तहिना चौंकैत बजला-

“मेवा भाय, जखन जे हएत से हएत! पहिने भरिमन चाह पीब लिअ। जखन देह लऽ कऽ पहुँच गेल छी आ जोलहा जकाँ धुनैले तैयारो छीहे तखन कबीर बाबा अपन तानी-भरनी लऽ कऽ नइ औता सेहो बात नहियेँ अछि।”

दुनू गोरे–माने मेवोलाल आ रविनाथो–चाहक दोकानक ब्रेंचपर बैसला। बैसते रविनाथ बाजल-

“दोकानदार भाय, अपन मिथिलामे जे चाह पीलौं सएह पीने छी। रस्तामे टीशन सभपर छुच्छे गरम पानि पीआ नीक चाहक दाम ठकैए तँए केतौ ने पीलौं। मन कनी बेसी जड़ाएल जकाँ भऽ गेल अछि तँए कनी

बकेनमा महींसिक दूधक जराइन चाह भरि मन पीआबह। जे दाम कहबह से दऽ देबह।”

हाबड़ाक दोकानदार केना मुँह चुप रखैत। हड़बड़ाइत बाजल-

“तोरा सबहक गाममे बकेनमा महींसिक जरलाहा दूधक चाह बनैत हेतह, ऐठाम लोहे-महींसिक दूध चलैए।”

अपनाकेँ पाछू घुसकबैत रविनाथ पाशा पलैट बाजल-

“अखन जे पाँचटा चाह पीबैबला गहिंकी दोकानपर आबि जा तखन केना पीएबहक?”

ओना, दोकानदारो मिथिलेक चटिसारक लोक, जे एकटा गौंआँक संग कलकत्ता आबि चाहक दोकान खोलने छल। पित्ती रेलबेमे नोकरी करैत रहथिन। हुनके बले तीस सालक बन्दोबस्ती जमीनमे दोकान छइ। जे मात्र पौन धुर जमीनमे अछि। एक तँ रेलबे स्टाफक संग पारिवारिक सम्बन्धक शक्ति तैसंग जेतेक कुली आ ठेलाबला-रिक्शाबला छल सभ एकरे दोकानमे चाहो पीबैए आ देश-विदेशक राजनीतो करिते अछि, तँए दोकानदारो मंचपरक लोक भइये गेल अछि। बाजल-

“सौंसे दुनियाँक ठीकेदारी हमहीं लोकक नेने छिऐ। बाबा सदिकाल बजै छला- लूटि लाबी कुटि खाइ प्रात भेने फेर जाइ।”

दोकानदारक बात रविनाथो परेख गेल। बाजल-

“दोकानदार भाय! तोरा दोकानपर छिअ, तहूमे मरल-मराएल परदेशी छी, बाल-बच्चाकेँ मुँहक अहारक ओरियान करै दुआरे ऐठाम एलौं हेन, तँए झगड़ा नइ करब। मुदा जँ कहऽ ते एकटा बात कहियह?”

चौमैत परहक दोकानदार रहबे करए, हँसी-खुशीसँ बाजल-

“भाय, अखन तूँ हमर गहिंकी छह तँए लछमी भेलह। आएल लछमीकेँ गपे-सप्पे भगा देब, से एहेन वेपारी नइ ने छी। बाबा ईहो कहै छला जे ‘अपने खड़ा बजारमे सबहक ली खैर,[13] ने केकरोसँ दोस्ती आ ने केकरोसँ बैर।”

---

[13] खैरियत- हाल-चाल

रविनाथ आ दोकानदारक बीच होइत गप-सप्प सुनि मेवालाक मन ओहिना पघिलल जा रहल छल जहिना गरम वस्तुकेँ देखि घी वा मोम पघिलए लगैए। तैबीच टुस्की दैत मेवालाल बाजल-

“जखन दुनू गोरेक रस्ता एके रंग अछि तखन बजैमे संकोचे की?”

रविनाथकेँ जेना चारू दिससँ सह भेटल होइ तहिना निरविकार होइत बजला-

“दोकानदार भाय, जहिना तूँ अपन बाबाबला विचार जे बजलह से कि हमर बाबा नइ बजै छला। जे तोहर बाबा बजै छेलखुन सएह हमरो बाबा ने बजै छला।”

पारखी दोकानदार, बाजल-

“जे बात हमर बाबा बजै छला सएह जँ तोरो बाबा बजै छेलखुन तखन तँ..?”

बजैत-बजैत दोकानदारक देह जेना सिहैर गेल। जइसँ रविनाथ अपनाकेँ जेना उपलाइत देखलक तहिना बाजल-

“भाय, जखने दोकानपर एलौं तखने मनमे किछु अन्दाज हुअ लगल। मुदा एक राजक कोन बात जे दोसर राजक भेलौं। ओना, एक इलाकाक रहला पछातियो दू इलाकामे रहने थोड़े-थोड़े बोलियो-वाणी आ आचारो-विचारमे अन्तर आबिये जाइए। होइतो एहिना अछि जे जइ इलाकामे गाछी-कलम अधिक अछि ओइ इलाकाक चिड़ै-चुनमुनी आ जइमे नइ अछि–माने जे दहार इलाका अछि, पनिगर इलाका अछि–तइमे अन्तर एबे करै छइ।”

दोकानदार बाजल-

“खाएर जे अछि से अछि मुदा जखन कमाइले एलह तखन चाह पीब लएह, जलखै करा दइ छिअ, अढ़ाइ-तीन बजेमे दिनका खेनाइ बनबै छी, तैबीच तोहूँ सभ काज भँजियाबह।”

दोकानदारक विचार सुनि रविनाथक नैतिक बल जेना सबल भऽ गेल। रविनाथ बाजल- “तोरा भाँजपर तँ केतेको काज हेतह।”

दोकानदार बाजल-

"पढ़लो-लिखल छह?"

रविनाथ-

"हँ हौ, बी.ए. पास छी।"

हाथक इशारा दैत दोकानदार बाजल-

"तोहर काज बैसले-बैसल भऽ गेलह।"

कहि दोकानदार चुप भऽ गेल।

भँसैत धारमे जड़ि उखड़ल गाछ जकाँ मेवालाल अपन जिनगी देखि रहल छला। अपन बाहुँ-बलसँ जीबैबला स्वावलम्बी पुरुख अपन जीवनकेँ मराएल धारमे जड़ि उखड़ल गाछ जकाँ भँसियाइत देखि रहल छला। की दुनियासँ हारि मानि पेटक खातिर आत्महत्या कऽ ली? नहि! अध्यात्म हमर दर्शन छी जे अनेको रंगक जिनगीकेँ अनेको रंगक दिशा निर्धारित करैत आएल अछि आ आगूओ करैत रहत। की ओकरा झुठला देब? नहि! नहि, आत्महत्या कथमैप नइ करब। वृद्ध माए आ पत्नी-बच्चाकेँ गाममे छोड़ि आएल छी, तैठाम जँ अपन नचार-विचार अपने नइ ताकब तँ दोसराक तकने भेटबे केते करत? हे मन! धीरज रख! दुनियाँ बड़ नमहर आ बड़ सघन छइ। सबहक बास हेबे करत..!

दोकानपर मात्र तीनियेँ गोरे- दोकानदार, मेवालाल आ रविनाथ। दोकानदार बाजल-

"दुनू गोरे पहिने ओइठाम जाउ, जैठाम हम फोन करि कऽ कहि दइ छिऐ, जे आदमी-दे जे कहने रही से भेज रहल छी। सामने-सामनी गप-सप्प कऽ लेब। किछु छी तँ बंगाली भाय छी किने। ओ अनेरे ने सोचत जे जहिये कहलिऐ तहियेसँ ओ टोहियबए लगल हएत। कोनो काज ओहिना होइ छै आकि ओइमे समैयो लगै छइ। जे वेचारा हमर एते मान रखलक, तेकरा जँ तेतबो सम्मान नइ देब तखन अनेरे लोक किए 'गुरुदेव-गुरुदेव' जपैत रहैए।"

दुनू गोरे उठि कऽ ठाढ़ भेल। दोकानदार ठाढ़ रहबे करए, बाजल-

"ओइठामक काज सम्हारि कऽ आउ, ताबे खाइ बेर सेहो भऽ जाएत। अहीठाम खा-पीब लेब आ चारि-पाँच बजेमे धरमतल्लामे जे धरमशल्ला अछि ओइठाम चलि जाएब। ओतए दू-चारि गोरेक काज सदिकाल रहिते छइ। ओना, बुझी तँ ओ धरमशल्ला अपने सबहक छी। पचीस-पचास गौंआँ-घरूआ सभ दिन रहिते अछि।"

मेवालाल आ रविनाथ जखन काजक भाँज बुझए विदा भेला तखन मेवालाल बजला-

"अपन चिन्हा-परिचयक लोक सभ नइ छैथ?"

अनुभवी जकाँ रविनाथ बजला-

"मेवा भाय, कलकत्ता छी किने, कलेपर ठाढ़ अछि! तँए सभ किछु छोड़ि देलौं, केकरो डेरापर जेबै आ ओकरा मनमे ई हेतै जे खाइये-ले आएल अछि, से किए। जखन कि खेनाइ ऐठाम तेतेक सस्ता अछि जे बेसी लोक होटलेमे दुनू साँझ खाइए। तइले केकरो मनमे अनोन-विसनोन होइ, से नीक नहि।"

अखन धरिक स्वावलम्बी जिनगी जे मेवालालक मनमे छल ओ एकाएक उद्वेलित भेल। उद्वेलित होइते बुदबुदाएल-

"धरमोक अपन रस्ता छै, जे अपने तोड़ने टुटैए आ अपने जोड़ने जोड़ाइए। तैठाम जखन श्रमिक धरम पोसने छी तेकरा केना गरदैन दाबि कऽ मारि देब!"

मेवालालक विचार सुनि रविनाथ बजला-

"भाय मेवा, एतेक तँ आशा दुनू गोरेक बीच जगिये गेल किने जे एक गोरेक काजक भाँज लगि गेल। ओना, ई बात तँ अपनो विचार कहैए जे दुनियाँमे सभ सबहक सहारे छी आ कियो केकरो सहारा नहियोँ छी। तखन तँ तेहीमे ने लोक चलितो अछिए आ आगूओ चलैत रहत।"

रविनाथक बात सुनि मेवालाल बजला- "जखन काज करए एलौं आ तैठाम जँ काज रहत, ते किए ने ओइमे लगि जाएब। मजदूरक मजदूरीक टकराव तँ ओतए ने होइए जेतए ओहेन श्रमिक रहल आ ओकर ओहन श्रम भेल। मुदा जँ से नहि अछि तखन तँ विचारए पड़त किने।

अपना सभ तँ सहजे पएर उखड़ल बोनिहार भेलौं। तँए पहिने पएर रोपैक ने गड़ लगाएब।"

मेवालालक विचार सुनि रविनाथ बजला- "मेवा भाय, अपनो तँ देखल-सुनल अछिए किने जे जैठामक श्रमिक अपना सभ छी, तैठाम श्रमक महत केते छल आ ऐठाम की अछि। ओना, किछु अछि तैयो तँ पढ़ल-लिखल लोकक समाजो छीहे आ कारोबारी इलाका सेहो छीहे। तँए अपनाकेँ अखन ई मानि ली जे हम केते परिश्रमी छी, तइ हिसाबसँ अपन सामंजस करब। काज रहने छोड़ि कऽ भागबो तँ पलायनक पागलपने हएत किने। से नइ करैक अछि।"

रविनाथक विचार सुनि मेवालाल अपन सहमत जतबैत बजला-

"रविनाथ, अखन बुझह जे जइ रौदियाएल इलाकासँ अपना सभ परिवार बँचबैले एते दूर काज करए एलौं, तैठामक नइ बहुत तँ दू गोरे तँ भेबे केलौं किने। तँए आगूक जिनगी तोहर की हएत आ हमरे की हएत से तँ भविस बुझत मुदा अखन एते तँ अपना सभ विचारिये लेब किने जे कहुना कऽ पहिने पएर रोपी।"

'अपन इलाका' सुनने रविनाथक मन उठि कऽ गाम चलि गेल, जरैत धरतीक सुगन्ध मनमे पसि गेलैन। बजला-

"मेवा भाय, ठीके तेतर दास बबाजी बजै छला- 'केकरो कियो ने..!"

'केकरो कियो ने' सुनिते मेवालालक मन जंगमे अपन जंगी रूपमे रूपायित हुअ लगल। जंग क्षेत्रमे जंगभूमिक ने विचार हएत। तैठाम रविनाथक एहेन बोल हेबा चाही? बजला-

"से की रवि?"

उदास भेल मनक मुँहक मुस्की दैत रविनाथ बजला-

"भाय, अखन अपने सभकेँ किछु हएत, आकि गाममे परिवरेक लोककेँ किछु हेतै तँ के केकरा देखत? हँ! एते बात जरूर अछि जे ओही परिवारक पेटक आगि मिझबै खातिर ऐठाम एलौं हेन, मुदा जिनगी पेटे भरिक नहि ने छी..!"

रविनाथक बात सुनि मेवालालक मन ठमैक कऽ मुड़ि गेलैन। मुड़िते बजला-

"रवि, दरमाहा निर्धारित करैमे बेसी लागि-लपेट नइ करिहऽ।"

मेवालालक विचार सुनि रविनाथ बजला-

"केकरो गेला उत्तर ने हमरा काज भेटत। तखन तँ रहल काजक अनुभव।"

'काजक अनुभव' सुनि मेवालाल बजला-

"पढ़ल-लिखल लोकक काजमे यएह ने नमहर ओझरी अछि।"

'नमहर ओझरी' सुनि रविनाथ अपन ओझरी सोझरबैत बजला-

"पहिने काज आ दरमाहा तय कऽ लेब, पछाइत कहबै जे पहिने ई काज नइ करै छेलौं तँए काज सिखबैक भार अहाँ ऊपर।"

बिना कोनो रौं-झौं भेने रविनाथकेँ नोकरी भऽ गेल। काल्हि साढ़े आठ बजे अपन उपस्थिति दर्ज करौता।

नौकरीक खुशी जहिना रविनाथक मनकेँ चढ़ा देलक तहिना मेवालालकेँ सेहो चढ़लैन। चढ़न्त खुशीक कारण दुनूक अपन-अपन रहैन। रविनाथक मनमे दरमाहा सुनि खुशी भेल आ मेवालालकेँ खुशी ऐ दुआरे भेलैन जे दूटा हराएल बटोहीमे एकटाकेँ ठौर भेट गेल। एकटाकेँ ठौर भेटने दोसरोक हेराएब तँ हेराएब नहियेँ ने रहल।

रविनाथ बाजल-

"मेवा भाय, एते तँ आशा भइये गेल किने जे दुनू गोरे एक घरमे रहबो करब आ दरमाहासँ अपन जिनगियो चलाएब।"

गप-सप्प करैत दुनू गोरे भूषण ऐठाम पहुँचला।

दुनू गोरेकेँ देखिते भूषण बजला- "रस्ताक चलल छी तबैध गेल हएब, तँए पहिने नहा लिअ। ऐठाम स्टेशनक सभ अपने लोक छैथ केतौ लजाइ-धखाइक नइ अछि।"

मेवालाल भूषणकेँ कहलकैन- "सबेरे, अहीठाम नहा नेने छेलौं।

नहाइक खगता नइ अछि। कनी हाथ-पएर आ मुँह-कान धो लेब, तहीसँ काज चलि जाएत।"

दोकानेपर तीनू गोरे खेलैन। खाइते काल भूषण बजला-

"धरमतल्लाक रिक्शाबला सभ पसिंजर पहुँचबए स्टेशन अबिते अछि, ओही रिक्शापर दुनू गोरेकेँ बैसा देब।"

सएह भेल। खेलाक लगले पछाइत एकटा रिक्शाबला सवारीकेँ पहुँचबैले पहुँचल। रिक्शाबला–बचनू–आ भूषणकेँ चिन्हारए रहबे करइ। मुसाफिरखानाक मुँह लग पहुँच, सवारीकेँ उताइर जखन बचनू घरमुहाँ हुअ लगल, तँ भूषणकेँ कहलक-

"की भूषण भाय, चला-चलती ठीक अछि किने?"

भूषण बजला-

"हँ हौ बचनू भाय, आगूमे पाइ गनह तूँ आ चला-चलती रहत हमर!"

बचनू सहैट कऽ दोकानपर आबि बाजल-

"पाहुन सभ केतक छैथ?"

भूषण-

"आइ दू सालसँ अपन इलाकाक की दशा भऽ गेल अछि से कि तूँ नइ जनै छहक।"

बचनू-

"हँ, से तँ बुझले अछि। कोन गाम घर भेल?"

रविनाथ-

"लछमीपुर।"

'लछमीपुर' सुनिते बचनू बाजल- "ओऽऽ लछमीपुर..! ओइठाम तँ हमर सढ़ुआरए अछि। दुखियाकेँ चिन्है छिऐ?"

रविनाथ-

"हँ, किए ने चिन्हबै। गाम कि कोनो कलकत्ता छिऐ जे बापो-बेटाक

बीच चीन-पहचीन नइ रहत। दुनू गोरेक घर एकेठाम अछि।”

बचनू बाजल-

“ओ हमर छोट साढ़ू छी।”

रविनाथ-

“दुनू गोरे बच्चेसँ एकेठाम खेलाइत आएल छी, पढ़ैमे तँ बड़ तेजगर रहैथ मुदा माता-पिताक हालते तेते रद्दी रहैन जे गामक स्कूलसँ आगू नहि पढ़ि सकला। नाम-गाम लिखल तँ होइते छैन। मुदा आब घरक चुहचुही कनी बदललैन अछि। जेठ भाय जकाँ हमहूँ मानै छिऐन आ ओहो तहिना मानै छैथ।”

एक तँ बचनुक सढ़ुआरेक गाम लछमीपुर, तहूमे छोट साइरिक सासुर। केना बचनू अपन पाग निच्चाँ उतारैत। बाजल-

“भूषण भाय! औझुका आमदनियो आ तरहत्थियो सबसबेनाइसँ अपनो बुझि पड़ै छल जे आइ पाहुन जरूर औता। किएक तँ जँ बामा हाथ सबसबाइत तखन तँ अपने केतौ जइतौं, मुदा दहिना हाथ कखनो-कखनो अखनो सबसबाइते अछि।”

भूषण-

“औझुका केहेन कमाइ रहलह?”

बचनू-

“सबैयासँ बेसी आ डेढ़ियासँ कम जरूर भेल अछि।”

भूषण-

“तब ते दूटा पाहुनक भार भारी नइ लगतह!”

आमदनीक गरमी बचनूकेँ चढ़ल छेलै कि अपन मातृभूमिक संस्कार जोर मारलकै से तँ बचनुए जानत मुदा उत्साहित होइत बाजल-

“भूषण भाय, गरीब भेने इज्जतखोर नइ भऽ गेल छी। अपनो इज्जत आ अपन माइटो-पानिक इज्जतकेँ जीता जिनगी केना बिसैर जाएब। बाबाक अमलदारीक एकटा गप कहै छी। एकटा हेराएल बटोही दोसर-तेसर साँझमे दुआरिपर एला। बाबा जीविते रहैथ। अबिते बाबा

कहलखिन- 'पहिने पएर धोउ। पएर धोला पछाइत बाबा कहलखिन- अन्नक तँ अभाव अछि, मुदा पानि तँ अछि। पानि पीब जँ राति निमाहि सकी तँ संग मिलि निमाहू। भोरे जेतए जेबाक मन हुअए, दिन उगल जाएब...।' हमहूँ तेही खनदानक ने छी। धरमतल्लामे रहै छी, रोड परहक दोकानमे खाइ छी, ओछाइन ओछा अपने सन दसटा समांगक संग सुतै छी। एतेक बेवस्था तँ हमरो अछिए।"

भूषण-

"दुनू गोरे आशा बान्हि गामसँ आएल छैथ, एक गोरेक भाँज तँ लगि गेलैन, दोसर गोरेक भाँज लगबिहऽ।"

बचनू-

"हँ, हँ, चलू। रोड परहक आदमी ने हम छी, रोडपर काज छिड़ियाएल अछि, तँए काज हाथेमे अछि। जखन कलकत्ता आबि गेलौं तखन ओहिना घुमि जाएब सेहो नीक हएत।"

बचनुक बात सुनि मेवालालकेँ जेना बुकौर लागए लगलैन। तेकर कारण भेल जे एक दिस समाजक ओहन बोन-झाड़ देखै छला जे भाइ-भाइक बीच गोली-वारीसँ लऽ कऽ जहल-फाँसी तक भऽ रहल अछि आ दोसर दिस आनो-बीरान अपन सहोदर भाए जकाँ शुभचिन्तक छैथ। मुदा ई तँ मनक बात बुझू आकि पेटक बात, मुदा की एकरो नकारल जा सकैए जे एक दिस गामक-गाम प्राकृतिक आपैत-बिपैतसँ–माने रौदी-दाहीसँ–उपैट रहल अछि तँ दोसर दिस मानव निरमित बेवहारसँ नहि उपैट रहल अछि सेहो केना कहल जाए? सबहक अपन-अपन गुण-धर्म छै, ओही गुणे-धरमे ने मनुक्खो लड़ैत-झगड़ैत अपन जीवन बितैबते आबि रहल अछि।

थोड़बे आगू जखन रिक्शा बढ़ल कि रोडक कातमे पानिक टंकीपर बौन दास बाल्टिनमे पानि भरि रहल छला। बौन दासकेँ देखिते बचनू बाजल-

"बौन भैया, अपने इलाकाक पाहुन सभ छैथ!"

'अपन इलाकाका पाहुन' सुनि बौन दास चौंकल। चौंकैक कारण जे

रहल होउ...।

बौन दासकेँ लोक सिनेहसँ ‘बौन भैया’ कहै छैन। असल नाओं मखनलाल छिऐन। से कोनो भैयारियेक लोक कहै छैन से बात नहि, धियो-पुता आ बुढ़ो-बुढ़ानुस ‘बौने भैया’ कहै छैन। जेना कोनो नामक आगू टाइटिल लागल रहैए, आ जान-अनजान दुनू मिला कऽ नामक सम्बोधन करैए तहिना ‘भैया’ बौन दासमे लगि गेल अछि। ओना, गामक पड़ोसियाकेँ देखि बौन दासक मनमे कनी लाजो भेलैन। लाजक कारण रहैन जे आइ पैंतीस बर्खसँ बौन दास घरे-घर, एक मंजिला, दू मंजिला, तीन मंजिलामे सीक-पटैपर पानिक बाल्टिन उघि-उघि पहुँचा अपन जीवन-जापन करैत आबि रहल छैथ। जेहेन कठिन मेहनत तेहेन कमाइ। अपन जुआनीमे बौन दास काजक बाजी पाइयक पाशापर रखि पनरह बर्ख धरि जिनगी बितौलैन, माने अधिकसँ समय लगा अधिक घरमे पानि पहुँचेने अधिक कमाइ पनरह बर्ख धरि केलैन। मुदा अपन जिनगीकेँ तँ ओही जिनगीमे रखने रहि गेला। मिसियो भरि काजमे सुधार नइ केलैन। तँए अपन वएह जिनगी पचास बर्खक उमेर भेलोपर छैन्हे। मुदा गाममे ईंटाक मकानो, पाँच बीघा खेतो जरूर बना लेलैन। बेटीक बिआह सेहो धुम-धामसँ केलाह आ दुनू बेटाकेँ सेहो मैट्रिक तक पढ़ौलैन। मुदा जिनके कमाइपर परिवार ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ ससरल, परिवारमे गति आएल हुनके जिनगी गतिहीन भऽ गेल! बौन दासक मन भरिसक तँए लजा गेलैन। मुदा कलकत्ताक सड़कपर रहनिहार बौन दास केना अपन मुँह चुप रखितैथ। बजला-

“बचनू, रिक्शा रोकह। तीनटा परिवारमे आरो पानि देब बाँकी रहल अछि, तइमे पहुँचा पीठेपर हमहूँ अबै छी। अच्छा जे हेतै से अगाइत-पछाइत हेतै, पहिने चाह पीबह, पान खा, तखन आगू बढ़िहऽ। कोन गामक पाहुन सभ छैथ?”

बौन दासपर नजैर गाड़ि मेवालाल मने-मन विचार करए लगला जे भरिसक काजोमे आनन्द छइ। मने-मन ठेकना नेने छला जे बौन दासक उमर पचास बर्खसँ ऊपर जरूर हेतैन। लोक जीबे केते करैए, जँ पचास बर्ख अपना जुतिये-भाँतिये जँ जिनगी जीब ली, तँ बाँकीए की रहल।

ओना, जहिना बचनू अपन काज रोकि ठाढ़ तहिना बौन दास सेहो। दुनूक मनमे नचैत रहैन जे जेते काज अखन पछुआएत तेते पछुआ पकैड़ पछुआइते चलि जाएत। बचनू बाजल-

“भैया, अखने तीनू गोरे भूषण ऐठामसँ चाह-पान खा-पीब कऽ एलौं हेन। तँए अखन चाह-पान छोड़ह। ताबे हम सभ धरमशल्लापर जाइ छी।”

बौन दास पानि भरए लगला आ बचनू रिक्शा बढ़ौलक। कनियेँ आगू बढ़लापर बचनू बाजल-

“साढ़ू, एहेन जिबठगर कम लोक होइए। जैठाम रहब, तैठाम अड़ोसिया-पड़ोसियासँ झग्गड़ हेबे करैए। ऐठाम अपना सबहक पक्षक पहाड़ बौन भैया छैथ। हिनकर धाक सौंसे महल्लाबला रखै छैन। जइसँ हमरो सभकेँ बुझि पड़ैए जे गाम तँ नहि, मुदा समाजमे जरूर छी।”

मेवालाल आ रविकान्तक तँ कियो चीन-पहचीन लोक रस्तामे नहियेँ रहैन। सड़कक बगलेसँ बचनूकेँ देखि राघव बाजल-

“अढ़े-अढ़ मुँह चोरौने बचनू काका भागल जा, हम सभ ते बोन-झाड़ ने छी।”

राघवक आवाज सुनि बचनू रिक्शा रोकि अपन सफाइ दैत बाजल-

“राघव, जखन सवारी लऽ कऽ चलै छी तखन जँ रोडपर सँ नजैर हटाएब से नीक हएत। तँए नइ देखलियह। केते कालमे डेरापर एबह। अपने पाहुन सभ छैथ।”

राघव बाजल-

“एक घन्टामे काज निपैट जाएत। पचास किलोबला पचीसटा बोरा बँचल अछि, लगले गोदामे थकिया पीठेपर अबै छिअ।”

राघवक बात सुनि मेवालालक मन चौंकल। यएह छी मनुक्खक जिनगी! ठीके बाबा कहै छला- ‘दिन धराबए तीन नाम।’ अही तीनूमे ने केतौ-ने-केतौ अपनो छी। मुदा बजला किछु ने।

सूर्यास्तक समय, दिनुका काजक उसारी आ रौतुका काजक

पसारीक समय भइये रहल छल। धरमशल्लाक आगूमे रिक्शा लगा बचनू दुनू गोरे–मेवालाल आ रविनाथ–कैँ रिक्शासँ उताइर बाजल-

“आगूमे टंकी लगल अछि, झोरा रखि दियौ आ जाबे दुनू गोरे हाथ-पएर धोब ताबे हमहूँ ओछाइन ओछा लइ छी।”

ओछाइन ओछा बचनू रोड परहक चाहक दोकानदारकेँ कहलक-

“मनोहर, दूटा पाहुन एला अछि, चाह नेने आबह।”

मनोहर अपन बारह बर्खक बेटाकेँ कहलैन-

“बौआ, हमरा कनी देरियो लगि सकैए, ताबे तूँ दोकानेपर रहिहेँ।”

कहि तारबला टँगनामे चारि गिलास चाह नेने मनोहर पहुँचला। बचनू सेहो हाथ-पएर धोइ ओछाइनपर दुनू गोरेक संग बैस गप-सप्प शुरूहे केनहि छल। लगमे अबिते मनोहर रविनाथकेँ पुछलखिन-

“कोन गाम घर भेल?”

रविनाथ-

“लछमीपुर।”

लछमीपुर मनोहरक छोट बहिनक सासुर। ओना, मनोहरक बहिनक बिआह बच्चेमे भेल छेलैन आ मनोहरो गामेमे रहै छला, तइ समय लछमीपुर बेसी काल जाइ-अबै छला मुदा आइ बीस बर्ख मनोहरकेँ कलकत्ता एना भेल। तहियासँ अपन गाम तँ मौका-कुमौका जाइत-अबैत रहै छैथ मुदा बीचक बीस बर्खसँ बहिनक ऐठाम भरदुतियोमे ने कहियो जा सकला। ओना, झमटगर दियादी परिवार मनोहरक रहने लछमीपुरसँ आबा-जाही अछिए, मुदा मनोहर-ले तँ अनचिन्हार भइये गेलैन अछि। एक तँ अपन घर छी माने जैठाम रहै छी तैठाम आएल पाहुनकेँ केना कहल जाएत जे नइ चिन्है छी, तँए मनोहरकेँ विचार उठि गेलैन जे केना एहेन बात बाजब। अपनाकेँ तत्सम बनबैत मनोहर बजला-

“बचनू भाय, रौतुका भोजन हमरा भाँजमे रहल। छोट बहिनक सासुर गाम लछमीपुर छी।”

रविनाथ दिस तकैत फेर बजला- “बौआ, अहाँ हमरा नीक जकाँ

नहि चिन्ह रहलौं अछि। जागेसर बहनोइ छिया...।"

'जागेसर'क नओं सुनिते रविनाथ बजला-

"ओ तँ भइये हेता। मुदा दुनू गोरेक घर दू टोलमे अछि।"

चाह सठि गेल। चारू गिलास तारक टँगनामे लटका हाथमे नेने मनोहर दोकानपर जा रखि, पानक दोकानसँ चारि खिल्ली पान नेने पहुँचला। तैबीच बासू पहुँच चुकल छल। बासू महल्लेक मकानमे परिवारक चौका-बरतनक काज करैत अछि। अबिते बासू रविनाथकेँ पुछलैन-

"कोन गाम घर छी?"

रविनाथ कहलकैन-

"लछमीपुर।"

'लछमीपुर' सुनि बासू बाजल-

"ओइ गाममे हमर मौसा-मौसी छैथ। रूपलाल मौसाक नाओं छिऐन।"

'रूपलाल' सुनि रविनाथ बाजल-

"जिनकर घर पछबरिया रस्ता-कातमे छैन, सएह ने?"

बासू-

"हँ।"

रविनाथ-

"हुनका ते हम सभ कक्के कहै छिऐन आ अहाँक मौसीकेँ काकी कहै छिऐन। ओना, हुनकर घर कनी हटल दोसर टोलमे छैन, जइसँ आवाजाही कनी कम अछिए।"

बिच्चेमे बचनू बाजल-

"बासू, मौसी-काकी पछाइत करिहेँ। पहिने ई कह जे कोनो काज भाँजपर छौ?"

बासू बाजल-

"बचनू भैया, कोनो काज तकैसँ पहिने ई ने बुझि लेब अछि, जे

अहाँ केहेन काज करए चाहै छी। काजो तँ काज छी। कोनोमे शरीरक श्रम बेसी लगैए, तँ कोनोमे मानसिक श्रम बेसी लगैए।”

रविनाथ बजला-

“हमर जोगार भऽ गेल, मेवा भायकेँ नहि भेलैन अछि।”

मेवालाल-

“बासू, जखन गामक सभ किछु छोड़ि देह लऽ कऽ ऐठाम एलौं तखन ऐ देहसँ जे काज लागत सभ करब।”

सात बजैत-बजैत पचीसो गोरे–माने जे धरमशल्लामे रहै छला–पहुँच गेला। सभकेँ पहुँचते एक दिस ताश शुरू भेल आ दोसर दिस साँझू पहरक मनोरंजन-कीर्तन-भजन सेहो शुरू भेल। दसनामा अपन ढोलक-झालि आ हरमुनियाँ सेहो रखने अछिए। गामे समाज जकाँ सेहो पचीसोक समाज बनियेँ गेल अछि। रंग-रंगक बोली, रंग-रंगक भाषामे कीर्तनो-भजन हुअ लगल। जहिना एक दिस विद्यापति आ चन्दा झाक संग मधुपजीक, तँ दोसर दिस सूरदासक ब्रजबोली, तेसर दिस तुलसी दासक अवधी, चारिम दिस भिखारी ठाकुरक भोजपुरीक संग रबिन्द्र संगीतक धुन शुरू भेल तहिना ताशक पाशपर सेहो खेल शुरू भेल। एकटा गोधिया भरि दिनका अपन-अपन कमाइ हारि गेल, तँ दोसर गोंधियाकेँ आमदनी दोबरा गेल। माने जेतेक भरि दिनमे कमाइ केने छल तेते जीतियो गेल। यएह तँ छी जिनगीक खेल जे एके रंग कमाइमे दू गोरे दाता-महाजन बनि गेल तँ दू गोरे लेनिहार कर्जखौक! माने ई जे हारल दुनूक कमाइ ओतबे छल जेतेसँ अपने खाइ-पीबै छल आ गाम पठबैले जे रुपैआ रखै छल। मासिक मजदूरी पौनिहारकेँ तीस दिनक एकठाम भेटैए मुदा जेकरा से नइ छै, उट्ठा कमाइ छै, ओ तँ दिन-दिनक हिसाब जोड़ि ने जमा करैए। तँए दुनू हरलाहा ओइ आशापर ओते कर्ज लेलक जेते दिनमे कमाएल छल।

ओना, मनमे ई आशा बनले रहै जे कौल्हुका पाशा जँ हमरे सुतरत तँ औझुका घाटाक पूर्ति भइये जाएत। तँए मनक विचारक मुँह किए मलिन होइतै आकि आमदनियेक खुशी बेसी किए होइतै। एहेन विचार एकटा मटिया आकि रिक्शा चलौनिहार किए बुझत, जँ कहीं कौल्हुको पाशा

हारब तँ दोबर कर्जदार भऽ जाएब आकि जिनगीए दू सीढ़ी पिछैड़ जाएत।

जहिना गाममे रंग-रंगक लोकक जमात अछि तहिना धर्मशल्लाक बीच सेहो बनल छल। आठ-दस गोरे एकठाम बैस गाम-घरक कुशल-समाचार मेवोलाल आ रविनाथोक संग कइये रहल छला। तैबीच एते सम्बन्ध सबहक बीच बनियेँ गेल छेलैन जे एक्को गोरे एहेन नहि छुटला जिनका मेवालाल वा रविनाथक संग सामाजिक सरोकार-सम्बन्ध नहि बनि चुकल छेलैन। जगह बदलने किछु बेवहार बदलबो करैए आ किछु जुड़ितो तँ अछिए। ओना, गाम-गामकबीच समाजक सम्बन्ध सेहो सघन लत्ती जकाँ तरे-ऊपरे लतरल सेहो अछिए।

भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल जहिना सभ छल तहिना मेवोलालआ रविनाथो छलाहे। रौतुका खाइक बेर भेल। एका-एकी सभ उठि-उठि दोकान जा-जा खाए लगल। अन्तो-अन्त मेवालाल बजला-

“भाय-बन्धु, जहिना अपन परिवार अछि तहिना आनोकेँ छइहे। परिवार केना चलैए से केकरोसँ केकरो छिपल नहियेँ अछि। तहूमे दू सालक रौदी तँ आरो अपना इलाकाकेँ जरा कऽ बदरंग बना देलक अछि। जखन लोकक आमदनी जरत तखन ओकर चेहरो आ विचारो बदरंग हेबे करत।”

मेवालालक विचारमे मुड़ी डोला समर्थन करैत दुखमोचन बिच्चेमे बजला-

“हँ, से तँ अछिए। मुदा बुधि-विवेकक मनुक्ख हारियो केना मानत।”

अपन ढहैत जिनगीक टुटैत क्रमपर विचार करैत मेवालाल बजला-

“जहिना अहाँ सबहक देह अछि तहिना ने हमरो अछि, जे काज लागत से करब।”

तहीकाल सुकदेव बाजल- “बचनू भाय, काल्हि गाम जाएब तँए हमर रिक्शा खालीए रहत। बुझले हएत जे हमर हथ-रिक्शा[14] छी तँए बेसी

---

[14] माने छाती बले दुनू हाथे पकैड़ चलैबला

सिखैयोक जरूरत नहियेँ अछि।"

बचनू बाजल-

"सुकदेव, रौदीक मराएल-पड़ाएल मेवालाल आ रविनाथ छैथ तँए गाम जाइते दुनू गोरेक घरपर जा-जा कुशलो-समाचार बुझि लिहऽ आ एक-एक साए रुपैआ सेहो दऽ दिहौन। विदा होइसँ पहिने दू साए रुपैआ हमरासँ लऽ लिहऽ।"

हारल जिनगीक मन्हुआएल मेवालालक मुहसँ निकलल-

"जखन कमाइले आबि गेल छी तखन पैंचो-पालट कऽ कऽ परिवारकेँ चलेबे करब। जहिना बेरपर अहाँ सभ ठाढ़ भेलौं तहिना जिनगी भरि–जाबे एकठाम रहब, हमहूँ निमाहब।"

❑

शब्द संख्या: 4691, तिथि: 30 दिसम्बर 2017

छह

चारि बजे भोरे मेवालालक नीन टुटि गेलैन जइसँ जागि चहा कऽ उठि बैस रहला। चहा कऽ उठैक कारण भेलैन जे सुतलमे भोरक सपना देखलैन जे सभ काज करए चलि गेल आ अपने सुतले छी...।

सपनो तँ सपना छी। जागल सुतल सभमे लोक देखिते अछि। जइमे सभकेँ अपन-अपन विचारो अबैए आ अपन-अपन भवितव्यो अबिते छइ। जहिना वैज्ञानिककेँ अविष्कारक, डॉक्टरकेँ अनुसंधानक, साहित्यकारकेँ सृजनशीलताक आ कलाकारकेँ कलाकारिताक विचार मनमे औनाइत सुतलमे आबि जगा मोन रखैले कहैए तहिना मेवालालोकेँ भेलैन। मेवालालक सपनाक अपन कारण रहैन। अपन कारण ई रहैन जे जखन रौदियाएल गाम-परिवारसँ निकैल अपन पैत्रिक सभ सम्पैतकेँ छोड़ि बेचारे अपन मन-धनक आशासँ घरसँ कलकत्ता आएल छैथ किने। ओही आशाक अनुकूल सपना छेलैन।

नीन टुटिते ओछाइनेपर बैस मेवालाल विचारए लगला, यएह छी दुनियाँक खेल! कियो अछैते प्राणे मरैए आ कियो मुइलोमे प्राण घोंसियाबए चाहैए। की हम श्रमचोर छी जे जहल सदृश्य जीवनक भोग भोगब..?

स्वतंत्र-स्वावलम्बी जिनगी बना जीबैबला मेवालाल की आइ हारल जिनगीक गुलामी स्वीकार नइ कऽ रहल अछि। मुदा एक मेबेलाल एहेन छैथ आकि गामक-गाम, देशक-देश एहेन नइ अछि? की एक देश दोसर स्वतंत्र देशकेँ गुलामी दिस नहि धकेल रहल अछि? की गामो समाजमे एक परिवार दोसरकेँ ओहिना नहि धकेल रहल अछि? की अपनेटा आजादी नीक आ दोसरक आजादी नीक..?

मेवालालकेँ ओछाइनपर बैसल देखि बौन भैया सेहो उठि कऽ बैइसैत बजला- “मेवालाल, अपना सबहक यएह दुनियाँ छी। पैंतीस बर्खसँ

बाल्टीनक भारपर डेरे-डेरे पानि पहुँचबैत आबि रहल छी। जेकर चलैत परिवारक ऐगला पीढ़ीकेँ ओते अरैज देलिऐ जे जँ ओ मनुक्खक जिनगी बना स्वतंत्र जिनगी जीबए चाहत तँ अबस्स जीब सकैए।”

बौन भैयाक बात सुनि मेवालालक मन चकभौर लेलकैन। रंग-बिरंगक विचार मनमे जगलैन, मुदा आनठाम मन नहि अँटैक अपन पैछला जिनगीक कठिन मेहनतपर नचलैन। जइसँ अपन श्रमक बर्खाक बून झहरए लगलैन। जइसँ एकाएक मन सीताए लगलैन। सीताइते बिसवासक पन्ना पोनगलैन। बजला-

“बौन भाय, काज छोड़ि गाम जाइक छुट्टी केना होइए?”

मेवालालक विचारमे बौन भैया अपन विचारक संग अपन मुस्कीक मधुर घोर घोरैत बजला-

“मेबा बौआ, एहेन एक्को दिन नइ होइए जइ दिन एकटा-दूटा आदमी गाम दिससँ नइ अबैए। दू जोड़ सीको-पटै आ बाल्टिनो रखने छी। जे काज करए अबैए ओ तँ एते हिम्मत बान्हिये कऽ ने अबैए जे जे काज भेटत से करब।”

आगू बजैक विचार बौन भैयाकेँ पेटेमे रहैन तइ बिच्चेमे मेवालालक मुहसँ खसलैल-

“हँ, से तँ अबिते हएत! गामकेँ के कहए जे जखन परोपट्टेमे आगि लगि गेल अछि तखन लोक भागि-पड़ा केतौ-ने-केतौ ठौर तँ धरबे करत किने...।”

जिनगीक धारक पजरवाहिमे जखन दोसर जिनगी आबि सटै-मिलैए तखन अहिना ने काजक धार बहैए। बौन भैया बजला-

“मेवा बौआ! अहाँ सभ जवान छी, हम जखन बुढ़ोमे एते तनने छी तखन जिनगीक कोनो परवाह नइ करी। गामसँ आएल ओहन-ओहन समांग सभकेँ अपन समांग बुझि अपने संगे ओइ काजपर लऽ जाइ छी, जैठाम पाँच भार पानि देबा अछि तैठाम तीन भार अपने देलौं आ दू भार ओकरोसँ दिएलौं।”

बौन भैयाक विचार सुनि मेवालालक मुहसँ निकलल- “वाह! वाह

भाय वाह..!”

स्वाभिमानी जिनगीक नीव ठाढ़ करैत बौन भैया बजला-

“ऐसँ अपनो ने लाभ होइए। जखन जीबै-जोकर उपारजन लोक अपने कऽ लेत तखन दोसराक मुँहतक्की किए करत। जहिया गाम जाइ छी, तहिया अपन काज केकरो करैले कहि दइ छिऐ। सात-आठ गोरे हम सभ यएह काज करै छी।”

मेवालाल आ बौन भैयाक गप-सप्पक आवाजसँ धरमशल्लामे सुतल तेसरो-चारिमोक नीन टुटए लगल। नीन टुटिते मनमे लाज उठै जे गामसँ समांग आएल छैथ, ओ बैसल गप-सप्प करै छैथ आ अपने दुखताह जकाँ पड़ल छी..!

एका-एकी केते गोरे उठि कऽ बैस गप-सप्प सुनए लगला। बौन भैयाक काजक विराम देखि बचनू बाजल-

“बौन भैया, मेवालाल नव लोक छैथ। तँए नीक हेतैन जे जैठाम दू-चारि गोरेक काज अछि, तइमे करैथ। नव लोक-ले रिक्सा चलाएब नीक नइ हएत।”

बिच्चेमे दुखमोचन बाजल-

“भाय, कलकत्ता छी कि ठठ्ठा! रोडपर काज छिड़ियाएल अछि!”

सुबहक छह बजि गेल। सुर्ज सेहो उगि गेला। चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरि अपन-अपन काज दिस बढ़ए लगल।

गामक समाजक अपेक्षा बजारू समाजक बेवहार किछु अगुआएल बेवहार आबिये गेल अछि। गाममे अखनो एक जूम खैनी आकि एकटा बीड़ीसँ आदर-सत्कार होइए। जे एक दिस युगानुकूल हँसैक बात भेल तँ दोसर दिस कम-सँ-कम साधनसँ समाजक सम्बन्ध बना रखबो भेल। खाएर जे भेल से भेल। मुदा गामक वा परिवारक बीच जहिया सोल्होअना मिथिलाक माटि-पानिक गन्ध रग-रगमे समाएल छल, तहिया छल मुदा अखन जे एक्के परिवार वा एक्के गाममे, देशक कोन बात जे दुनियाँ हवा-पानि–खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पहिरब-ओढ़ब इत्यादिक संग भाषा-बोली तकमे–पहुँचिये गेल अछि तैठाम जँ बहुत कठिन नहि तँ थोड़-थाड़

असोकर्ज तँ भइये गेल अछि। हेबो किए ने करत। विचारणीय अछि। आइ कलकत्ताक परिवेश, जेकरा हम सभ गंगा-ब्रह्मपुत्रक बीच एक मैदानी इलाकामे बसल बुझै छी, जहिना अपना सभकेँ उत्तर[15]सँ सैंकड़ो नदी दच्छिन मुहेँ बहैए, जइसँ बंगालो आ बिहारोक उपजावारी एकरंगाह अछिए। ओना, अक्षांसक दूरी रहने अपना सभसँ बेसी बरखा कलकत्तामे होइ छइ। मुदा भूगोलसँ हटि जखन भाषा आ संस्कृति दिस बढ़ै छी तखन जरूर देखै छी जे मिथिलाक्षर आ बंगलाक्षरमे जेते समता अछि, तेकर कनौसियो भरि विषमता नहि अछि। दू-चारि अक्षर मात्र अछि। तैठाम की हम बंगला साहित्यक सोझामे अपनाकेँ ठाढ़ राखि सकै छी? भाषाक प्रति जे अनुराग बंगालीमे अछि, की ओ अनुराग मिथिलोक मैथिलीमे अछि? बंगालीक बेवहारिक पक्ष ई अछि जे ओ सभ अपने राज्य भरि नहि, आनो-आनो राज्य वा आनो-आनो देशमे जखने एक दोसरकेँ बुझि जेता जे बंगलाभाषी छैथ कि लगले ओइ भाषाकेँ छोड़ि अपन भाषामे बाजए लगै छैथ। शिक्षाक अनिवार्य रूपमे अपन भाषा अछि। तैठाम की हमरा सबहक विचारमे एहेन नइ आबि गेल अछि जे अपन परिवारोमे आन भाषा बजैमे खुशी नइ होइए।

बजारू समाजक दैनंदिनक जिनगीमे चाह-पान आबिये गेल अछि तँए अपन-अपन सामाजिक सम्बन्ध बनबैत अपना-अपनीकेँ सभ चाह-पान-जलखैक ढेर मेवालालो आ रविनाथोक आगूमे लगा देलक। सभ मिलि सभ किछु सठबैत अपन-अपन कजमुँह भेल।

रविनाथकेँ दूर जाएब छेलै, विदा भऽ गेल। काजक जोग करैत दुखमोचन मेवालालकेँ कहलकैन-

“बौआ! अहाँ जवान छी से हमहूँ देखै छी, मुदा काजक अनाड़ी छी तँए अखन भारी काज दिस नहि बढ़ि, हल्लुक काज पहिने करू।”

ओना, मेवालालक अभियंतरमे भेलैन जे जखन काज करए एलौं, तखन हल्लुक-भारीक विचार की करब। जखन जरैत परिवार-ले पानिक ओरियानमे घर छोड़ि आबि गेल छी, तखन समतल पोखैर की आ पतालमे

---

[15] नेपालक उत्तरो आ नेपालो पहाड़सँ

पानि जोगबैबला कुआँ की। मुदा विचारकेँ मनेमे रखि मेवालाल आगू देखए लगला जे हल्लुक-भारीक विचार दुखमोचनक मनमे जे एलैन, तइ पाछू कारण की अछि।

मेवालालक रंग-रूप देखि दुखमोचन बुझि गेला जे हमरा विचारसँ मेवालाल झुझुआ रहला अछि। ओना, अनभुआरकेँ झुझुएबो सोभाविक अछिए...।

अपन विचारक स्पष्टीकरण करैत दुखमोचन बजला- “मेवा बौआ, ऐठामक किछु गोरे चौका-बरतनक काज माने कोठीवारीक काज करैए। आ किछु गोरे डेरे-डेरे पानि पहुँचबैए, किछु गोरे हथरिक्सा चलबैए, किछु गोरे बोरा उघैए। अहाँ-ले जेहने भारी काज भेल कुनिटलिया बोरा उघब तेहने भेल रिक्सा चलाएब।”

ओना, दुखमोचनक विचारसँ मेवालालक मनमे थोड़ेक ठमकाउ एलैन। मुदा कमाइक नाओंपर जेहेन उध चढ़ि गेल छैन तेहने अधि-आएल आँखि उठा दुखमोचन दिस ताकए लगला।

मेवालालकेँ देखि दुखमोचन बजला- “बौआ, अखन अहाँकेँ किछु देखल-सुनल आ जानल-पहचानल नइ अछि तँए रिक्सा केना चलाएब। तहिना कुनिटलिया बोरा उघैक अभ्यास जेकरा नइ छै ओकरा-ले, उठबैक कोन बात जे सम्हारबो कठिन अछि।”

दुखमोचनक विचार सुनि मेवालालक मन फेर ठमकलैन। ठमैकते बजला- “भैया, ऐठामक तँ जानकार लोक अहीं सब छी, जेना कहब तहिना करब ने नीक हएत।”

मेवालालक सहटल मनक समतल विचार सुनि दुखमोचन सहमैत बजला- “बौआ, धीरे-धीरे देखैत-सुनैत करैत-धरैत अपने सभ किछु बुझि जाएब। जखन अपने सब किछु बुझए लगब, तखन अपना मने जे नीक बुझि पड़त से करब आ जे नीक नइ बुझि पड़त तेकरा छोड़ि देबइ।”

दुखमोचनक विचार सुनि मेवालालक विचारमे उठलैन जे घर रही कि बाहर आकि दुनियाँक कोनो कोणमे रही, पहिने लोक बइसैक ओरियान करैए तेकर पछाइत सुतैक...।

बिना किछु बजने मेवालाल अपन झोराकेँ जहिना आन-आन सभ देवालक काँटीमे लटका रखने छल तहिना देवालक काँटीमे लटका काज करैले तैयार भेला। काजोक गड़ भेटलैन। मुनिलालक संग पचीस किलो समानबला बोरीकेँ एक गोदामसँ दोसर गोदाम लऽ जा सरिया कऽ रखैक छल।

दिन भरि काज केलाक पछाइत साँझमे मेवालालकेँ मजदूरी भेट गेलैन। होटलक खर्च बुझले रहैन। तैसंग मनो गवाही देलकैन जे जखन तक काज नइ लगल छल तखन तक दोसरक आशा उचित रहए, मुदा जखन अपने काज लगि गेल, अपन उपार्जन हुअ लगल तखन अपन कमाएलपर ने जीवन ठाढ़ करब नीक।

ओना, डेरापर माने धरमशल्लामे आन-आन सभ कियो आग्रह करबे केलकैन जे रौतुका भोजन हमरा दिससँ रहत। मुदा सबहक आग्रहकेँ मनाही करैत मेवालाल बजला- "अहीं सभ जेकाँ हमहूँ जखन कमाए लगलौं तखन अहाँ सबहक खाएब उचित हएत? अहूँ सबकेँ परिवार अछि, बाल-बच्चा अछि...।"

रौतुका खेनाइसँ पहिने आने दिन जकाँ धरमशल्लामे ढोलको-झालि बजए लगल आ ताशक संग गाम-घरसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक गप-सप्प सेहो चलए लगल। एक घर[16] आ एकरंगाह जिनगी[17] रहितो अनेको समाजमे विभाजित अछिए। कियो ताशक जुआमे अपन कमेलहो गमा रहल अछि तँ कियो मेहनतक कमाइक संग जुओसँ कमा रहल अछि। तही बीच किछु गोरे एहनो तँ छथिये जे साज-बाजक संग भगवत-भजन सेहो कइये रहला अछि। दुनियाँमे दिन-दिनक घटना सेहो घटिये रहल अछि। तहूमे छोट घटनासँ लऽ कऽ पैघ धरि घटिते अछि। रंग-रंग देखनिहारो-सुननिहार अछिए। लोक अपना मुँहमे ताला थोड़े लगा लेत आकि काने केना मुइन लेत। सेहो तँ चलिते रहत। यएह ने भेल दुनियाँक तमाशा जइमे सभ केनिहारो छी आ देखनिहारो।

---

[16] धरमशल्ला

[17] श्रमिक वर्ग

अपनाकेँ सभसँ भिन्न बुझि मेवालाल जाजीम बिछा बाँहिक सिरमा बना अपन दुनियाँ देखए लगला। ओना, आन-आन सभ ई बुझैत जे भरि दिनक खटनीमे मेवालाल थाकि गेल अछि। थकबो केना ने करत, हम सभ अभ्यस्त[18] छी तँए बिना किछु टीका टिप्पणी केने सभ अपन-अपन धुनिमे धुनकी चलबै पाछू लगल छी मुदा...।

मने-मन मेवालाल औझुका उपार्जनक हिसाब जोड़ए लगला। एक साए बोरा एक-गोदामसँ दोसर गोदाममे उघि-उघि रखलौं। तइमे जे मजदूरी भेल ओ गामक तीन दिनक बोइन भेल। माने एक आदमीक तीन दिनक कमाइ वा तीन आदमीक एक दिनक कमाइ भेल। ऐमे सँ जँ एकबर माने एक बट्टे तीनमे अपन जिनगी चलाबी आ दू तिहाइ जँ परिवारमे दिऐ, तखन एक रौदी कि साइयो रौदी हँसैत-खेलैत काटि लेब...। एकाएक मेवालालक अपन बाँहिक शक्तिमे जेना गामसँ आरो बेसी बढ़ोत्तरी एलैन।

गाम आ शहर खाली दू शब्द नइ छी। जे गामक माने अभाव ग्रस्त ग्रामीण क्षेत्रक एक अंग भेल, आ बजारक माने पक्की सड़क आ ईंटाक घर भेल। तहूमे कलकत्ता शहरे नहि, देशक महानगर सेहो छी, शहरोमे अगुआएल शहर...।

अपना सबहक गाम, जेकरा मिथिलाक गाम सेहो कहै छिऐ, तेकर भोगौलिक बनाबट की अछि? गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदानी भागे ने छी। जे समुद्रसँ दूर अछि, मुदा पहाड़ तँ सटले अछि। जहिना उत्तरी सिमानपर माने नागालेण्ड-अरूणाचल प्रदेशक पूर्वी इलाकासँ लऽ कऽ कश्मीरक पच्छिमी इलाका तक, पहाड़ घेरने अछि। जेकर लम्बाइ तीन हजार किलोमीटरसँ बेसीए हएत। तहिना छोट-पैघ पहाड़ मिलि जे घोदा-माली बैसल अछि तेकर चौड़ाइयो दू साए-सँ अढ़ाइ साए किलोमीटर सेहो अछिए। ऊँच-ऊँच पहाड़, जइमे बर्फक सृजन सेहो होइते अछि, तैसंग एते बिराट क्षेत्रमे जे मेघसँ बरखो होइए, ओहो जमि कऽ एकत्रित भऽ निच्चेँ मुहेँ ससरैए। तँए छोट-पैघ साइयो नदी उत्तरो-मुहेँ आ दच्छिनो मुहेँ बहिते अछि। पहाड़क बीच जे खाली जगह सभ अछि, ओइ होइत निकलैए।

[18] अनुभवी

तहिना केतौ-केतौ जे चारू भागसँ घेराएल अछि, ओइ बीचमे जे क्षेत्र छै, ओ झील बनि गेल अछि। अपना सबहक–माने मिथिलावासी कहियौ आकि बिहारवासीक–जे गाम-घर अछि, ओ अनेको किस्मक समतल माटिक छी। जैबीच होइत अनेको छोट-पैघ नदी उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ बहि रहल अछि। ओना, गंगा नदी सेहो ओही–उतरवरिया पहाड़सँ निकलल अछि, मुदा ओ उतरांचलमे पहाड़सँ उतैर समतल भूमि होइत उत्तरप्रदेश पार करैत, दच्छिन मुहसँ पूबक रूखि पकैड़ बिहारमे पूबे-पच्छिमे भऽ गेल अछि, तँए ओइ बीचक क्षेत्रक जे कोनो धार-धुर अछि ओ एक-दोसरमे मिलैत, गंगामे मिलि समा जाइए, जे बिहार टपैत, बंगालमे प्रवेश करैत सागरमे मिलैए।

बंगालक खाड़ीमे जे मौनसून बनैए ओ खाड़ीसँ उठि उत्तरो आ पच्छिमो, हवाक रूखिक अनुकूल बढ़ैए जइसँ बरखा होइए। ओना, अपना सभसँ बेसी बरखा पूर्बी इलाकामे होइ छै, किएक तँ खाड़ीसँ उठल हवाकेँ पहाड़ो आ पहाड़ी क्षेत्रक जंगलो-झाड़ रोकैए। वएह मौनसून पच्छिम मुहेँ अबैत अपना सभ दिस बरिसैए। जेना-जेना पूबसँ पच्छिम मुहेँ होइए तेना-तेना बरखा पतराइत जाइए आ उत्तर प्रदेशक पच्छिमी भाग जाइत-जाइत आरो पतरा जाइए।

एक तँ बरखा, दोसर पहाड़ी नदीक बाढ़िक एते जबरदस प्रकोप अछि, जे गामक-गाम कटि कऽ धारो बनैए आ बाढ़िक प्रकोपसँ क्षति-ग्रस्त सेहो होइए। मिथिलांचलक किसानी जिनगी बाढ़ि-रौदीसँ साले-साल प्रभवित होइते अछि। जइसँ गामक स्थिति आगू मुहेँ नहि बढ़ि पाछुए मुहेँ ससैर रहल अछि। जइसँ सभ किछु–माने मनुक्खसँ माल-मवेशीक संग खेती-पथारी तक–दूभर बनियेँ गेल अछि। तँए लोकक पड़ाइन भऽ रहल अछि। जइसँ सभ तरहेँ गाम निच्चाँ मुहेँ ससैर रहल अछि। माने मिथिलाक मानवीय सम्पदासँ लऽ कऽ प्राकृतिक सम्पदा धरि हहैर रहल अछि। ओना, पहिनेसँ सोल्होअना निच्चेँ मुहेँ भेल जाइ छी सेहो बात नहियेँ अछि, किछु आगूओ मुहेँ तँ ससरबे केलौं हेन। मुदा देशकेँ स्वतंत्र भेला पछातियो जे 'स्वतंत्र देशक' जन-गणकेँ हेबा चाही, स्वतंत्र देशक जे प्रगति हेबा चाही से नइ भेल। तीन पीढ़ी बीत गेल, मुदा हम केतए ठाढ़ छी से तँ अपनेसँ ने

देखब।

कलकत्ता सन महानगरक बीच मेवालाल ओछाइनपर पड़ल-पड़ल अपन जिनगीक विचार करए लगला। मनमे उठलैन गामक एकचलिया जीवन। जैठाम लोक मात्र खेती आश्रित छैथ, जैठाम बाढ़ि-रौदीक भारी प्रकोप छै, दोसर कोनो उपार्जनक साधन नहि, तैठाम कलकत्ता सन महानगरमे लाखो रंगक उपार्जनक साधन तँ बनियेँ गेल अछि। बाढ़िसँ मास-मास दिन घेराएल वा रौदीसँ छह-छह मास, साल-साल भरिक संग अनेको साल धरि लोक प्रभावित होइ छैथ, तैठामक जीवन आ दिनानुदिनक क्रिया-कलापमे अन्तर आबिये जाइए...।

मेवालालक मनमे सेहो बिसवास जगलैन जे सभ दिन उपार्जनक उपाय भऽ जाएत तखन जिनगी बिताएब असान भऽ जाएत। तँए, आब आगूओ दिन कलकत्तेमे रहब। जखन देखब जे गामक परिवारो सोल्होअना अही ठामक भरोसे जीब रहल अछि तखन परिवारोकेँ एतै लऽ आनब। दुनियाँमे केतौ कोनो कोणमे किए ने रही मुदा जिनगी चलैक जे धारा अछि ओ तँ ओही गतिये ने चलत।

नअ बाजि गेल। गप-सप्पक क्रम सेहो टुटल, कीर्तनो-भजन उसरल आ ताशो बिसरजित भेल। सभ अपना-अपनी उठि-उठि कऽ खेनाइ खाइ-ले विदा भेल। मेवालालो ओछाइनकेँ पसरले छोड़ि बौन भैयाक संग विदा भेला। धरमशल्लासँ निकैल सड़कपर अबिते मेवालाल बौन भैयाकेँ पुछलकैन- “बौन भैया, जहिना उजरल-उपटल गाम आगू मुहेँ बढ़ि बजार वा शहर बनैए, जइसँ मनुक्खक जिनगीमे अनेको गुणा उछाल अबैए, तहिना ने अपनो सबहक गाम भऽ सकैए।”

बौन भैया बजला- “अपने सभ गाम जकाँ ने पहिने कलकत्तो छल।”

❑

शब्द संख्या: 2240, तिथि: 15 फरवरी 2018

सात

कलकत्ता एला मेवालालकेँ आइ चारिम सालक पहिल दिन छी, हथरिक्सा चलबैकाल एवरेडी कम्पनीक मैनेजरसँ भेँट भेलैन। भेँट की भेलैन तँ मेवालाल एकटा पसिंजरकेँ डेरा पहुँचा घुमि रहल छला कि मैनेजर अपन डेरासँ निकैल धरमशल्ले विदा भेल रहैथ, जे खाली रिक्सा देखि मेवालालकेँ रोकि ओइपर चढ़ला। किछु दूर आगू बढ़लापर मैनेजर मने-मन ई आँकि नेने छला जे चिमनी[19]मे एहने हड़गर-कठगर आदमी बेसी दिन टिक सकैए। मैनेजर मेवालालकेँ पुछलैन-

“केते काल रिक्सा चलबै छी?”

मेवालाल-

“तेकर कोनो ठीक अछि। गोटे दिन चारि बजे भोरोमे पसिंजर भेट जाइए आ कोनो दिन दस-एगारह बजे रातियोमे।”

मेवालालक विचारमे अपन विचार सोन्हियबैत मैनेजर बजला-

“जँ नियमित काज भेट जाए तँ करब?”

मेवालाल-

“जँ ऐ काजक अनुकूल वेतन भेटत तँ किए ने करब। जखन देह धुनि कमाइ-ले तैयारे छी, माने कबीरदास जकाँ धुनियाँ बनि धुनकी धुनैले तैयारे छी, तखन किए ने करब।”

ओना, बहुराष्ट्रीय कम्पनीक कारोबार छी एवरेडी बैट्री, तँए कर्मचारीकेँ रहैक बेवस्था अपना कैम्पसमे मकान बना नेने अछि। तैसंग अपना कैम्पसेमे छोट-छीन बजार सेहो लगौने अछि। दोकान रहितो जिनगीक आवश्यकताक पूर्ति-जोकर बजार। बिजली, सड़क, पानिक

---

[19] कारखाना भट्ठी

नीक बेवस्था सेहो केने अछिए। कर्मचारीकेँ आन-आन कम्पनी सभसँ दरमहो बेसी दइते अछि...।

मैनेजर बजला-

“जेते अहाँ बारह-चौदह घन्टा खटने कमाइ छी तेकर दोबर अहाँकेँ आठे घन्टाक ड्युटीमे देब।”

काज तँ बिनु देखल छेलैन, मुदा एके सूरे अपन मनकेँ मेवालाल मना नेने छला जे जखन कमाइले एलौं तखन पाथरे तोड़ैक काज किए ने भेटए, मुदा जँ बेसी पाइ भेटत तँ ओहो करैले तैयार छी।

काजकेँ सूहकारैत मेवालाल बजला-

“हँ, करब!”

मेवालालक मुहसँ ‘हँ’ सुनि मैनेजरकेँ अपन गोटी चालैक नीक परिणाम बुझि पड़लैन। बजला-

“खाली दरमहेक बात नइ ने अछि, केते रंगक आरो सुविधा सभ भेटत। तइमे सभसँ पैघ अछि जे अहाँ जखन सेवा मुक्त हएब तखनो पेंशन भेटत आ तइसँ पहिनौं जँ बेटा काज करै-जोकर हएत तँ ओकरो काज देल जाएत।”

अपन भूत-भविस देखैत मेवालाल बजला-

“कहियासँ काज देब?”

जीतल पाशा देखि मैनेजर बजला-

“जँ अहाँ आइये संगे चलब ते काल्हियेसँ काज भऽ जाएत। रहै-तहैक बेवस्था सेहो अछिए।”

मेवालालक मनमे उठलैन जे अखुनका जुगमे नोकरी सोनाक चिड़िया बनि गेल अछि, तँए हाथसँ पकड़ल चिड़ैकेँ जँ छोड़ि उड़ा देब, ई सोलहन्नी बेकूफी हएत..!

बजला-

“हम ते थोड़बे दिनसँ कलकत्तामे रहै छी तँए सब कुछ देखलो-सुनल नहियेँ अछि। आ ने...।”

मेवालालक अन्तिम बात पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे मैनेजर बजला-

“हराइ-भोथियाइक जँ डर होइए ते संगे चलू। अपन जे समान सभ अछि ओ लऽ लिअ।”

मेवालाल-

“अहाँकेँ केते समय अपना काजमे लागत?”

मैनेजर-

“बस, पनरह-सँ-बीस मिनटक काज अछि। संगे दुनू गोरे चलू, हमहूँ अपन काज सम्हारैत अहाँक डेरापर पहुँचब। अहूँ अपन रिक्साकेँ भाड़ाक संग आपस दऽ देबै आ अपन जे समान अछि से सभ लऽ लेब आ दोसर रिक्सा पकैड़ विदा हएब।”

मैनेजरक विचार मेवालालकेँ जँचलैन। तँए, मैनेजरक विचारमे अपन विचार जोड़ैत मेवालाल बजला-

“बड़बढ़ियाँ..!”

दिनक दू बजेक समय छल, तँए मेवालालकेँ जे चिन्हरबा लोक रहैन, ओ सभ डेरासँ बाहर काज करए गेल छला। खाली दोकानदार सभ अपन-अपन दोकानपर छला।

झोरामे अपन सभ समान लऽ मेवालाल चाहक दोकानदारकेँ कहि देलखिन जे हम दोसर ठाँ काज करए जा रहल छी, जँ कियो खोज करैथ तँ कहि देबैन।

मैनेजरक संग मेवालाल कारखानाक कोलनीमे पहुँचल। एकटा कोठरी रहैक देखा मैनेजर कहलकैन-

“काल्हि आठ बजेसँ काजमे आबि जाएब।”

कौल्हुका आठ बजेक समय कहि मैनेजर चलि गेला।

पँच-मंजिला मकानक तेसर मंजिलमे मेवालालकेँ डेरा भेटलैन। सभ सुविधा, माने पानि-बिजलीसँ सजल कोठरी। ओना, आन-आन कोठरीमे सेहो लोक सभ छल मुदा मेवालालक कियो परिचित नहि, तँए भेँट-घाँटक कोनो बाते नहि। अपन कोठरीमे झोरा रखि पहिने नहेबाक विचार केलैन।

नहा कऽ कोठरीसँ निकैल एकटा दोकानसँ जलखै कीनि आनि कोठरीमे बैस खेलैन। खेला पछाइत चौकीक ओछाइनपर पड़ि रहला। पड़िते अपन चारि सालक बीतल जिनगीपर नजैर गेलैन।

गामक परोपट्टामे जे रौदी छल ओ पैछले साल समाप्त भऽ गेल। ओना, चारि सालक बीच मेवालाल चारि बेर मास-मास दिन-ले गामो आएल छला। तैबीच एकटा बेटी सेहो भेलैन। अपन अतीतक जे स्वावलम्बी जीवन छेलैन, माने मेवालालक अपन पनरहो कट्ठाक जे खेती-बाड़ी छेलैन, ओइ-ले मेहनतो आ पूजीयोक जरूरत छेलैन्हे। तहूमे खेती-ले सभसँ पहिने पानिक बेवस्था करब आरो जरूरी छेलैन्हे, किएक तँ जहिना बोरिंग मरने भऽ गेल छैन तहिना राखल-राखल दमकलो भइये गेल छैन। तैसंग लोनपर लेल बोरिंग-दमकलक सूइद सहित मूर सेहो दोबरोसँ बेसी भऽ गेल छैन।

मेवालालक मनमे उठलैन- खेती-ले पानिक बेवस्थाक संग बैंकक लोन चुकाएब जरूरी अछि। जँ से नइ चुकाएब तँ जेहो खेत अछि सेहो नीलाम भऽ जाएत। अखन धरि जे कमेलौं तइसँ कहुना परिवारकेँ जीवित रखलौं। रौदी भेने गामक खेतोक मूल्य टुटि गेल। जे खेत तीस हजार रुपैए कट्ठा छल ओ दस-बारह हजारपर चलि आएल। तहूमे बेचबाल बेसी, लेबाल कम। किए तँ नोकरी-चाकरी करैबला बहरबैया कमा-खटा बाहरेमे घर बना जखन गामकेँ छोड़ि देलक तखन गामक खेतसँ ओकरा कोन मतलब। किछु ओहन लोक अछि जे सीजिनल काज करैबला अछि, जेना-धनरोपी, धनकटनी करैले माने खाली सिजन भरिक काज करैले पंजाब चलि जाइए आ बाँकी समय गामेमे रहैए, जँ ओकरा बाड़ी-घराड़ी नइ छै, ते ओ सभ जे घराड़ी कीनैए, ओ थोड़ेक महग जरूर भेल अछि। बाँकी जे बाधक जमीन अछि, ओकर दाम अदहोसँ निच्चाँ आबि गेल अछि। एक तँ रुपैआक भेल्यू कमि गेल तैपर सँ खेतक दरो कमि गेने गाम-घरक पूजी जेतबो छल तेकर तिहाइ-चौथाइ निच्चाँ उतैर गेल।

ओना, कलकत्तामे चारि सालक बीच मेवालाल अनेको रंगक काजक अभ्यस्त भइये गेल छला। माने ई जे समय-समयपर रिक्सो चलबै छला, बोरो उघै छला आ डेरे-डेरे पानियोँ भरै छला इत्यादि-इत्यादि जे

काज गौंआँ-घरूआ करै छेलैन से सभ काज मेवालाल करै छला। महानगर कलकत्ता छीहे, तँए सभ कोटिक काजोक भरमार अछिए। ओना, देशक जे आन-आन महानगर अछि ओइ अनुपातमे कलकत्ता गरीब-मजदूरक लेल नीक अछिए। तेकर कारण ईहो जे खाइ-पीबैक समानक सस्ती छइ। जेतेक कम खर्चमे लोक कलकत्तामे जीवन-बसर कऽ सकैए ओतेक कम खर्चमे आन महानगरमे गुंजाइश करब असम्भव...।

जाधैर मेवालाल गाममे रहै छला ताधैर एक प्रतिष्ठित सीमान्त किसानक रूपमे छला। विकसित नजैर[20] रहने, तहूमे अपन खेतीक एक साधन बनौने, ओहन किसानक रूपमे अपन जीवन-यापन करै छला जइसँ परिवारक सभकेँ समुचित काजो छेलैन आ समुचित उपार्जन सेहो होइत रहैन। जइसँ समुचित जिनगी सेहो चलै छेलैन। माइयो आ पत्नियोँ घर-अँगनाक काज सम्हारि खुट्टापर जे दूटा दुधारू गाए छेलैन तेकर निमरजना कऽ लइ छेली। जेकर दूधक संग ओतेक गोबरो भऽ जाइ छेलैन जइसँ खेतो उर्वर बनल रहै छेलैन आ जरनाक अभाव सेहो कहियो नइ होइ छेलैन। गाममे एहेन किसान मेवेलालटा नहि, आनो-आन केतेको छल। मुदा रौदी भेने जहिना मेवालालक परिवार ढहलैन तहिना आनो-आन केतेको परिवार ढहबे कएल।

❑

शब्द संख्या: 1026, तिथि: 18 फरवरी 2018

[20] वैज्ञानिक दृष्टि

आठ

एक रफ्तारमे आइ मेवालाल पचीस बर्खसँ एवरेडी बैट्रीक कारखानामे नोकरी करैत आबि रहल छैथ। बहुराष्ट्रीय कम्पनी रहने दरमहो नीक छैन्हे। तीन सालपर महगाइ-भत्ताक रूपमे आरो बढ़िते गेलैन। दू साल आरो नोकरी छैन।

पचीस सालक नोकरीक बीच मेवालाल पारिवारिक बहुतो काज केलैन। बोरिंग-दमकलक जे लोन रहैन सेहो सठा लेलैन। दमकल बेच, खेत बँटाइ लगा लेला। बेटीक बिआह सेहो कऽ लेलैन। बेटी सासुर बसए लगलैन। जेकरा दूटा सन्तानो अछि।

मेवालालकेँ बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे नोकरी भेला उत्तर पाँच सालक पछाइत माइयो मरि गेलखिन। जइमे नीक किरियो-करम केलैन आ भोजो बढ़ियाँ। तहिना बेटीक बिआह सेहो खूब धुमधामसँ केने छला। माएकेँ मरि गेने आ बेटीक बिआह भेने मेवालालक पत्नी असगरे गाममे रहि गेलखिन। अपने मेवालाल कलकत्तामे आ पत्नी असगरे गाममे रहए लगलैन।

बेटी बिआहक तीन सालक पछाइत दुनू परानीमे विचार केलाह जे एक तँ परिवारमे दुइये गोरे छी, तहुमे दुनू गोरे दू ठाम, एक गोरे गाममे आ दोसर गोरे कलकत्तामे। तइसँ नीक जे दुनू गोरे किए ने एकेठाम रही...। सएह केलैन। पत्नियोँकेँ मेवालाल कलकते लऽ एला। एकटा बेटीक पछाइत दोसर कोनो सन्तान नइ भेलैन। ओना, आशा-आशीमे दुनू परानीक उमेर पचास बर्खसँ ऊपर चढ़िये गेलैन। तथाइप डॉक्टरसँ लऽ कऽ ओझा-गुनी तकसँ बहुतो बेर देखौलौन मुदा अन्तो-अन्त दोसर सन्तान नहियेँ भेलैन।

ओना, गाममे चारि कोठरीक पक्का मकान सेहो मेवालाल बना नेने छला, मुदा पत्नीकेँ संग रखने मकानमे ताला लगबए पड़लैन। सालमे एकबेर दुनू परानी गाम अबै छला आ मास दिन तक रहै छला। तही बीच

बेटियो-नातिकेँ अपना ऐठाम लऽ अबै छला आ कलकत्ता जाइसँ दू-तीन दिन पहिने, सासुर पठा दइ छेलखिन। माने बेटी सासुर चलि जाइ छेलैन। ओना, अखनो धरि दुनू परानीक मनमे गामक प्रति सिनेह छैन्हे जइसँ ने कलकत्तामे आन नोकरिहारा जकाँ घरे बनौलैन आ ने रहैक विचारे केलैन। नीक दरमाहा रहने मेवालाल गाममे दू बीघा खेतो अरजलैन।

बीस साल नोकरी बीतला पछाइत मेवालालकेँ चिमनी-आगिक गरमी आ धुआँसँ सम्बन्धित रंग-रंगक बेमारी सेहो उपकए लगलैन। ओना, कम्पनीक भीतर अपन डॉक्टर अछि, जइसँ कनियोँ किछु भेने कर्मचारीकेँ इलाज भइये जाइए। इलाज की होइए जे तत्खनात् रोगकेँ दबा देल जाइए। आन-आन बेमारी तँ मेबालालकेँ दबल रहलैन मुदा कानक बिमारी नइ दबलैन। जइसँ सुनैमे कमी आबि गेल छेलैन। माने जेना पहिने सुनै छला तइसँ कम आब सुनै छैथ। ओना, जे काज करैत आबि रहल छैथ ओइमे कानक कम सुनबसँ कोनो खास बाधा नहियेँ पहुँचैए।

एक दिस नीक दरमाहा, दोसर दिस छोट परिवार रहने खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कपड़ो-लत्ता आ भोगो-विलासक वस्तु-जातसँ मेवालालक डेरो भरिये गेल छैन। जाबे तक असगरे मेवालाल रहै छला ताबे तक सिंगिल बेडक छोट डेरा छेलैन मुदा जखन परिवार संगमे रहए लगलैन तखन डेरो नमहर भेटलैन। माने दूटा रहैक कोठरीक संग कीचेन-बाथ सभ भेटलैन।

एवरेडी बैट्री कम्पनीक एरियाक बगलेमे बंगालीक महल्ला अछि। सुनीलपाल, जे ओही महल्लामे रहै छैथ, जिनका अपन दू-मंजिला मकानो छैन आ ओही कम्पनीमे नोकरी सेहो करै छैथ। ऑफिसमे कलर्क छैथ। सुनीलपालसँ मेवालालकेँ दोस्ती भऽ गेल छेलैन। जहिना सुनीलपाल मेवालालक डेरापर अबै-जाइ छला तहिना मेवालाल सेहो सुनीलपालक ऐठाम जाइ-अबै छला। ओना, सुनीलपाल नीक पढ़ल-लिखल छैथ, माने ग्रेजुएट छैथ, मुदा मेवालाल साधारण पढ़ल-लिखल, तथाइप एक कम्पनीमे कार्यरत रहने दुनूक बीच दोस्ती भेलैन।

सुनीलपालकेँ दूटा बेटा, दुनू इंजीनियरिंग पढ़ि अमेरिकामे नोकरी करैत अछि आ सुनीलपाल अपने दुनू परानी कलकत्तामे रहै छैथ। एक

दिन दुनू परानी–सुनीलपाल बजार गेला, रस्तेमे पत्नीकेँ ट्रकक ठोकर लगि गेलैन, जइसँ ओहीठाम हुनकर मृत्यु भऽ गेलैन। ओना, उमेर पचास बर्खसँ ऊपर भइये गेल छेलैन। पत्नीकेँ मुइला पछाइत सुनीलपाल असगरे रहि गेला।

ओना, सुनीलोपालकेँ आ मेवोलालक आबा-जाही, एक-दोसरक ऐठाम दोस्ती भेला पछातियेसँ शुरू भेल छल। अपना ऐठामक रीति-रेबाजमे माने मिथिलांचलमे जहिना खाइयो-पीबैक चलैन अछि आ पाबैनो-तिहार मनबैक चलैन अछि तहिना बंगालोमे अछिए। मुदा संख्यामे जेते अपना ऐठाम अछि, ओतेक बंगालमे नहि। एकर माने ई नइ जे बंगालमे नहि अछि। अपने ऐठाम जकाँ सभ-पाबनिक विधो-बेवहार आ खेबो-पीबोक चलैनमे किछु-ने-किछु अन्तर अछिए। जहिना पाबैन-तिहार सभ मौसमक अनुकूल अछि तहिना खेबो-पीबोक चलैन सेहो ओही अनुकूल अछि। अपना ऐठामक जलवायु आ बंगालक जलवायुमे अन्तर नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। किछु-ने-किछु अन्तर अछिए जइसँ खेबो-पीबो आ खेतियो-बाड़ीमे अन्तर अछिए। उपजावारी मौसमक अनुकूल होइए। माने जैठाम बरखा-बाढ़ि बेसी अछि तैठाम खेतमे पानिक जमाव रहने पनिसहु फसिल बेसी होइए आ जैठाम कम बरखा होइए तैठाम रौदसहु फसिल बेसी होइए। ओना, कम पानिक वा बिनु पानिक उपजावारी होइते अछि।

अपना ऐठामक रीति-रेबाजमे बेसी पाबैन आ बेसी रंगक खेनाइयो-पीनाइक चलैन रहने मेवालालक ऐठाम बेसी पाबैन-तिहार मनौल जाइत। जाबे मेवालाल असगरे रहै छला ताबे विधिवत पाबैन कम-सँ-कम मनबै छला आ जखन परिवार रहए लगलैन तखन वृहत् रूपमे मनबए लगला।

मेवालालकेँ सुनीलपालसँ दोस्ती रहने एते तँ लाभ छेलैन्हे जे ऑफिसक काजमे कहियो कोनो बाधा उपस्थित नइ होइ छेलैन। प्राइवेट कम्पनीमे सरकारी काज जकाँ बेसी उलझनो नहियेँ होइए। एक दिस जहिना सरकारी काजमे अपनासँ ऊपर जेते रहला सबहक आदेशक पालन करए पड़ैए, से बात प्राइवेट कम्पनीमे नहियेँ अछि। नियमित काज आ नियमित वेतनक भूगतान, जइसँ बीचमे ओझरियो नहियेँ जकाँ रहैए।

मनुक्खक एहेन सोभावो तँ अछिए जे असगरे नइ रहए चाहैए। समाजक बीच, समूहक बीच रहए चाहैए।

पाबैन-तिहार मनबै पाछू आर्थिक कारण सेहो काज करिते अछि। जेकरा कम आमदनी रहल, जइसँ दैनंदिनक आवश्यकताक पूर्ति नइ होइक कारणे ओ बहुत पाबैन छोड़ियो दइए। आ जेकरा आर्थिक सम्पन्नता रहल ओ पाबैनकेँ वृहत् रूपमे करिते अछि। आर्थिक सम्पन्नता रहितो मेवालाल करताइतक दुआरे, जाधैर असरगे रहै छला ताधैर पाबनिक वृहत् रूप नहियेँ छेलैन। मुदा गाम आ शहरक दूरीमे ई अन्तर तँ भइये जाइए। जीवन-शैली बदलने किछु पाबैन अबेवहारिक सेहो भइये जाइए, जे स्वत: छुटैत जाइए।

जहियासँ मेवालाल पत्नीकेँ कलकत्तामे रखए लगला तहियासँ पाबैनमे बढ़ोत्तरी भेलैन। बढ़ोत्तरीक कारण दुनू भेलैन। पहिल गाम-घरक रहनिहारि पत्नीकेँ सभ पाबनिक अनुभव छेलैन, दोसर पत्नी रहने करताइत सेहो बढ़ि गेलैन जइसँ पाबनियोँ बढ़ब सोभाविके अछि। तइमे दुनू परानी 'आगू नाथ ने पाछू पगहा' सेहो देखैथ तइसँ खाइयो-पीबैक आ आनो-आन खर्चमे कंजूसी नहियेँ रहैन।

मेवालाल आ सुनीलपालक बीचक सम्बन्ध दिनो-दिन बढ़िते गेल। मेवालालक पत्नी– राधा, जहियासँ कलकत्तामे रहए लगली तहियासँ सुनीलपालक पत्नी– अंतिकापाल,क आबा-जाही सेहो बढ़ि गेलैन। सम्बन्ध बढ़ैक कारणमे दूटा प्रमुख बिन्दु छल। पहिल दुनू छुट्टा छेली, माने घरक भानस-भात छोड़ि दोसर कोनो काज नहि। आ दोसर, मौका-मुसीबतमे एक-दोसरक बीच पाइक लेन-देन सेहो छेलैन। ओना, पाइक लेन-देन मोटा-मोटी एक भग्गुए छल। एकभग्गु ई जे सुनीलपाल परिवारक बीच छला, जइसँ साइयो रंगक खर्च छैलैन जखन कि मेवालाल असगरे छला तँए खर्चो कम छेलैन, जइसँ समटल आमदनीमे समटल खर्च रहने असानीसँ समय कटि जाइ छेलैन। मासे-मास जे मेवालाल गाम रुपैआ पठबैथ ओ दरमाहा उठला पछाइत। प्राइवेट कम्पनी, तँए सरकारी नोकरी जकाँ छह-छह मास आकि साल-साल भरि दरमाहा रूकैबला झमेलो नहियेँ छेलैन। मासे-मास मासक अन्तिम तारीखक प्राते दरमाहा भेट जाइ

छेलैन।

राधा आ अंतिकापालक बीच दिनो-दिन सम्बन्ध बढ़ैत गेल। सम्बन्ध बढ़ैक कारण भेल जे जहिना राधा छुट्टा छेली तहिना अंतिकापाल सेहो छुट्टे छेली। माने ई जे जहिना मेवालाल आठ घन्टा ड्यूटीक नोकरी करै छला तहिना सुनीलपाल सेहो करै छला। भानस-भात छोड़ि ने अंतिकापालकेँ कोनो काज छैलैन आ ने राधाकेँ। ओना, हाट-बजारक काज अंतिकापाल अपने करै छेली जे राधा नइ करै छेली। तेकर कारण छल जे अंतिकापाल पढ़ल-लिखल छेली मुदा राधा से नइ छेली। ओना, उमेरक हिसाबसँ दुनू पचास बर्खसँ ऊपर टपि चुकल छेली, मुदा वौद्धिक रूपमे राधासँ अगुआएल अंतिकापाल छेली।

जखन अंतिकोपाल आ राधो एकठाम होइ छेली, तखन अंतिकापाल अपन दब-दबा सदैत बनौने रहै छेली तँए किताबक संग समाचार-पत्र सबहक जानकारी पढ़ि कऽ अरैज लइ छेली, जे राधाकेँ नहि छेलैन। दोसर कारण दुनूक बीच ईहो छल जे अंतिकापाल बंगालक माटि-पानि परहक उपज छेली जखन कि राधा से नइ छेली। होइतो अहिना छै जेना अपन माटि-पानिपर कुकुड़ो बताह होइए। तैसंग दुनूक बीच ईहो होइ छेलैन जे जखन दुनू घुमै-फिरैले बजार जाइ छेली तखन राधा बौक बनल रहै छेली, किएक तँ ओइठामक बोली-वाणी नइ बुझै छली, जइसँ दोकानो-दौरी आ सड़कपर गाड़ियो-सवारीमे जहिना बजै-भुकैमे बाधा होइ छेलैन तहिना बुझैयो-सुझैमे होइते छेलैन।

ओना, कारखाना चौबीसो घन्टा चलैए जइसँ तीन पालीमे श्रमिक-कर्मचारी काज करै छैथ, मुदा मेवोवालकेँ आ सुनीलोपालक पाली दिनके छेलैन तँए दुनूक एक समयमे ड्यूटी रहने दुनू गोरेक एक्के समय डेरासँ बाहर रहै छला तँए अंतिकापाल आ राधाकेँ डेरोमे गप-सप्प करैक आ बजारो घुमैक एक समय भेट जाइ छेलैन। सिनेमा, सर्कससँ लऽ कऽ बजार घुमब धरि दुनूक सबदिना छेलैन्हे। तँए, अपनो सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबैत गेलैन आ आनो-आन बेकती दुनूकेँ सखी-सहेली बुझए लगलैन।

कलकत्ता गेला पछाइत राधामे एकाएक तेजीसँ उभार एलैन, जइसँ आइ-धरिक जिनगीक बीच जे विचार दबल-झँपाएल छेलैन ओइमे तेजीसँ

दिनो-दिन बढ़ोत्तरी होइत गेलैन। ओना, समुचित वातावरण बच्चेसँ भेटैत रहलासँ आ नइ भेटलासँ दुनूक जिनगीमे दूरी बनियेँ जाइए। जइसँ अधिक उम्र भेला पछातियो सक्कत आ खिच्चा विचारक बीच जीवन चलिते अछि...। यएह राधो आ अंतिकोपालक बीच छेलैन। पछुआएल गाम-घरक राधा वौद्धिक रूपमे अंतिकापालसँ बहुत पाछू चलै छेली।

जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना राधाकेँ विचारसँ लऽ कऽ शारीरिक उभारमे सेहो जागरण भेल। विचार जगने माने विचारमे उभार एने, राधाक आकर्षण दिनो-दिन अंतिकोपाल आ सुनीलोपाल दिस बढ़ए लगलैन। आकर्षण बढ़ैक कारण राधाक वौद्धिक जिज्ञासा जागब भेलैन। जहिना सद्वृत्ति जगने दुर्वृत्ति कमैए आ दुर्वृत्ति जगने सद्वृत्ति सेहो कमिते अछि तहिना...।

ओना, सद्वृत्तिक शक्ति प्रवल अछि, जे दुर्वृत्तिकेँ अपना लग नहि आबए दिअ चाहैए, मुदा ओ ओइठाम होइए जैठाम सद्वृत्ति सभ आफद-आसमानी सहैले तैयार होइए। मुदा जैठाम से नइ होइए तैठाम सद्वृत्तिकेँ दुर्वृत्ति दाबि कऽ छातीपर नइ चढ़ैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

अंतिकोपाल आ सुनीलोपालसँ राधाक सिनेह बढ़ने मेवालालसँ राधाक सिनेह किछु दिन तँ ठमकल रहल मुदा धीरे-धीरे कमए लगलैन। तेकर कारण भेल जे, जे मेवालाल जाबे तक गाममे छला माने कलकत्ता अबैसँ पूर्व, ताबे तक जे स्वाभिमानी जिनगी स्वभिमान विचारक बीच छेलैन ओ कलकत्ता एला पछाइत कमलैन। जे जिनगी मेवालालक गाममे छेलैन–माने किसानी जिनगी–ओ शहरी मजदूर बनने टुटलैन, जइसँ विचारक क्षेत्र बदैल गेलैन। बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे नोकरी भेला पछाइत मेवालालक जिनगी विचारक क्षेत्रेमे समटा गेलैन। माने ई जे आठ घन्टाक चिमनीबला काज रहने देहक थकानक संग मनक थकान सेहो जबरदस्त हुअ लगलैन। एक तँ आठ घन्टाक काजक ड्यूटी, जइले अबैसँ पहिने तैयार होइमे सेहो डेढ़-दू घन्टा समय लगै छेलैन आ ड्यूटी केलाक पछाइत डेरा पहुँचैमे सेहो लगिते छेलैन। तैसंग खेनाइ-पीनाइक जोगार करैमे सेहो समय लगिते छेलैन। काजक संग अरामोक सम्बन्ध अछिए। जँ से नइ हएत तँ शरीरपर पड़बे करत। जखने शरीरपर प्रभाव पड़त तखने मन

प्रभावित हेबे करत। जइसँ शरीरक संग मनो दुखित-दूषित हेबे करैए।

बन्हौटा गाए-महींस जकाँ मेवालालक जिनगी बनि गेल छेलैन। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे मेवालाल तेना बन्हा गेला जे ओकरे पुरबैमे दिन-राति खपि जाइ छेलैन। ओना, पत्नीकेँ कलकत्तामे रखला पछाइत मेवालालकेँ किछु काजमे जेना- खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता साफ-सुथरा करैमे मदैत भेटए लगलैन मुदा गमैया नव लोककेँ बजार पहुँचने साइयो रंगक आवश्यकतो तँ बढ़िये जाइए। तहूमे मेवालाल पुरुखाह डेरा बनौने छला। पुरुखाह डेरा भेल, जइमे असगरे वा दुसगरे पुरुख रहला आ सिनेमा-हिरोइनसँ लऽ कऽ टेलर टेकिन तक भेल। टेलर टेकिन भेल-कपड़ाक ओहन रूपमे नारीकेँ सजाएब जइमे रसिकजनकेँ रस जगैए।

राधाकेँ पहुँचला पछाइत मेवालालकेँ डेराक रूप-रंग बदलए लगलैन। तँए, जेतेक आ जेहेन साज-सामान मेवालाल अपना मने रखने छला तइमे दोबर बढ़ोत्तरी भेलैन। दोबरे कि तहूसँ बेसी तखन भेलैन जखन अंतिकापालक संग राधाक सम्बन्ध बनने हुनका डेरापर सेहो जाए-आबए लगली, तैसंग रंग-रंगक फैशनेबुल दोकान-दौरी सेहो देखली।

ओना, राधापर सुनीलपालक एकटा जबरदस छाप ईहो पड़लैन जे जखन कखनो मेवालालकेँ कोनो तेहेन रोग-वियाधिक आक्रमण भऽ जाइन तँ सुनीलेपाल समांग जकाँ राधाक संग पूरैत संग-संग डॉक्टर ऐठाम जाएबक संग दिन-राति संगे रहब इत्यादि तक-मे संग दिअ लगलैन। तहूमे आब की ओ जुग रहल जे सीता अपन पैरुखपनसँ अपन बरक वरण करती। आब तँ सिनेमा जुग आएल अछि जँ कहीं कौलेजिया लड़कीकेँ बरखा मास रोडपर छत्ताक सहायता पानि होइकाल केलिऐन तँ ओ ओहन सौनक सोहावन दृश्य बनैबते अछि जइमे थैंक्यू-थैंक्यू दुनूक बीच भइये जाइए। ओना, जहिना ओझा-गुनी साइयो रंगक टोना-टापर करैत अपन प्रेमीजनकेँ मुरि लइए–माने बुड़िबक सभकेँ झूठ-फूसक चालिमे फँसा कमेलहा लूटि लइए–तहिना रसिकजन नइ करै छैथ सेहो केना नइ कहल जाएत। साइयो रंगक जादू-टोनाक संग साइयो रंगक टोना-टापर सुनीलपाल नइ करै छैथ, सेहो केना नइ कहल जाएत। तहूमे राधा सन सुनीलपालकेँ दस बर्खक ओहन गोपी भेटलैन, जेहेन अपनो मनमे रहैन।

होइतो अहिना छै जे उमेरक हिसाबसँ भलेँ प्रौढ़ हुअए मुदा जँ वौद्धिक रूपमे बच्चा अछि तँ ओ अधिक भावुक हेबे करैए, जेकरा प्रेमीजन अपन प्रेमक जादूसँ खींच अपना मनमे बसाइये लइए आ सुधिजनक मनमे बैसियो जाइते अछि।

सुनीलपालकेँ दूटा लड़का आ एक लड़की। लड़की जेठ रहने दुनू भाँइसँ पहिने कौलेज देखलक। बिआहमे दान-दहेज समाजक एकटा अनिवार्य नियम बनियेँ गेल अछि। माने बिनु लेन-देनसँ समाजक गाड़ी चलब कठिन भइये गेल अछि। ओना, समाजो जे रंग-रंगक जातिपर ठाढ़ अछि, ओइमे सेहो लेन-देन–दान-दहेजमे अन्तर अछिए, माने किछु जाति-समाजमे एहेन छैथ जइमे एके सिंग-सिंगहौटीक लड़का जँ दोसर जातिमे रहल तँ दुनूक दाम-दिगरमे अन्तर आबिये जाइए। तैसंग लड़कीक रंग-रूप सेहो एकटा कारक तत्त्व छीहे। मुदा कम-बेसी जे हुअ, मोल-जोल नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, अपनो समाजमे एहेन अखनो अछि माने किछु जातिमे, जइमे लड़के पक्षसँ दान-दहेज लड़की पक्षकेँ देल जाइए। मुदा ओ कम अछि। तैसंग अपन समाज आ बंगाली समाजक बीच वैचारिक दूरी सेहो बनियेँ गेल अछि। माने ई जे बंगाली समाजमे जेतेक लड़की बंगालमे स्वेच्छाचारी भेल अछि तेतेक अपना माने मिथिला समाजमे नइ अछि। तइमे समाज आ शासनक दूरी बहुत अछि। अखनो अपना ऐठाम बाल-विवाह अछि, कोट-कचहरीमे ओहन वैवाहिक मुकदमा बहुतयात संख्यामे अछिए जे अल्पवय लड़की लड़काक बीचक अछि। तँए समाजक बीच एहेन समस्यापर गम्भीर चिन्तन-मननक खगता समाजो आ शासनोमे अछिए। खाएर जे अछि...।

सुनीलपालक बेटी- बेबीपाल, कौलेजमे कौमर्स पढ़ैत। वेपारसँ बैंक धरिक कारोबारक बात (विषय) बुझैक जिज्ञासा जगले रहै, एकटा वेपारीक बेटा संग बिनु खरचे-बरचेक बिआह कऽ लेलकैन। ओना, पारिवारिक सम्बन्ध अखनो सुनीलपाल आ मोहन सेठक बीच छैन्हे। सबहक आबा-जाही छैन्हे। बेबीपालकेँ सेहो नैहर-सासुर बनले छइ। सुनीलपालक दुनू बेटा–राकेश आ रंजन–इंजीनियरिंग शिक्षा पेब अमेरिका चलि गेल। ओतइ बिआहो कऽ लेलक आ धिया-पुताकेँ सेहो अमेरिकने

बना लेलक।

पचपन बर्खक अवस्थामे जखन पत्नीक मृत्यु ट्रक दुर्घटनामे भेलैन आ असगरे सुनीलपाल रहि गेला। तेकर बाद राधापर बंशी पथलैन, जे सुतैर गेलैन। सुतैर ई गेलैन जे राधाकेँ अपन पत्नी बना अपना घरमे रखि लेलैन। ओना, बुढ़ाड़ीमे सिनुरदान करब नीक नइ बुझि नइ केलैन। तँए राधा सिनुर नइ करै छैथ सेहो नहियेँ अछि। दुनूक सम्बन्ध सभकेँ बुझल, मुदा तैयो सुनीलपाल राधाकेँ छह मास चोरा कऽ रखलैन।

❑

शब्द संख्या: 2220, तिथि: 22 फरवरी 2018

नअ

राधाकेँ अपन डेरासँ सात दिन गाएब भेला तक मेवालालक मनमे ओहेन शंका नइ भेलैन जेहेन शंकाक विषय छल। तेकर कारण छल जे अनदिनो राधा एक दिन, दू दिनसँ लऽ कऽ तीन-तीन-चरि-चरि दिन तक सुनीलपाल ऐठाम रहि जाइ छेलैन। ओना, मेवालालक मनमे जँ कनी-मनी शंका उठितो छेलैन तँ अपने मन मानि लइ छेलैन जे राधा गाएब नइ भेली दोसक ऐठाम हेती। दोस्तियो तँ दोस्तीए छिऐ किने। जहिना केतए-कहाँक लड़की आ केतए-कहाँक लड़काकेँ एक चुटकी सिनुर तेना जोड़ि दइए जे दुनू रने-बने वौआएबक संकल्प मनमे रोपि वौआइ-ले तैयारेटा नहि होइए बल्कि वौएबो करिते अछि। तहिना दोस्तियो तँ छीहे किने। तहूमे जँ दुनू दोस अपन-अपन कनगुरिया आँगुर जोड़ि गंगा स्नान कऽ लेलक तखन तँ ओ आरो पक्का पकिया भेबे कएल..!

ओना, अपन शंकित मनकेँ मेवालाल बिसबासु बनबै दुआरे, राधाकेँ डेरासँ गाएब भेला पराते भने सुनीलपाल ऐठाम टोह लिअ गेल छला, मुदा राधाक कोनो सुर-पता नहि भेट सकलैन। भेटबो केना करितैन, जैठाम कमजोर शिकार रहत आ जोरगर शिकारी, तैठाम ने शिकार फँसि शिकारीक हाथ लगैए मुदा जैठाम शिकार सिरगर रहत आ शिकारी पनिमरू, तैठाम केना शिकार हाथ लागत? एक तँ ओहुना मेवालालक सामाजिक संस्कार सुनीलपालक सामाजिक संस्कारसँ बेवहारिक रूपमे पछुआएल अछि, तैपर सुनीलपालक अपन माटि-पानि सेहो छिऐहे, केना मेवालालकेँ हाथ लगए दइत। तैसंग सभसँ अनुकूल परिस्थिति ई छल जे मेवालालक राधा मात्र एक दिन पहिने डेरासँ गाएब भेलैन मुदा सुनीलपालक पत्नी तँ साल भरि पहिनहि संग छोड़ि देने छैन। जइसँ सुनीलपालक असगरूआक इतिहासो नमहर बनियेँ गेल छेलैन।

जखने मेवालाल सुनिलपालक डेरापर पहुँचला कि दुनू हाथ पसाइर

सुनीलपाल अरिआति कऽ अपन बैसारक कोठरीमे लऽ जा बैसा अपने हाथे टंकीपर सँ पानि आनि मेवालालक हाथमे गिलास धड़ा देलखिन आ चाहक ओरियान करए अपनेसँ आगू बढ़ला।

मेवालाल मने-मन सोचैत-विचारैत जे मनुक्ख की कोनो नुआँ-वस्त्र सीऐबला सुइया छी जे लगोमे रहत तँ देखबे ने करबै। मनुक्ख तँ आँखि-मुँहबला साढ़े तीन हाथक ठढ़का लोक छी, तँए जानवरसँ एते फरक तँ अछिए। अनभुआर ने बुझैए जे मनुक्खकेँ मात्र दूटा पएर आ दूटा हाथ होइ छै, मुदा साढ़े तीन हाथ छड़गो-ठढ़गर होइत अछि से धियानेपर ने रहै छइ।

दू कप चाहक संग दूटा बिस्कुट नेने सुनीलपाल मेवालालक लगक कुर्सीपर बैस अपना खुशीकेँ भितुरका मनमे खोंसि, उपदेशक बनि मेवालालक आँखि-मे-आँखि मिलबैत बजला-

“दोस, की कहब! जहिया बेबीक माएकेँ ट्रकमे दबैत देखलौं आ पीचरा-पीचरा भेल देखलौं तहियासँ ऐ दुनियाँमे मने ने लगैए। होइए जे बबाजी बनि वृन्दावन चलि जाइ। मुदा तेहेन माया-जाल घरक अछि जे जखने लोक बुझत जे फल्लाँ बबाजी बनि रमि गेल तखने सभसँ पहिने घरे ने हड़ैप लेत। जँ कहियो अपन देश-कोश देखैक मन हएत आ आएब, तखन रहब केतए। तँए घर धेने छी। गुण अछि जे नोकरी करै छी, छुटला पछातियो पेंशन भेटत जइसँ बँकियाहा शेष जिनगी कटैमे असुविधा नइ हएत।”

सुनीलपालक विचार सुनि मेवालालक मनमे जेहो कनी-मनी शंकाक औंकरा पोनगए लगल छेलैन ओहो टुटि कऽ साफ भऽ गेलैन। बजला-

“दोस, अहाँकेँ तेतेक दरमाहा अछि जे भरि दिन छनुओ-मनुओ खाएब तैयो ने घटत।”

मेवालालक बातकेँ बिच्चेसँ लोकैत सुनीलपाल बजला-

“दोस की कहब। बिनु घरनी घर भुतक डेरा! कमेबे करब आ खेनाइ बनौनिहारे ने कियो रहत तखन खाएब केना?”

ओना, मेवालालक मनपर सुनीलपालक विचारसँ दाब पड़ि रहल

छेलैन मुदा तेकरा मेवालाल अनबुझी केलैन। दाब ई पड़ि रहल छेलैन जे 'बिनु घरनीक घर भूतक डेरा' की सुनीलेपाल दोस-टाकेँ हेतैन आ मेवालाल दोसकेँ नहि..!

मुड़ी डोलबैत मेवालाल बजला- "की करबै दोस, सभ भगवानक चकरचालि छिऐन! जेना-जेना हमरा-अहाँकेँ घुमौता तेना-तेना तँ घुमै पड़त किने।"

मुड़ी डोलबैत सुनीलपाल बजला-

"दोस, बुढ़ाड़ियो गाड़ाक घेघ छी। बेटा-पुतोहु खुशीए-सँ छोड़ि दइए, तैपर भगवानो रंग-बिरंगक रोग-बियाधि लाधि दइते छैथ। तखन ते मनुक्खे छी, कोनो-ने-कोनो धरानी जीविये लेब। चाहे हारल मने जीबी आकि मारल मने, मुदा तँए कि कियो देहक पराण खिंच लेत।"

मेवालाल बजला-

"दोस! दुनियाँमे केतौ किछु होउ तइसँ अपना सभकेँ कोन मतलब अछि। कम्पनी जिन्दावाद, कर्मचारी जिन्दावाद। अखन जाइ छी।"

ओना, मेवालाल बजला जे 'अखन जाइ छी', मुदा मनक जे भितुरका आशा रहैन जे जँ कहीं राधाकेँ चोरा-नुका कऽ रखियो नेने हेता तँ ओहो कोनो-ने-कोनो खिड़कियोक दोग देने देखिते हेती, तँए बजबो करैत आ कनडेरिये आँखिये कोठरी सबहक खिड़कियो दिस देखैत।

भितुरका आशाक कारण मेवालालक मनमे ई छेलैन जे आखिर किछु हुअ, मुदा जहिना ओ पत्नी भेली तहिना ने हम पतियो भेलौं। अही पति-पत्नीक बीच तँ भगवानो भक्तक संग ओझराइये जाइ छैथ। नइ तँ भक्त आ भगवानमे केतेक अन्तरे अछि..?

जहिना मेवालाल मनमे आशा बन्हने छला तहिना सुनीलपालक मनमे शंका सेहो कनी-मनी उपैकते रहैन जे हो-न-हो हम दुनू दोस ऐठाम गप-सप्प करै छी आ तैबीच राधा ने कहीं भीतुरका कोठरीक केबाड़ खोलि सोझामे आबि पतिक संग जाइले तैयार भऽ जाइथ, तखन तँ शिकारे उड़ि जाएत!

भीतुरका कोठरीमे राधा पलंगपर चारूनाल चीत भऽ पड़ल मने-मन

विचाइर रहल छेली जे जिनगी तँ सुखे-भोगक ने छी। से की अपना परिवारसँ ऐठाम कम अछि। तहूमे जँ दोसकेँ दोस्तिनी जीबैत रहितैन तखन दोस्तिनी बीच कनी-मनी खटपटो-लटपट होइत सेहो नहियेँ अछि। बेटो दुनू अपन परिवार अमेरिकेमे बसा लेलक। जे अमेरिकाक माटि-पानिमे बसि गेल ओ थोड़े गाम औत। आब की ओ जुग आ जमाना रहल जे देश सेवा-ले लोक अपन परिवारकेँ आगिमे झोंकि अपने फाँसीपर बिसवासक संग हँसैत चढ़त। आब तँ ओ जमाना आबि गेल जे अमेरिका सन धरतीएकेँ लोक स्वर्ग बुझैए...।

अमेरिकाक विचारसँ राधा सोझे उतैर अपना धरतीपर पहुँचली, पहुँचते मनमे उठलैन जे पतियो तँ रोगीए-टट्टी भेल जा रहल छैथ, तहूमे ऐठाम तँ दुइये गोरे छी। जँ किछु भइये जेतैन तँ हमरा बुते सम्हारल हएत।

ओना, गप-सप्पक क्रममे सुनीलपाल राधाकेँ चिक्कारीमे कहि देने छेलखिन जे 'दोस्तिनी, पति आ दोसमे कोनो अन्तर नइ होइए।' मुदा ई तँ भेल वैचारिक, बेवहारिक रूपमे सेहो सुनीलपाल राधाक संग शारीरिक सम्बन्ध बना नेने छला, जइसँ राधाक मनसँ सावित्री-सत्यवानक कथा हेरा गेल छेलैन। जखन अमेरिका सन धरती जे दुनियाँक स्वर्ग बुझल जाइए, तेकर बेवहारो आ इतिहासो बिनु बुझने तँ विचारल नहियेँ जा सकैए। मनुक्खक चित्त केहेन आ वृत्ति केहेन, एकरा बिनु बुझनौं-सुझनौं तँ नहियेँ किछु कहल जा सकैए। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहऽ..।

राधा जखन अपन भविस दिस देखैत तँ स्पष्ट नहियोँ तँ झलफलाएलो नीक सुनीलेपाल संग रहबकेँ बुझलैन।

सात दिन बीत गेल। राधाक भाँज मेवालालकेँ अखन धरि नहि लगलैन। तहूमे जखन सुनीलपाल ऐठाम जा टोहो लगौलैन आ सुनीलोपाल कहलकैन जे 'ऐठाम राधा नइ एली हेन।' तखनेसँ मनमे उद्विनता जगए लगलैन। उद्विनता जगैक कारण भेलैन जे खाली सुनीलेपालटा एहेन छैथ जिनका ऐठाम राधा जाइतो छेली आ रहितो छेली। ओना, दोकान-दौरीक काज सेहो करए लगल छेली, किछु-किछु बोलियो-वाणी बुझए लगल छेली। कम्पनियोँक कर्मचारी आ लग-पासक हाटो-बजारक लोक राधाकेँ चिन्हए लगल छेलैन...।

मेवालालक मनक उद्विनता धीरे-धीरे बढ़ए लगलैन। मनमे बेर-बेर ईहो उठैत रहैन जे एते दिनक जिनगीमे सुनीलपाल कहियो झूठ नइ बजला, ओ केना झूठ बजता। मुदा लगले मनमे उठि जाइन जे सुनीलपालक परिवार छोड़ि राधा दोसरठाम केतौ ने राति-बिराति रहै छेली। जँ कहीं सड़केपर गाड़ीए-सवारीसँ धक्का-धुक्की खा मरि गेल रहितैथ तैयो हल्ला तँ हेबे करैत आ चीन-पहचीन भेला पछाइत लहासो तँ भेटबे करैत..!

मनक उद्विनताक चलैत मेवालालकेँ ड्यूटीसँ सेहो मन उचटए लगलैन। जइसँ बेर-बेर चेतौनी सेहो पड़ि गेल छेलैन।

मतिछिन्नु जकाँ जेकरा-तेकरासँ मेवालाल पुछए लगला जे 'राधा नजैरपर नइ पड़ली अछि।' ओना, मेवालालक मनमे बेर-बेर सुनीलपाल ऐठामक आबा-जाही सेहो ठहैक उठैन मुदा लगले ईहो उठि जानि जे अप्पन गाम-घर आ अप्पन माटि-पानि तँ छी नहि, आन राज्य छी। आ राज्येटा नहि, आन समाजक माटि-पानिपर सेहो छी। जँ दुनू गोरेक बीच झगड़ो-झंझट हएत तँ ऐठामक समाज ओकरे ने मदैत करतै, हमरा थोड़े करत?

चोट-पर-चोट खसैत चोटाएल मेवालालक मन अपन दुनियाँ देखए लगलैन। माए मरि गेली..! बेटी सासुर चलि गेल..! पत्नी हेरा गेली..! असगरे केना जीब? नोकरियो आब दुइये साल बँचल अछि, ओहो छुटि जाएत। जखने नोकरी छुटत तखने आमदनी सेहो बन्न भइये जाएत आ डेरोसँ निकालिये देत। केतए रहब आ केकरा संग रहब।

सोचैत-विचारैत मेवालालक मन कानए लगैन...। मुदा केकरा कहता आ के आँखिक नोर पोछतैन। ऐ दुनियाँमे की मेवेलालटा एहेन अछि आकि आरो लोक..?

अही आशा-बाट देखैमे मेवालालकेँ छह मास बीत गेलैन। संजोग बनल। एक दिन सुनीलपाल राधाक संग बजार जाइ छला, मेवालाल सेहो दहिनासँ बामा होइत ओही रस्ते डेरा अबै छला। रिक्साकेँ लग अबिते सबहक आँखि सभपर पड़ल माने तीनू एक-दोसरकेँ अपना आँखिये

देखलक। राधाकेँ सुनीलपालक संग देखि मेवालालकेँ बुकौर लगि गेलैन। जइसँ बोलती बन्न भऽ गेलैन, किछु बाजि नहि सकला। बुकौरक कारण भेलैन जे एक दिस सुनीलपाल सन कपटी दोसकेँ आँखिसँ देखलैन तँ दोसर दिस राधा सन कपटी पत्नी सेहो आँखिक सोझमे पड़लैन। ओना, मेवालालकेँ देखिते राधा मुँह मोड़ि सुनीलपाल दिस घुमि गेली, मुदा जहिना सुनीलपालक बघबा नजैर मेवालालपर चढ़लैन कि तहिना मेवालालक नजैर बिलरबा रूप पकैड़ निच्चाँ उतैर गेल। कियो किछु ने बजला। अपन-अपन रस्ता धेने सभ आगू मुहेँ बढ़ि गेला।

डेरा आबि मेवालाल विचार केलैन जे जखन अपना आँखिये दुनूकेँ संगे देखलौं तखन न्यायालय जरूर जाएब। भऽ सकैए जे हमरा देखौआ गवाही नइ भेटए, मुदा तीनू गोरेक बीचक मुद्दा नइ छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जे राम से राम, न्यायालय जेबे करब।

ओना, जहिना मेवालालक मन न्यायालय जाइले एक दिस साहस बटोरि रहल छल तहिना दोसर दिस डेरामे सजल राधाक जिनगी, हेंगरपर टाँगल रंग-रंगक साड़ी-ब्लौज आ सायाक संग रंग-रंगक चीज-वौससँ सजल चौका देख-देखि मन तरैस-तरैस बिलैप रहल छेलैन। जहिना हँ-नहि, नीक-बेजाए आ हारि-जीतक बीच जे परिस्थिति संकल्प-विकल्पक बीच ठाढ़ होइत अपनाकेँ निहारैत अछि आ तखन जे बीचक नुकाएल कोनो रूप सामनेमे आबि पीठपर सवार भऽ मनकेँ ठेलैत अछि, तहिना मेवालालकेँ हुअ लगलैन। विचारक दुनियाँमे तेना मेवालाल बोहिया गेला जे ने भानस करैक मन जगलैन आ ने खाइ-पीबैक आ ने सुतैक। अन्हारमे वौआएल जहिना कोनो यात्रीकेँ धरतीसँ असमानक संग पूब-पच्छिम-उत्तर-दच्छिनक दिशो तेते अन्हरा जाइए जे हाथ-हाथ नइ सुझैए, मुदा तइ बीचमे पड़ल यात्रीकेँ यात्राक रूपक जे दर्शन होइए, तेहने दर्शन मेवालालोकेँ भेलैन। मनमे संकल्प उठलैन जे जखन परिवारे नहि, तखन जिनगी की..? सभसँ पहिने कारखानामे जा औझुका छुट्टीक दरखास्त दैत वकील ऐठाम जाएब, ओइठाम गेला पछाइत जेना-जे हएत से जरूर करब। जँ कहीं समाजक जालमे ओझरा वकीलो जँ काज करैले तैयार नइ हेता तँ दोसर-तेसर-चारिम लग जाएब। सभ वकील जातिये-समाजक

जालमे तँ नहि ओझराएल हेता, एहनो तँ हेबे करता जे वकीलक गरिमाकेँ बुझैत हेता। जे एहेन बुझनिहार हेता ओ हमरा संग जरूर देबे करता।

भोरे मेवालाल अपन छुट्टीक दरखास्त दैत महल्लेक एक वकील ऐठाम पहुँचला। दुनू परानी वकील साहैब सुबहक[21] चाह पीबैत रहैथ कि मेवालाल पहुँचला। बाहरेक ओसारपर दुनू परानी वकील साहैब चाह पीबैत रहैथ। मेवालालकेँ गेट टपिते देखि वकील साहैब फुसफुसा कऽ पत्नी दिस मुँह घुमा बजला- “शुभ दिन अछि!”

ओसार लग पहुँचते मेवालाल बजला- “प्रणाम वकील साहैब, अहींसँ मदैतिक आशामे एलौं हेन।”

बिनु बुझल-सुझल वकील साहैब अगुरवारे असीरवाद दैत बजला-

“जँ ऐ देहक खूनक मदैतिक जरूरत पड़त ते सेहो देब।”

कुर्सीपर बैइसैत मेवालाल बजला- “ऐठामक कोट-कचहरीक अनुभव हमरा नइ अछि। हम परदेशी छी, बैट्री-कम्पनीक भट्टीमे नोकरी करै छी।”

बिच्चेमे वकील साहैबक पत्नी– सुदामा, बजली- “यएह ने भेल मनुष्यता। जे अपन मेहनैतपर जिनगी ठाढ़ कऽ चलैत अपना पएरे बढ़ि रहल छैथ, हुनके आशा ने सभसँ पैघ। जखन ऐठाम एलौं तखन मनोरथ पूर हेबे करत।”

कहि सुदामा चोट्टे ओइठामसँ उठि चाह बना मेवालालक हाथमे देलकैन।

हाथमे चाह अबिते मेवालालक मन जे दुनू परानी वकील साहैबकेँ एकठाम बैस चाह पीबैत देखलैन से अपनो मन अपन पत्नीपर तरैस तड़ैप कऽ पहुँच गेलैन। मुदा उपाय, उपाय तँ केले पछाइत हएत...।

अपन सभ बात मेवालाल वकील साहैबकेँ कहि देलखिन। अन्तमे वकील साहैब पुछलखिन- “कोनो गुप्त पहचान दऽ सकै छी?”

मेवालाल- “हँ, दहिना जाँघक काछ लग नमहर लाल लहसन

---

[21] शुभक

छैन।”

वकील साहैब- “अहाँकेँ पत्नी जरूर वापस औती।”

वकील साहैबक विचार सुनि मेवालालक मनमे पत्नीक ओ रूप, जइमे सुनीलपालक संग शारीरिक सम्बन्ध भेल छेलैन से मनसँ उड़ए लगलैन। उड़ैक कारण भेलैन जे जइले न्यायालय जाएब आ न्यायालय देत, तैबीच जँ एहेन विचार रहत तँ लाभ की हएत? दू राजाक बीचक लड़ाइ मेवालालक मनमे जगि गेलैन। जगि ई गेलैन जे केतबो उमेरक रानी किए ने होथि मुदा युद्धमे प्राप्त रानी तँ रानीए भेली किने। वएह ने ओइ जीतल राजाक लेल बारह बर्खक किशोरी भेली।

पौने दू बर्खक न्यायालयक पछाड़क पछाइत मेवालालक हाथमे राधा एली मुदा ओ राधा नइ एली जे पहिने छेली। तीन मासक पछाइत मेवालालक नोकरीक अन्त सेहो भेलैन।

सेवा-निवृत्ति भऽ कऽ, तीन मासक पछाइत मेवालाल अपन पत्नीक संग गाम एला। बढ़ियाँ आमदनी कम्पनीसँ भेल छेलैन। माने बीस बर्खक अदहा दरमाहा एकठाम भेटलैन। तेकर पछातियो जँ जीबित रहता तँ पुन: फेर भेटतैन।

गाम अबैसँ पहिनहि कलकत्तेमे मेवालाल योजना बनौलैन जे कलकत्ता सन न्यायालयसँ जखन जीत कऽ गाम जा रहल छी, तखन समाजकेँ किए ने भोज खुआ अपन जीत दर्ज कराएब। आब खेत-पथारक भीर नइ जाएब। जे रुपैआ अछि, तइमे सँ घरो बना लेब आ खाइते-पीबिते रामलला करैत रहब।

तेसर दिन मेवालाल पत्नीक संग गाम पहुँच समाजकेँ अपन जिनगीक पुरुखपनक परिचय दैत घरबासक संग भोजक चर्च सेहो केलैन।

❑

शब्द संख्या: 2015, तिथि: 25 फरवरी 2018

❑❑❑

❑❑

❑

Notes